Bill No. 3/07-08

112.

2008-0271

१. मैबल्य भास्कर – Part I –

by पं. रामचरणाचार्य मिश्र – It is a unique treatise in ~~verses~~ Hindi verses with Sanskrit quotations and their Hindi meaning.

~~Kanpur~~ Hamirpur, 1984 Vikram era.

1 copies

1286

18

Indira Gandhi National Centre for the Arts

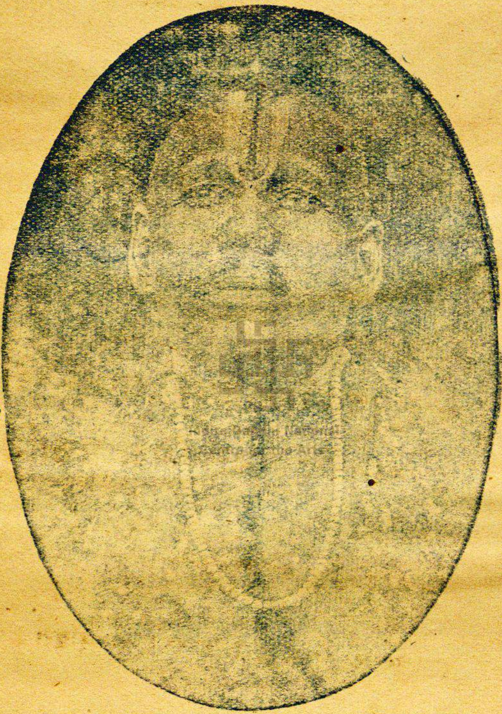
भैषज्य - भास्कर

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

1286



श्री रामचरणाचार्य मिश्र



# भैषज्य-भास्कर

## प्रथम खण्ड।

हमीरपुर प्रान्तान्तवर्त्ति भयस्मरी ग्राम वास्तव्य
श्रीरामचरणाचार्य्य मिश्र विरचित।

ग्रन्थकर्त्ता के सुपुत्र परीक्षोत्तीर्ण वैद्यमार्त्तण्डोपाधि-
भूषित पं० जगदीश्वरदत्त मिश्र प्रकाशित।

कानपुर ला प्रेस, में निज व्यय से मुद्रित।

| | | |
|---|---|---|
| प्रथमवार १००० | विक्रमसंवत् १९८४ | [redacted] [redacted] |

सर्वाधिकार प्रकाशक के स्वाधीन है।

DATA ENTERED
Date 25/06/08

SANS
615.536
MIS

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

KALANIDHI
Rare Book Collection
ACC No.: R. 271
IGNCA Date: 25.3.08

SANS
615.536
MIS

## ॥ सूचीपत्रम् ॥


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| मङ्गलाचरण | १-२ |
| ग्रन्थकार का परिचय | ३ |
| चिकित्सा के सात अंग | „ |
| उत्तम वैद्य के लक्षण | „ |
| अधम वैद्य के लक्षण | ४ |
| उत्तम रोगी के लक्षण | „ |
| अधम रोगी के लक्षण | „ |
| शुभ दूत लक्षण | ५ |
| अशुभ दूत लक्षण | „ |
| दूत परीक्षा | ५-६ |
| शुभ धन | ७ |
| अशुभ धन | „ |
| चिरायु विचार | ८ |
| अल्पायु विचार | „ |
| सत औषधि | „ |
| असत औषधि | „ |
| उत्तम परिचारक | „ |
| अधम परिचारक | ९ |
| शकुन विचार | „ |
| अशुभ शकुन | „ |
| स्वर विचार | १० |
| वारानुसार स्वर विचार | „ |
| यमघंट योग | ११ |
| मृत्यु योग | „ |
| क्रूर वार | „ |
| असाध्य नक्षत्र | „ |
| कष्ट साध्य नक्षत्र | „ |
| क्रूर योग | १२ |
| अमृत योग | „ |
| सूर्य्य कालानल चक्र | „ |
| चन्द्र कालानल चक्र | १३ |
| सलाका चक्र | १४ |
| तिथि वार नक्षत्र को वेध | १५ |
| तिथि वार नक्षत्र को-प्रमाण | „ |
| वार विरुद्ध वर्ग | „ |
| वर्ग जानने की विधि | १६ |
| नक्षत्र रोगावली (अश्विनी) | „ |
| भरणी | „ |
| कृत्तिका | १७ |
| रोहिणी | „ |
| मृगशिरा | १८ |
| आर्द्रा | „ |
| पुनर्वसु (क्रोड़पत्रमें) | „ |
| पुष्य | „ |
| श्लेषा | १९ |


Indira Gandhi National Centre for the Arts

## ॥ सूचीपत्रम् ॥


| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| मघा | ,, | तुला ,, | - |
| पूर्वा फाल्गुनी | २० | वृश्चिक,, | ३२ |
| उत्तरा फालगुनी | ,, | धन ,, | ,, |
| हस्त | २१ | मकर ,, | ३३ |
| चित्रा | ,, | कुंभ ,, | ,, |
| स्वाती | २२ | मीन | ३४ |
| विशाखा | ,, | ज्योतिष मत से काल | ,, |
| अनुराधा | ,, | ज्ञान | |
| ज्येष्ठा | २३ | मेष राशि | ३४-३५ |
| मूल | ,, | वृष राशि | ३६ |
| पूर्वाषाढ़ | २४ | मिथुन राशि | ३७ |
| उत्तराषाढ़ | ,, | कर्क राशि | ३८ |
| श्रवण | २५ | सिंह ,, | ३९ |
| धनिष्ठा | ,, | कन्या ,, | ४० |
| शतभिषा | २६ | तुला ,, | ४१ |
| पूर्व भाद्रपद | ,, | वृश्चिक,, | ४२ |
| उत्तराभाद्र पद | २७ | धन राशि | ४३ |
| रेवती | ,, | मकर ,, | ४४ |
| लग्न बिवरण (मेष) | २८ | कुंभ ,, | ४५ |
| वृष लग्न | ,, | मीन ,, | ४६ |
| मिथुन,, | २९ | आयुर्वेदीय कालज्ञान | ४८-५१ |
| कर्क ,, | ,, | छाया पुरुष का ज्ञान | ५१-५३ |
| सिंह ,, | ३० | स्वरोदय मत से | ५३-५४ |
| कन्या ,, | ३१ | कालज्ञान | |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| भानु शशि बिम्ब परीक्षा | ५४ |
| आतुर छाया परीक्षा | ५५ |
| अपर छाया परीक्षा | ,, |
| घात चन्द्र विचार | ५५ |
| घात चन्द्र को दान | ५६ |
| बारहों राशि को चंद्र- | ,, |
| तिथि वार नक्षत्र घात | |
| स्वप्न परीक्षा | ५७ |
| शुभ स्वप्न परीक्षा | ,, |
| अशुभ स्वप्न परीक्षा | ५८ |
| अशुभ स्वप्न दोष को- | |
| उपाय | ,, |
| स्वप्न का काल निर्णय | ५६ |
| *इति प्रथमाविष्कार* | |
| नाड़ी परीक्षा | ५९ |
| नाड़ी का पहिला मत | ६० |
| दूसरा मत | ,, |
| तीसरा मत | ,, |
| तीनों मत के प्रमाण | ६०-६१ |
| सिद्धान्त | ६२ |
| नाड़ी की गति का ज्ञान | ६२-६३ |
| नाड़ी से साध्यासाध्य- | ६४-६५ |
| विचार | |
| सूत्र द्वारा नाड़ी ज्ञान | ६५ |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| अन्य चमत्कार | ६६ |
| (तंत्री थरमामेटर) | |
| मुख परीक्षा | ६७ |
| नेत्र परीक्षा | ,, |
| वायु नेत्र | ६८ |
| पित्त नेत्र | ,, |
| कफ नेत्र | ,, |
| वात पित्त नेत्र | ,, |
| कफ वात नेत्र | ,, |
| कफ पित्त नेत्र | ६६ |
| त्रिदोष नेत्र | ६९ |
| जीभ परीक्षा | ७० |
| नख परीक्षा | ,, |
| वायु नख लक्षण | ,, |
| वात पित्त ,, | ,, |
| पित्त कफ नख लक्षण | ७१ |
| वात कफ नख ,, | ,, |
| त्रिदोष नख ,, | ,, |
| वस्त्र परीक्षा | ,, |
| मूत्र परीक्षा | ७२ |
| मूत्र के रंगसे दोष- | ,, |
| लक्षण | |
| मल परीक्षा | ७३ |
| अपक्व मल परीक्षा | ,, |
| पक्व मल परीक्षा | ७४ |


Indira Gandhi National Centre for the Arts

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| साध्य लक्षण | ,, | ज्वरोत्पत्ति वर्णन | ८४ |
| असाध्य लक्षण | ७५-७६ | ज्वर की उपाधि | ८५ |
| वैद्य प्रति शिक्षा | ७७ | असाध्य उपाधि | ,, |
| त्रिविध देश वर्णन | ,, | साध्य उपद्रव | ,, |
| जंगल देश लक्षण | ७८ | तरुण ज्वर कथन | ,, |
| अनूप देश ,, | ,, | तरुण ज्वर को अहित | ,, |
| साधारण देश ,, | ७९ | ज्वर में हित उपाय | ८६ |
| अष्ट दिशा रोग वर्णन | ,, | अवधि वरणन | ८६ |
| ऋतु परिज्ञान | ,, | दोष प्रमान | ८७ |
| ऋतु रोग वरणन | ८० | ज्वर के शुभ लक्षण | ,, |
| रात दिन में षट ऋतु-प्रवेश | ,, | शमन अशमन विचार | ,, |
| | | विरुद्धता | ८८ |
| वातादि दोषों का चय-कोप शमन | ८० | वात ज्वर के लक्षण | ८८ |
| | | पित्त ज्वर के लक्षण | ,, |
| वात कोप को हेतु | ८१ | कफ ज्वर के ,, | ८९ |
| पित्त कोप को हेतु | ,, | वात पित्त ज्वर के ,, | ,, |
| कफ कोप को हेतु | ,, | वात कफ ज्वर के ,, | ,, |
| कुपित वात का रूप | ८२ | पित्त कफ ज्वर ,, | ९० |
| कुपित पित्त का रूप | ,, | सन्निपात के ,, | ,, |
| कुपित कफ का रूप | ,, | आगन्तुक भेद | ९१ |
| वात प्रशमन | ८३ | लंघन आदि विचार | ,, |
| पित्त प्रशमन | ,, | प्यास में जल देयत्व | ,, |
| कफ प्रशमन | ८४ | शीतल जल के योग्यरोग | ९२ |
| इति द्वितीय विष्कारः | | उष्ण जल योग्य रोगी | ,, |


Indira Gandhi National Centre for the Arts

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| उष्ण जल की विधि | ९३ | अन्य | ९६ |
| ऋतु के अनुसार जल-विधि | " | अन्य | " |
| | | बात ज्वर में गोली | " |
| शात लोदक गुण | " | बात ज्वर में मालिश | " |
| उष्णोदक गुण | " | पित्त ज्वर में उपचार | " |
| शर्करोदक (सरबत गुण | ९४ | खपरिया शोधन (टि०) | " |
| औषधि क्रिया | ९४ | पित्त ज्वरे काढ़ा, चूर्ण | १०० |
| स्वरस विधि | " | कफ ज्वर पर उपचार | १००-१०२ |
| स्वरस के अनुपान | ९५ | बात पित्त ज्वरे काढ़ा | १०३ |
| पुटपाक विधि | " | कफ बात ज्वरे काढ़ा | " |
| हिम की विधि | " | कफ पित्त ज्वरे " | " |
| हिम का अनुपान | ९६ | सर्व ज्वरे " | १०४ |
| क्वाथ विधि | " | तेरह सन्निपातोंके नाम | " |
| क्वाथ का अनुपान | " | संधिक सन्निपात के ल० | १०५ |
| फाण्ट विधि | " | तिसका उपचार | " |
| मंथान विधि | ९७ | अन्तक का लक्षण | १०८ |
| मंड विधि | " | रुग्दाह का " | १०९ |
| यूष विधि | " | उपचार | " |
| विलेपिका (अवलेह) | " | चित्तभ्रम का लक्षण | १११ |
| कल्क विधि | ९८ | उपचार | ११२ |
| चूर्ण और वटी विधि | " | शीताङ्ग का लक्षण | ११३ |
| पाचन काढ़ा सर्व ज्वरे | " | तांद्रिक का लक्षण | " |
| बात ज्वर पर काढ़ा | " | उपचार | ११४ |
| अन्य | " | कंठकुब्ज का लक्षण | ११५ |


Indira Gandhi National Centre for the Arts

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| उपचार | ११५ | संखिया की विधि | १३४ |
| कर्णिक का लक्षण | ११७ | दूसरी विधि | १३५ |
| उपचार | " | तीसरी , | १३६ |
| भुग्नदृक् का लक्षण | १२० | चौथी ,, | " |
| उपचार | " | पांचवीं विधि | " |
| रक्तष्ठीवी के लक्षण | १२२ | छठवीं " | १३७ |
| उपचार | " | सातवीं " | १३८ |
| प्रलापक का लक्षण | १२४ | आठवीं " | " |
| उपचार | " | नवीं ,, | १३९ |
| जिह्वक का लक्षण | १२५ | दशवीं ,, | " |
| उपचार | १२६ | कांतीसार विधि | १४० |
| करू तेल का शोधन | १२७ | मानिक रस | " |
| ( टि० ) | | हरताल की विधि | " |
| अभिन्यास का लक्षण | १२८ | दूसरी " | १४१ |
| उपचार | " | तीसरी | " |
| तेरह सन्निपातों की-मर्यादा | १३१ | हरताल की सफेद भस्म | " |
| | | अभ्रक विधि | १४२ |
| तेरह सन्निपातों के-स्थान | १३२ | चन्द्रोदय (मकरध्वज) | १४३ |
| | | महाताम्रेश्वर विधि | " |
| सन्निपातों में पसीने-की दवा | " | तामा शोधन (टि०) | १४३ |
| | | आनन्द भैरव वटी | १४४ |
| सब सन्निपातों पर-उपाय | १३३ | ज्वरांकुश वटी | " |
| | | अन्य | " |
| सन्निपातों की विशेषता | १३४ | इंगुर शोधन ( टि० | " |

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| सिंघिया शोधन (टि०) | १४४ | हरताल शोधन (टि०) | " |
| हरताल शोधन (टि०) | " | रांगा शोधन (टि०) | " |
| रामबाण वटिका | १४५ | आचार वटी | " |
| ज्वर पञ्चानन वटी | " | अनुपान विधि बहु रोगों में | १५०-१५१ |
| ज्वर घ्नी वटिका | " | सर्व ज्वरे गोली | १५२ |
| भिलवा शोधन (टि) | " | क्वचिलादि वटी | " |
| मनसिल शोधन (टि०) | " | सुदर्शन चूर्ण | " |
| शीतांकुश रस | १४६ | निम्बादि चूर्ण | १५३ |
| ज्वरपूतना वटी | " | दाहज्वरे चूर्ण | " |
| लीला थोथा शोधन (टि०) | " | आमलक्यादि | १५४ |
| गंधक शोधन (टि०) | " | तिक्तादि चूर्ण | " |
| रसकपरिया शोधन (टि०) | " | तालीसादि चूर्ण | " |
| | | दूसरा | " |
| धतूर बीज शोधन (टि०) | " | तीसरा | १५५ |
| | | आबहयात चूर्ण | " |
| ज्वर भुजंगी वटी | १४७ | अन्तर्ज्वरे चूर्ण | १५५ |
| विषम ज्वरघ्नी वटी | " | लवंगादि " | १५६ |
| ज्वरदर्पघ्नी वटी | " | ज्वर क़दीम पर चूर्ण | " |
| संखिया शोधन (टि०) | १४७ | ज्वरांकुश रस | १५७ |
| ज्वरसुन्दरी वटिका | १४८ | ज्वर केसरी वटी | " |
| ज्वर हरी " | " | ज्वरहर रस | " |
| ज्वरांगार " | १४९ | ज्वर भैरव चूर्ण | १५८ |
| चन्द्रोदय रस | " | विषमज्वरहरी वटी | " |
| पाराशोधन (टि०) | " | | |


Indira Gandhi National Centre for the Arts

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| ज्वरघ्नपेय | " | ज्वरहर अञ्जन | १६५ |
| संजीवनी बटी | " | ज्वरनाशक (अजूबा) | " |
| ज्वरांत गुटी | १५९ | जीर्ण ज्वरे गोली | १६६ |
| किरातादि वटी | " | वैद्यों की युक्ति | " |
| ज्वरघ्न पेय | " | जमालगोटा शोधन (टि०) | " |
| शीत ज्वर कुठार | " | | |
| ज्वरघ्न पेय | १६० | आल्हादनी वटी | १६७ |
| श्रीखण्डावलेह | " | कालभैरव रस | " |
| मोती शोधन (टि०) | १६१ | सितोपलादि चूर्ण | " |
| मूगाशोधन व मारन (टि०) | " | बसन्तमालती | १६७ |
| | | अद्भुत बसन्तमालतो | १६८ |
| पित्तघ्न कषाय | १६२ | विचित्र तैल | " |
| ज्वरामृत कषाय | " | षट्चरण तैल | १६९ |
| भूतरंगा | " | लाक्षादि ,, | " |
| ज्वर भंजी रस | १६३ | पार्श्वशूल पर | १७० |
| ज्वर मर्दी रस | " | ज्वर से क्षीण होने में दूध | " |
| विषम ज्वरघ्नी वटी | १६४ | | |
| शीत ज्वर पर | " | काली वटी | " |
| ज्वर व्याघ्री वटी | " | अमृत वटी | १७१ |
| जीर्ण ज्वरे | " | | |


* इति सूचीपत्रम् *

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | १२ | संसेवित | संसेवितं |
| ” | १४ | भूतं | भूत |
| ” | २१ | सेवीर्ष्यः | सेवी |
| २ | ६ | भास्कर | भास्करं |
| ” | १० | ष्पयम् | प्ययम् |
| ” | १३ | बांणी॰ | वाणी |
| ” | १५ | भूयान् | भूयात् |
| ३ | ४ | ग्रथ | ग्रंथ |
| ४ | १ | भषज्य | भैषज्य |
| ” | १७ | अव राधु | अवराधु |
| ” | १८ | आघीन | आधीन |
| ५ | ६ | आवर्हि | आवहि |
| ” | ७ | [illegible] | अस्त्र |
| ” | २१ | दी जिय | दीजिये |
| ६ | २ | जहै | जैहै |
| ” | १० | सदा | सप्त |
| ” | ११ | दुई | दुइ |
| ” | २६ | क्रम | कम |
| ८ | १० | अवषधि | औषधि |
| ” | १६ | बिल | विकल |
| १२ | ४ | व्यतीपत | व्यतीपात |
| १६ | ११ | शरार | शरीर |
| १८ | १९ | अत्तर | अंतर |
| २२ | ५ | मत्र | मंत्र |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २२ | १७ | तडुल | तंडल |
| २५ | २३ | घत | घृत |
| २६ | १५ | गा | गो |
| २७ | ७ | सौइ | सोइ |
| ३० | १७ | हूजार | हजार |
| ३२ | १२ | बल | बैल |
| " | १५ | दोघ्र | दीर्घ |
| ३४ | १८ | शष | शेष |
| ३६ | १० | सब | सबै |
| ३७ | ५ | सत | सित |
| " | ७ | राषि | राशि |
| " | १४ | हौ | हौं |
| ४० | २० | ो | नो |
| ४२ | ३ | दा | दो |
| ४६ | ३ | पचम | पंचम |
| ४८ | १९ | सवाद् | संवाद् |
| ५० | १९ | भगवा | भगवान |
| " | २१ | छिद्रत | छिद्रित |
| " | २४ | साने | सोने |
| " | २५ | ले | लेन |
| " | २६ | वष्णुपद | विष्णुपद |
| " | २८ | आद | आदि |
| " | २९ | कल्पन | कल्पना |
| ५३ | १० | भग | भंग |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

# ॥ शुद्धाशुद्धपत्रम् ॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५३ | १३ | हन | हीन |
| ” | १३ | वष | वर्ष |
| ५४ | १८ | नास | मास |
| ” | २५ | पूजन | पूरन |
| ५५ | ९ | होइ | |
| ५९ | २२ | वाराणस्वां | वाराणस्यां |
| ६१ | १४ | तृण | तृणं |
| ” | १८ | जसे | जैसे |
| ६२ | ९ | श्लाक | श्लोक |
| ” | ११ | नाडगति | नाडीगतिः |
| ६३ | २ | हस | हंस |
| ” | ५ | पित्त | पित्त |
| ” | ” | पडित | पंडित |
| ” | ९ | जानिज | जानिजै |
| ” | १२ | फर | फिर |
| ” | १३ | रोगी प्राण | रागी के प्राण |
| ” | १५ | फरि | फिरि |
| ६४ | २३ | भौलै | चलैं |
| ६५ | १८ | पाणि | पाणि |
| ६७ | २१ | दग | द्दग |
| ६८ | १६ | नाल | नीळ |
| ६९ | ५ | दाष | दोष |
| ७४ | १७ | सन | सुन |
| ७५ | १६ | रागीं | रोगीं |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ८४ | १२ | वणनम् | वर्णनम् |
| ८५ | ८ | बहुार | बहुरि |
| ८६ | २ | व्ययाम | व्यायाम |
| " | ८ | लघन | लंघन |
| " | १७ | वणन | वर्णन |
| ९५ | १२ | धरिज्ञ | धरिजै |
| १०१ | ११ | चूण | चूर्ण |
| १०६ | ५ | सँधिक | संधिक |
| " | १३ | जीरकँ | जीरकं |
| " | १४ | तँ | तं |
| १०७ | २१ | मूत्रँ | मूत्रं |
| १०८ | १४ | भङ्ग | भङ्गं |
| ११० | १० | दह | दाह |
| " | १२ | फेनँ | फेनं |
| " | " | हिमँ | हिमं |
| " | १८ | शमनँ | शमनं |
| १११ | १५ | मेहि | मोहि |
| " | १६ | ध्यँ | ध्यं |
| ११२ | ५ | चि | शिव |
| " | " | मँ | मं |
| " | १३ | वि | शिव |
| " | " | मँ | मं |
| ११३ | ४ | शरीरा | शरीरो |
| " | " | श्थुवा | थुश्वा |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

# ॥ शुद्धाशुद्धपत्रम् ॥



| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | १२ | संसेवित | संसेवितं |
| „ | १४ | भूतं | भूत |
| „ | २१ | सेवीर्य्यः | सेवी |
| २ | ६ | भास्कर | भास्करं |
| „ | १० | रपयम् | प्ययम् |
| „ | १३ | बांखी | वाणी |
| „ | १५ | भूयान् | भूयात् |
| ३ | ४ | ग्रथ | ग्रंथ |
| ४ | १ | भषज्य | भैषज्य |
| „ | १७ | अब राधु | अवराधु |
| „ | १८ | आघोन | आधीन |
| ५ | ६ | आवहिं | आवहि |
| „ | ७ | अस्त्र | अस्त्र |
| „ | २१ | दीजिय | दीजिये |
| ६ | २ | जहै | जैहै |
| „ | १० | सदा | सप्त |
| „ | ११ | दुई | दुइ |
| „ | २६ | क्रम | कम |
| ८ | १० | अवषधि | औषधि |
| „ | १६ | बिल | विकल |
| १२ | ४ | व्यतीपत | व्यतीपात |
| १६ | ११ | शरीर | शरीर |
| १८ | १९ | अत्तर | अंतर |
| २२ | ५ | मत्र | मंत्र |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

# ॥ शुद्धाशुद्धपत्रम् ॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २२ | १७ | तडुल | तंडुल |
| २५ | २३ | घत | घृत |
| २६ | १५ | गा | गो |
| २७ | ७ | सौइ | सोइ |
| ३० | १७ | हुजार | हजार |
| ३२ | १२ | बल | बैल |
| " | १५ | दोघ्र | दीर्घ |
| ३४ | १८ | शष | शेष |
| ३६ | १० | सब | सबै |
| ३७ | ५ | सत | सित |
| " | ७ | राषि | राशि |
| " | १४ | हौ | हौं |
| ४१ | २० | ी | नी |
| ४२ | ३ | दा | दो |
| ४६ | ३ | पचम | पंचम |
| ४९ | १९ | सवाद | संवाद |
| ५० | १९ | भगवा | भगवान |
| " | २१ | छिद्रत | छिद्रित |
| " | २४ | साने | सोने |
| " | २५ | ले | लेन |
| " | २६ | वष्णुपद | विष्णुपद |
| " | २८ | आद | आदि |
| " | २९ | कल्पदन | कल्पना |
| ५३ | १० | भग | भंग |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५३ | १३ | हन | हीन |
| " | १३ | वष | वर्ष |
| ५४ | १८ | नास | मास |
| " | २५ | पूजन | पूरन |
| ५५ | ९ | होइ | |
| ५८ | २२ | वाराणस्वां | वाराणस्यां |
| ६१ | १४ | तृण | तृणं |
| " | १८ | जसे | जैसे |
| ६२ | ९ | श्लाक | श्लोक |
| " | ११ | नाडगति | नाडीगतिः |
| ६३ | २ | हस | हंस |
| " | ५ | पित्त | पित्त |
| " | " | पडित | पंडित |
| " | ९ | जानिज | जानिजै |
| " | १२ | फर | फिर |
| " | १३ | रोगी प्राण | रोगी के प्राण |
| " | १५ | फरि | फिरि |
| ६४ | २३ | भौलै | चलै |
| ६५ | १८ | पाणि | पाणि |
| ६७ | २१ | दग | दृग |
| ६८ | १६ | नाल | नील |
| ६९ | ५ | दाष | दोष |
| ७४ | १७ | सन | सुन |
| ७५ | १६ | रार्गी | रोगीं |

# ॥ शुद्धाशुद्धपत्रम् ॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ८४ | १२ | वणनम् | वर्णनम् |
| ८५ | ८ | बहुार | बहुरि |
| ८६ | २ | व्ययाम | व्यायाम |
| „ | ८ | लघन | लंघन |
| „ | १७ | वणन | वर्णन |
| ९५ | १२ | धरिज | धरिजै |
| १०१ | ११ | चूण | चूर्ण |
| १०६ | ५ | सँधिक | संधिक |
| „ | १३ | जीरकँ | जीरकं |
| „ | १४ | तँ | तं |
| १०७ | २१ | मूत्रँ | मूत्रं |
| १०८ | १४ | भङ्ग | भङ्गं |
| ११० | १० | दह | दाह |
| „ | १२ | फेनँ | फेनं |
| „ | „ | हिमँ | हिमं |
| „ | १८ | शमनँ | शमनं |
| १११ | १५ | मेहि | मोहि |
| „ | १६ | ध्यँ | ध्यं |
| ११२ | ५ | चि | शिव |
| „ | „ | मँ | मं |
| „ | १३ | चि | शिव |
| „ | „ | मँ | मं |
| ११३ | ४ | शरीरा | शरीरो |
| „ | „ | श्थुवा | थुश्वा |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

# ॥ शुद्धाशुद्धपत्रम् ॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ११४ | ११ | द्वयँ | द्वय |
| „ | १४ | साठ | सौंठ |
| ११५ | ८ | णात्ति : | णार्त्ति |
| ११६ | ३ | ा | |
| ११७ | ११ | ग्रथि | ग्रंथि |
| ११८ | १८ | इगुदि | इंगुदि |
| ११९ | ५ | लेपन | लेपनं |
| „ | ११ | नयात | नयति |
| „ | १८ | मूल | मूलं |
| १२० | ९ | त्यजित | त्यजति |
| „ | १७ | दाव्यं | दार्व्यं |
| १२७ | ४ | फट | फेंट |
| १३१ | ५ | तैल | तैलं |
| „ | „ | द्रव | द्रवं |
| „ | ६ | समितम् | संमितम् |
| १३२ | ७ | स्तथा | स्तथा |
| „ | ८ | जह्वको | जिह्वको |
| १३६ | १२ | सखिया | संखिया |
| १४० | ११ | जा | जाय |
| १४२ | १६ | गढ़ा | गाढ़ा |
| १४३ | ४ | घाटै | घोंटै |
| १५६ | १७ | क | को |
| „ | २० | फिकटरी | फिटकरी |
| १६५ | १० | सा | सो |
| १७० | ७ | हाय | हाँइ |

* इति शुद्धाशुद्धपत्रम् *

नोट—पाठक बृन्द ? कंपोजिटर कीभूल से यत्र कुत्र दोहों को संख्या ग़लत हो गई है जैसे ५४ के आगे ५१ हैं पर भ्रम न करियेगा कोई दोहा छूटा नहीं है ॥

# प्रास्ताविकम्

—:o:—

* दोहा *

राज्य स्वर्ग अपवर्ग की, एकौ चित नहिं चाह।
दुखियन के दुख नाश हित, उमगत रहत उमाह॥

* कवित्त *

एहो-ब्रह्मवादी ? ब्रह्म-विद्या में भुलाने व्यर्थ
द्वैताद्वैत-वाद रांचे ज़िन्दगी बिताते हो।
एहो न्याय-वादी ? न्याय-विद्या में लगाये चित्त
तर्क-वादौ माहिं मिथ्या माथ को पचाते हो॥
एहो वेदुओ ? न फोरौ कान वेद-मंत्रौं बोल
काहे को अदेखी बात बुद्धि में जमाते हो।
दिव्या अनवद्या वैद्य-विद्या को पढ़ीजै मित्र ?
देखो परतच्छ "मिश्र" गाल क्यों बजाते हो॥

---

प्रकट हो कि मुख्य सुख दो ही हैं एक तो लौकिक में शरीर कास्वास्थ्य सुख, दूसरा पारलौकिक में मोक्ष-सुख। मोक्ष-सुख का मुख्य साधन वेदान्त शास्त्र है और शरीर के स्वास्थ्य सुख का साधन वैद्यक शास्त्र है परंच यदि मूल कारण समझा जाय तो दोनो लोक के सुख का साधनवैद्यक शास्त्र ही है क्योंकि देह के स्वास्थ्य-सुख होने से ही दोनो लोक का कार्य्य कर सकता है अन्यथा नहीं देखो रंचमात्र शरीर को पोड़ित होने से दोनो लोक के

कार्य्य मिट्टी के समान भासते हैं इस से शरीर का स्वास्थ्य रखना परमावश्यक कार्य्य है और इस कार्य्य का सिद्ध करनेवाला एक वैद्यक शास्त्र ही है अतः इसी का आश्रय लेना मुख्य उद्देश्य सिद्ध भया।

यद्यपि वैद्यक शास्त्र के ग्रन्थ प्राचीन व अर्वाचीन अनेक प्रकार के प्रस्तुत हैं परंच प्राचीन ग्रन्थों के लिये विशेष संस्कृत विद्या की आवश्यकता है तिस पर भी विस्तार बाहुल्य के कारण जटिल में पड़ कर उपस्थित रोग पर शीघ्र प्रकृति अनुकूल दवा नहीं मिलती। और अर्वाचीन ग्रन्थों में भी ऐसी त्रुटियां पड़ती हैं कि जिस से अनेक ग्रन्थों को देखने की ज़रूरत पड़ती है। तथा च प्राचीन चिकित्सा और वर्त्तमान चिकित्सा में बड़ा अन्तर दीखता है आधुनिक नूतन ऐसे वैकृत रोग आ पड़ते हैं कि जिनको प्राचीन शैली के चिकित्सक देख कर चक्कर में पड़ जाते हैं अतएव मैं वृद्ध वैद्यों का सेवी कलियुगी वैद्य आधुनिक देश काल के अनुकूल ब्रह्मचर्य्य-हीन धातुक्षीण निर्बल मस्तिष्क जनता के उपयोगी प्रयोग ऋषि प्रोक्त तथा अर्वाचीन ग्रन्थ समुदायों से चुन चुन कर अनेक बार अनुभूत करि इस ग्रन्थ में लिखने का साहस किया है कुछ प्रयोग वृद्ध वैद्यों के अनुभव किये हुए तथा संत फकीरों के बताये हुए अनेक जड़ी बूटियों के भी संग्रह किये हैं यह ग्रन्थ खंडशः निकलेगा प्रथम खण्डमें चिकित्सा के सात अंग उन के क्रमशः भिन्न भिन्न लक्षण, साध्यासाध्य परीक्षा, नक्षत्र रोगावली, ज्योतिष का काल ज्ञान, वैद्यक का काल ज्ञान, स्वरोदय का काल ज्ञान छाया पुरुष परिज्ञान योगियों की क्रिया आदि आयु विनिर्णय की मर्म बातों का संग्रह है। नाड़ी का शास्त्रार्थ और सिद्धान्त, तांत्रिक थर्मामेटर मल मूत्रादि परीक्षा, देश भेद से व काल भेद से रोग निर्णय, अष्टविध ज्वरों का निदान, व

चिकित्सा आधुनिक प्राकृत व वैकृत ज्वरों की सनिदान चिकित्सा, आदि क्रमागत सबही बातों का संग्रह है। निदान व अन्य बातें तो सरल कविता में हैं और औषधि प्रकरण सब के समझने के लिये साधारण भाषावार्त्तिक हो में लिखा है भाषा निज प्रान्त की ही विशेष रक्खी है। मेरे पास लगभग तीन सौ वर्ष की लिखी हुई आठ कापी हैं जोकि महात्मा गणेशदासजी की लिखी हैं और उन्हीं ने अपने अनुभूत प्रयोग संग्रह किये हैं मैंने भी उन प्रयोगों का अजमा कर अनुभव किया है वे सब रामबाणवत् सफल होते हैं वे प्रयोग भी इस ग्रन्थ में आये हैं उनकी भाषा ज्यों की त्यों ही लिख दी है। जहांतक हो सका है तहां तक सर्वसाधारण जनता के उपकार पर दृष्टि रक्खी गई है कि जिससे सद्वैद्य जब तक न मिले तबतक स्वयं केवल हिन्दी पढ़नेवाला वैद्यों का सत्संगी अपने घर के रोगी की रक्षा कर सके क्यों कि आजकल देहात में अनपढ़ नीच लोग भी वैद्यराज बने बैठे हैं और अपने कुप्रयोगों से रोगियों को मृत्यु के हाथ समर्पण करते हैं या जन्म भर के लिये रोगी ही बना देते हैं इसी लिये महा कवि "लोलिम्बराज"

लिखते हैं कि—"औषधं मूढवैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपीडिता:॥ परसंसर्गसंसक्त-कलत्रमिव साधव:" १

ज्वरार्त्तरोगी मूर्ख वैद्यों की दवा त्याग दें जैसे साधु जन दूसरे की संगति में फँसी हुई कामिनी को छोड़ देते हैं। इसी से मैं ने इस ग्रंथ का संग्रह करि रचा है कि जिस से समस्त जनता का लाभ हो और कुत्सित वैद्यों के कुप्रयोगों से सद् वैद्यों का भी लांछन न दिया जाय।

"अहो दृष्ट्वा ऽऽश्चर्यं निखिलमनुजा रुग्णतनवो भिषग्वृन्दाश्चाज्ञाः परधनहरा लोभमतयः ॥ परासून् घ्नन्तीति प्रचुरतरमोहावृतदृशो ह्यतस्तूद्योगो ऽयं मम भवतु सर्वोपकृतये" २

( अर्थ )—अहो? खेद है कि संपूर्ण मनुष्य तो रोगी हैं और मूर्ख, दूसरों के धन हरनेवाले, लोभग्रस्त, अत्यन्त अज्ञान से ढके नेत्रवाले, वैद्यों के समुदाय पराये प्राणों को हरते हैं यह आश्चर्य देख कर मेरा यह ग्रन्थ संग्रहरूप उद्योग सबके उपकार के लिये हो ॥

इस ग्रन्थ का केवल प्रथम खण्ड ही प्रकाशित करि सबको नमूना की भाँति दृष्टि गोचर कराया है यदि समस्त सज्जन महोदय इस खण्ड को आदर पूर्वक अपनावें गे और हाथों हाथ अपनी ग्राहकता से स्वीकार करि मुझे पत्र द्वारा उत्तेजित करि प्रेरित करें गे तो मैं क्रमशः आगे के खण्ड भी प्रकाशित करि समर्पण करूं गा। आशा है कि सर्व सज्जन महोदय इस मेरी सेवा को अवश्य स्वीकार करें गे और मेरी त्रुटियों को सभार क्षमा करें गे क्योंकि—

"परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः"

और इतरजनों के लिये तो यह दोहा ही चरितार्थ होगा कि—

"दोषहि को उमहहिं गहहिं, गुण न गहहिं खल लोक।
पियै रुधिर पय ना पियै, लगी पयोधर जोंक ॥"

भवत्भव्येच्छु—रामचरण मिश्र
स्थान भयस्मरी पो० सिसोलर प्रान्त हमीरपुर।

॥ श्री ॥

# श्री जानकी वल्लभो जयति ।

## अथ भैषज्यभास्कर ग्रन्थारम्भः ।

॥ श्लोक ॥

स्वस्ति श्रीरघुवंश भूषण महं राजाधिराजं वरं
श्रीमद्वायुसुतेडितं परविभुं सुग्रीव संसेवितम्
श्रीमल्लक्ष्मणलक्षितं जनकजां ध्यायन्त माद्यं सुखं
रामं नित्यवरप्रदं सुरमुदं सर्वेश्वरेशं भजे ॥१॥

( अर्थ ) ( स्वस्ति ) यह मंगलार्थ कल्याण वाचक अव्यय पद है ( अहं ) मैं ( राजाधिराज ) राजाओं के महाराज ( वरं ) श्रेष्ठ ( श्रीमद्वायुसुतेडितं ) श्रीहनुमान जीसे स्तुति किये गये ( परविभुं ) पर व्यापक रूप ( सुग्रीव संसेवित ) सुग्रीव से भली भांति सेवा किये गये ( श्रीमल्लक्ष्मण लक्षितं ) श्री लक्ष्मण से संयुक्त ( जनकजां ध्यायंतं ) जानकी जीका चिन्तन करते हुये (आद्यं) आदि भूतं (सुखं) सुख स्वरूप ( नित्यवरप्रदं ) नित्यवर दाता ( सुरमुदं देवोंके आनन्द रूप ( सर्वेश्वरेशं ) सब ईश्वरों के ईश्वर ( श्री रघुवंश भूषणं ) श्री रघुकुल के भूषण रूप ( रामं ) राम को (भजे) भजता हूं ॥१॥

॥ श्लोक ॥

नत्वा विदेहतनयापतिपादपद्मं भास्वन्त मव्यय
महर्पतिभास्करंच ॥ भैषज्य—भास्कर ममुं विदधेऽनु
भूययोगान् हि रामचरणाभिधवैद्यसेवीर्यः ॥२॥

( आन्वितार्थ )

( रामचरणाभिधवैद्यसेवी ) रामचरण नामकवैद्य सेवी मैं ( विदेह तनयापतिपादपद्मं ) जनकतनया के पति राम जी के चरण कमल को (च) और ( भास्वन्तं ) प्रकाशमान ( अव्ययं ) अविनाशी ( अहर्पतिभास्कर ) दिनपति सूर्य को ( नत्वा ) प्रणामकरके (योगान्) प्रयोगों-नुसखों-को (अनुभूय) परीक्षा करके ( असुं ) इस ( भैषज्य-भास्करं ) भैषज्यभास्कर नामक ग्रन्थ को ( विदधे ) रचता हूं ॥ ॥

॥ श्लोक ॥

भाषाविदांमुदे भूयान्नृगिरा रचितोऽप्ययम् ।
तत्कृते मेश्रमो जातो दिव्यौषधिसुसंग्रहे ॥३॥

( आन्वितार्थ )

( नृगिरा ) मनुष्य बाणी से ( रचितः अपि ) बना भी ( अयं ) यह ग्रन्थ ( भाषाविदां ) भाषा विदों के ( मुदे ) आनन्द के अर्थ ( भूयान् , हो-किंच-( दिव्यौषधिसुसंग्रहे ) दिव्य औषधियों के अच्छे संग्रह में ( तत्कृते ) तिन भाषा वालों ही के निमित्त ( मे-मम ) मेरा ( श्रमः जातः ) परिश्रम प्रकट हुआ है ॥३॥

॥ दोहा ॥

श्री सीता वल्लभ चरण, युगल कमल मन ध्याउ ।
अखिल मनोरथ सफल हितु, याही एक उपाउ ॥१॥
विघन कदम्ब करिवर वदन, एक रदन जगवन्द ।
भाल वाल विधु सुख सदन, वन्दौ गिरिजा नन्द ॥२॥
सबके हित करि सुगम अति, लखि सब वैद्यक पंथ ।

रामचरण भाषा रचत, भेषज भास्कर ग्रंथ ॥३॥
बहु ग्रंथन को सार लै बहु सन्तन शिख पाय ।
करि अनुभव बहुवार पुनि, लिखहुं ग्रंथ हरषाय ॥४॥
केन नदी के तीर में, बांदा ढिग कनवार ।
जन्मभूमि मेरी तहां, सज्जन लेहु विचार ॥५॥
वर्ष पंचदश उमिरि ते, करत भिषज को काज ।
वर्ष चवालिस गत उमिर, सजहुं ग्रंथ की साज ॥६॥
विविध देश परि अटन करि, जो कुछ संचय कीन ।
सो अरपत लिख ग्रंथ में, रामचरण है दीन ॥७॥
कछुक समय ते बासथल भयस्मरी में कीन्ह ।
जानहु जिला हमीरपुर, पोस्ट सिसोलर चीन्ह ॥८॥
तहां बैठि इस ग्रन्थ को, लिखहुं जगत के हेत ।
शाकपत्र मम पास जो, सो सबही को देत ॥९॥

( अथ चिकित्सा के सात अङ्ग )

॥ दोहा ॥

वैद्य १ रोगिया २ दूत ३ धन ४ आयु ५ औषधी ६ भृत्य ७
सात चिकित्सा अंग ये होय पुष्ट शुभ कृत्य ॥१०॥

( अथ उत्तम वैद्य के लक्षण )

॥ दोहा ॥

शान्त प्रमान सुशीलता, ग्रन्थ अर्थ कहि देतु ।
जानत साध्य असाध्य को व्याधि नाम ऋतु हेतु ॥११॥
जानत द्रव्य क्रियान को, अति विचित्र गुन गूढ़ ।
देश काल समुझत सदा, सम दृष्टी आरूढ़ ॥१२॥

सुमति दया चित अनुभवी, सदा सुयश पर प्रीति ।
पढ़ निर्मल पंडित महा, वैद्यराज यह रीति ॥१३॥

( अथ अधम वैद्य के लक्षण )

॥ दोहा ॥

बस्त्र मलिन करकश महा, पराधीन अति लोभ ।
बिनु बोले आवै भवन, आदर लहै न शोभ ॥१४॥
ग्रन्थ भेद नहिं जानहीं, चीन्हत नाहीं रोग ।
देश काल को ज्ञान नहिं, मृत्यु न जानत योग ॥१५॥
दया धर्म जानै नहीं हरै प्राण धन धूत ।
अधम वैद्य ये जानिये, जग प्रसिद्ध यम दूत ॥१६॥

( अथ उत्तम रोगी के लक्षण )

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

॥ दोहा ॥

चित उदार दाता धनी, अमृत बचन मतिधीर ।
भेद न राखत बैद सों, कहत सकल तनु पीर ॥१७॥
औषधि बैद्य प्रतीति अति, पथ्य रहै चित साधु ।
स्वाद लोभ लालच तजै, सदा धर्म अब राधु ॥१८॥
गुन मानै बहु मित्रता, अति आदर आधीन ।
ता रोगी की औषधिहिं, कीजै वैद प्रवीन ॥१९॥

॥ अथ अधम रोगी के लक्षण ॥

॥ दोहा ॥

औषधि बैद न भावई, भाखत मुख कटु बैन ।
चिर चिरात जरि जरि उठत, लहत नहीं चित चैन ॥२०॥

कुटुंब कलह तामस बड़ो, कुपथ स्वादु पर प्रीति ।
द्रव्य खर्च लखि मरब चह, अधम रोगिया रीति ॥२१॥

( अथ शुभ दूत लक्षण )

॥ दोहा ॥

चित आनन्द निरोग पुनि, आवहिं शुभ दिन दूत ।
अस्त्र न बांधै लकुट पुनि, संग रहित चित पूत ॥२२॥
अति प्रवीन सुन्दर चतुर, श्वेत वसन शुभ बैन ।
स्वच्छ सुफल करमें लिये, दूत सुभग शुभ नैन ॥२३॥
अश्व चढ्यो कर द्रव्य युत, अंग हीन कछु नाहिं ।
उत्तम गोत उदारता, सुभग दूत कहि ताहि ॥२४॥

( अथ अशुभ दूत लक्षण )

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ दोहा ॥

पट मलीन कारो बहुरि, कानौ कुवा अभद्र ।
अंग भंग कर दंड धर, कुल विहीन दारिद्र ॥२५॥
अशुभ बचन मुखते कहै, अश्रुपात दृगु जासु ।
अशुभ दूत अस अरु तिया, रोगी यमपुर तासु ॥२६॥

॥ अथ दूत परीक्षा ॥

॥ दोहा ॥

दूत वचन अरु नाम के, अक्षर लीजै जोर ।
भाग दीजिय तीन को, तामें बचै बहोर ॥२७॥
एक बचै तो रोगिया, जानहु साध्य विशेख ।
पुनि अक्षर दूजो बचे, कष्ट साध्य त्यहि लेख ॥२८॥

शून्य बचै तो मरन है, जहै यमके धाम।
करि भाषा याको कह्यो दूत परीक्षा नाम ॥२९॥

( अन्यच्च )

चौपाई

दूत नाम हरि भुजा गनोजै। जो तिथि होइ सो दूगुन कीजै॥
तामे भाग सात को हरै। शून्य परै तो पग ना धरै॥

( और भी समरसार ग्रंथ मे लिखते हैं )

दो०—तिरछे गेरह कोष्ठ लिख. ऊरध कोठा पांच।
ऐसो चक्र खचाइये, कहौं अंक विधि सांच ॥३०॥
षट ६ त्रय ३ दुइ २ श्रुति ४ सदा ७ षट ६ श्रुति ४ त्रय ३ महि १
दुई २ एक १। प्रथम पंक्ति में अंक ये लिखहु बुद्धि बल टेंक ॥३१॥
त्यागि विसर्ग[1] नपुंसकन[2], स्वर लिखु दूजी पांति।
तीजी का ते टा लगे, धरहु वरण क्रम भांति ॥३२॥
चौथो ठा ते फा लगे, पँचई बा ते हान्त।
वरण रीति विधि ते लिखौ चक्र बीच मति शान्त ॥३३॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( चक्रम् )

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ३ | २ | ४ | ७ | ६ | ४ | ३ | १ | २ | १ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अं |
| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ | ट |
| ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ |
| ब | भ | म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह |

दो०--दूत रोगिया नाम के, वरन ध्रुवांकन[1] जोर।
भिन्न भिन्न संख्या विषे, आठ भाग दै टोर ॥३४॥
दूत नाम के शेष ते, अधिक रोगिया शेष।
तौ जीवै रोगी तुरत, सम क्रम मरन विशेष ॥३५॥

१ अः २ ऋ ॠ ऌ ॡ।

१ स्वर व्यंजनों के पृथक् पृथक् ध्रुवांक जोरना चाहिये।

( उदाहरण ) जैसे देवदत्त नामक रोगी के लिये गणेश नामक दूत आया तो इस पर समझिये कि रोगी का जो नाम देवदत्त है तिसमें चक्र से मिलाइये कौन २ अक्षर स्वर का ध्रुवांक है सो देखो द ४ ए ४ व ४ अ ६ द ४ अ ६ त ७ त ७ अ ६ इस ध्रुवांक संख्या का जोड़ हुआ ४८ इसमें आठ का भाग देने से बचा शेष ० और रोगीका नामहै गणेशतो--ग २ अ ६ ण ४ ए ४ श ३ अ ६ इस ध्रुवांक संख्या का जोड़ हुआ २५ इसमें आठ का भाग देने पर बचा शेष १ तो दूत के नाम की संख्या अधिक बचने से रोगी मरेगा ऐसा वैद्य निश्चय कर लेवे ।

( अथ दूत की दिशा आदि विचार )

॥ दोहा ॥

पूरब पश्चिम उत्तरै, मुख करि बैठहि दूत ।
तौ उत्तम अरु दक्खिनै, असगुन मन मंह कूत ॥३६॥
कूरा कब्बर राख पै, बैठि तिनूका तोर ।
अथवा छाती नाक शिर धरे हांथ मुंह मोर ॥३७॥
अथवत सूरज आंवई, मौन ठाढ़ मन शोक ।
ऐसे दूत कुढंग से, रोगी यम के लोक ॥३८॥

( अथ शुभ धन ४ )

॥ दोहा ॥

दान धर्म सत्कार में, औषधि रस निर्मान ।
यथा शक्ति व्यय धन करै, सोई कर कल्यान ॥३९॥

( अथ अशुभ धन )

॥ दोहा ॥

निज तनु हित कौड़ी नहीं पर हित कौन प्रमान ।
दान भोग बिनु धन जुरो, उभय लोक की हान ॥४०॥

( अथ चिरायु विचार ९ )

॥ दोहा ॥

चेतन युत सब इन्द्रियां, निज निज रस को ज्ञान।
कोमल रसना सरस दृग सो चिरायु अनुमान ॥४१॥

( अथ अल्पायु विचार )

॥ दोहा ॥

बिकल इन्द्रियां रस तजैं ग्रीवा थिर नहिं होइ।
नाक श्वास बिनु जीभ जड़, अल्प आयु है सोइ ॥४२॥

( अथ सत अवषधि ६ )

॥ दोहा ॥

तीन बार के देत ही, जो प्रगटे निज भाव।
रोग उपद्रव नहिं उठै, सत औषध सो गाव ॥४३॥

( असत औषध )

॥ दोहा ॥

जाते रोगी विकल ह्वै, लहै नहीं बिश्राम।
दाह करै तांकौ गुनौ, असत औषधी नाम ॥४४॥

( अथ उत्तम परिचारक ७ )

॥ दोहा ॥

अति प्रवीन चेतन सदा, निर्भय धीरज चित्त।
वैद कहत सोई करत, ग्रंथ उक्ति निज मित्त ॥४५॥
उपकारी लोभै तजै, कहै धर्म की बात।
निकट रोगिया के रहै, ऐसो रक्षक गात ॥४६॥

( अथ अधम परिचारक )

॥ दोहा ॥

अति लोभी अरु मसखरा, औषधि ठगि कै लेइ ।
रोगी निकट न बैठई, झूँठा अपयश देइ ॥४८॥
पुण्य दान कछु ना करै, महा कृपिण जड़ जान ।
ऐसे रक्षक अधमते, होत प्रान की हान ॥४९॥

( अथ शकुन विचार )

सो० धेनु बच्छ लिय साथ वैल लखो जो अन्न सो
मालि पुहुप फल हाथ मीन लिये केवट मिले ?

॥ दोहा ॥

भरे कलश सन्मुख मिलैं, पीछे आवैं रीत ।
पुत्र लिये युवती मिलै, गावत मंगल गीत ॥५०॥
भेरि मृदंग निशान पुनि शंख शब्द सुर वीन ।
विप्र मृत्तिका मांस मधु, कन्या गोबर लीन ॥५१॥
महरि लिये दधि शीश पर, सिद्ध अन्न शुभ चित्त ।
गज गनिका नृप वैद्य सो, कहे सुभग सब हित्त ॥५२॥

( अथ अशुभ शकुन )

॥ दोहा ॥

त्वचा चर्म अंगार पुनि, नगिन लोह लिय हाथ ।
महिष चढ़ो कोढ़ी मिले, अंध कुब्ज लिय साथ ॥५३॥
कोदौ तक्र कपास गुड़, लोन बसा पुनि तेल ।
मुंड जटाधर अस्त्र कटि, मकुना मिलै अकेल ॥५४॥
वधिक मिले अरु मद पिया, ततु अघोर चण्डाल ।
कृष्ण रक्त गेरू रँगे, वसन देख यम काल ॥५५॥

योगी खसिया मृतक अहि, रीते घट तिय ल्याइ।
महा अशुभ दरशन सबै, रोगी यम पुर जाइ ॥५७॥

( अथ स्वर विचार )

॥ दोहा ॥

आवत दूत सु वैदवर, करि धीरज निज चित्त।
शास्त्र स्वरोदय भेद सो, जानै हित अनहित्त ॥५८॥
दक्षिण कर सो नासिका सुभग परीक्षा लेइ।
वात पित्त कफ तीन को, स्वर लक्षण कहि देइ ॥५९॥
बायें स्वर कफ जानिये दहिने पित्त बखान।
उभय हीन जो स्वर चलै, बाइ रोग तब जान ॥६०॥
चंचल गति है पित्त की, वात मंद गति होइ।
इस्थिर गति कफ की गुनौ, स्वर लक्षण है सोइ ॥६१॥
पित्त रोग की उष्ण गति, कफ की शरद बखान।
शीत उष्ण गति बात की, स्वर से गुन मति मान ॥६२॥

( अथ वारानुसार स्वर विचार )

॥ दोहा ॥

शनिवासर रविबार पुनि, भौमवार गुरुवार।
दक्षिण स्वर चल भानु को, सकल सिद्धि सुखसार ॥६३॥
सोम शुक्र बुधवार को, वाम चलै स्वर चन्द्र।
कहै सुभग लक्षण महा, अमृतमय सुखकंद ॥६४॥
रवि को स्वर चल चंद घर, चंद चलै रविधाम।
जो स्वर जावै आन घर, तौ अशुभै सब काम ॥६५॥
आनवार स्वर आन घर, लक्षण यह विपरीत।
दक्षिण स्वर दक्षिण चलै, वाम सुभग स्वर मीत ॥६६॥

( अथ यम घंट योग )

॥ दोहा ॥

मघा बिशाषा आरद्रा मूल कृत्तिका जान ।
रोहिणि हस्त नक्षत्र ये, रवि ते क्रम पहिचान ॥६७॥
यह यम घंट कुयोग है, याको उपजो रोग ।
महा सुकृत ते जात है, समुझत पंडित लोग ॥६८॥

( अथ मृत्यु योग )

॥ दोहा ॥

अनुराधा त्रय उत्तरा, मघा अश्विनी जान ।
मृगशिर असलेषा बहुरि, हस्त नखत परिमान ॥६९॥
रवि ते क्रम पहिचानिये, मृत्यु योग यह नाम ।
याके उपजे रोग को, भल नाहीं परिणाम ॥७०॥

( अथ क्रूरवार )

॥ दोहा ॥

रविवार शनिवार पुनि, भौमवार पहिचान ।
क्रूरवार पंडित कहत, ज्योतिष लिखित प्रमान ॥७१॥

( अथ असाध्य नक्षत्र )

॥ दोहा ॥

हस्त मूल भरणी मघा, क्रूर नषत पहिचान ।
इनमें उपजे रोग को कहत असाध्य प्रमान ॥७२॥

( अथ कष्ट साध्य नक्षत्र )

॥ दोहा ॥

चित्रा स्वाती आरद्रा, तीनौ पूर्वा पुष्य ।
मूल पुनर्बसु कृत्तिका, अनुराधा असलिष्य ॥७३॥

श्रवण धनिष्ठा जेषठा, और विशाखौ मान ।
कष्ट साध्य गुनि नषत पति, पूजि कीजिये दान ॥७४॥
शूल वज्र अति गंड पुनि, व्यतीप त व्याघात ।
अरु विषकुम्भ बखानिये, क्रूर योग कर घात ॥७५॥
वार नखत पुनि योग जो तीनहु होवैं क्रूर ।
तौ रोगी जीवे नहीं दवा होत सब धूर ॥७६॥
हस्त मृगासिर अश्विनी, अनुराधा अरु पुक्ख ।
रेवति रोहिणि सात ये रविते क्रम को लिक्ख ॥७७॥
अमृत योग याको कहत, तुरत रोग बिनसात ।
सकल कुयोग बिलात हैं बरनत मति अवदात ॥७८॥

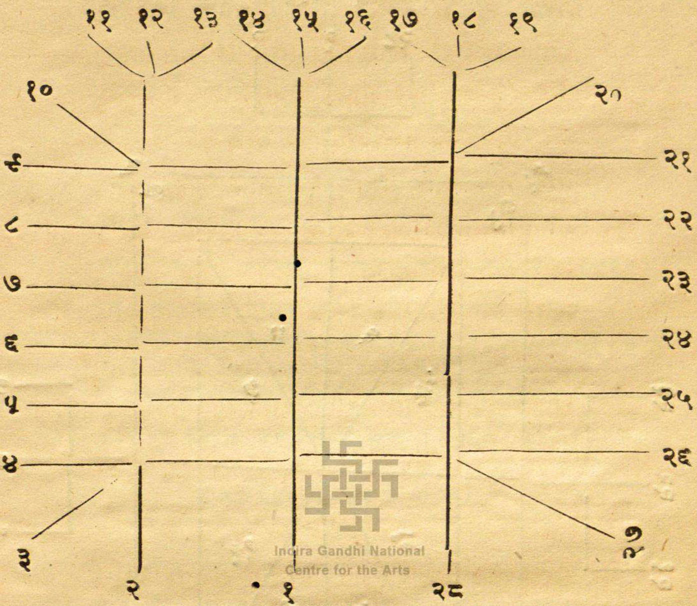
( अथ सूर्य कालानल चक्रम् )

॥ दोहा ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

ऊरध तीन त्रिशूल लिख, मध्य लिखौ षट रेख ।
एक एक रेखा सुभग, चारहु कोन विशेष ॥७९॥
रबि नक्षत्र कहं आदि दै रेखा मध्य त्रिशूल ।
धर नक्षत्र सब चक्र में, जाते परै न भूल ॥८०॥
ज्यहि नक्षत्र मैं दूत नर, सादर आवहि लेन ।
ताको भिषज विचार करु, जीवन मरन सुखेन ॥८१॥
अध रेखा जु त्रिशूल की, तीन मृत्यु निज जान ।
चारि कोन मैं जे परैं, ते सब सुभग बखान ॥८२॥
द्वादस रेखा मध्य की, ते सब मध्यम जान ।
नव रेखा तिरशूल की, करैं प्रान की हान ॥८३॥

——*——




( अथ चन्द्र कालानल चक्रम् )

॥ दोहा ॥

चन्द्र गगन इमि चक्र लिख, कर त्रिशूल चहुं ओर।
अष्ट खंड मंडल लिखौ, तहँ नक्षत्र धरि जोर ॥८४॥

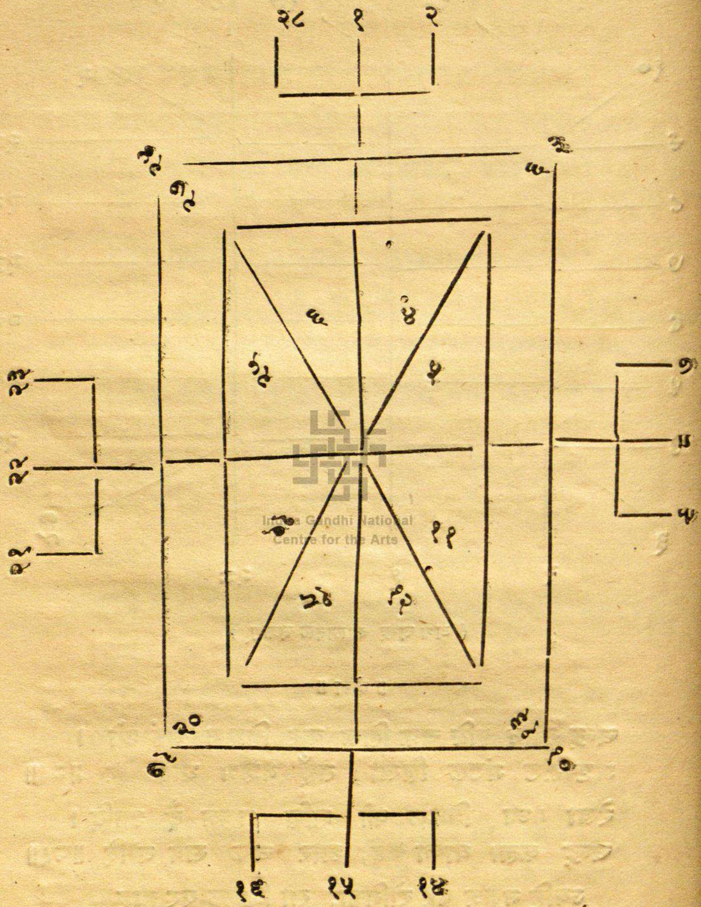
रेखा मध्य त्रिशूल की शशि नक्षत्र दै आदि।
चन्द्र कला याकों कहैं, और चक्र सब वादि ॥८५॥

ज्यहि नक्षत्र पर रोगिया, सो त्रिशूल पर होइ।
मृत्यु तासुकी जानबी, यमपुर जैहैं सोइ ॥८६॥

पुनि त्रिशूल के कंठ बसु कष्ट साध्य त्यहि जान।
मध्य मंडली जे परैं ते सब सुभग बखान ॥८७॥

बुद्धिमंत चित शुद्धि कर, लीजै खूब बिचार।
पीछे रोगी की करौ, शुभ औषध सुख सार ॥८८॥

( चक्रम् )




( अथ शलाका चक्रम् )

॥ दोहा ॥

आर्द्रा आदि मृगान्त लौं, मूल मध्य करु आन ।
रवी[1] चन्द नर नषत इक, तौ दिन रोग उठान ॥८९॥

---

१—सूर्य चन्द्र रोगी का एक ही नक्षत्र हो तो रोगी मर जाता है ।

तौ मरि जैहै रोगियो, करिहै यमपुर वास।
चक्र सलाका नामयह, छोड़ौ जियकी आस ॥९०॥

( अथ तिथिवार नक्षत्र का बेध )

॥ दोहा ॥

आर्द्रा शतभिष अरु उरग, स्वाति मूल भरनीय।
तीनौ पूर्वा रेवती, ज्येष्ठा और गनीय ॥९१॥
शनि वासर रविवार पुनि भौमवार कहँ जान।
परिवा छठि चौथै गिनौ और द्वादशी मान ॥९२॥
ये नक्षत्र तिथि वार में, परै रोग नर जोइ।
हरि हर विधि रक्षा करैं तऊ न जीवन होइ ॥९३॥

( अथ तिथिवार नक्षत्र को प्रमाण )

॥ दोहा ॥

वार दोष रह सात दिन, तिथि दिन पंद्रह जान।
नखत दोष रह मास इक, कहिगे वृद्ध प्रमान ॥९४॥

( अथ वार विरुद्ध वर्ग )

॥ चौपाई ॥

आदित गरुड़ सोम मंजारौ। भौम सिंह बुध श्वान जु मारौ ॥
गुरु भुजंग शुक्र मृग मूसौ। शनि मेढ़ा जु काल यम रूसौ ॥
वार विरुद्ध बरग सो परै। ताको वैद न औषध करै ॥

( अथ वर्ग जानने की विधि )

॥ दोहा ॥

गरुड़ अवर्ग[1] बखानिये अरु मंजार कवर्ग[2]।
सिंह चवर्ग[3] टवर्ग[4] है, श्वान भुजंग तवर्ग[5] ॥९५॥
मूस पवर्ग[6] यवर्ग[7] मृग, मेढ़ा कहत शवर्ग[8]।
आदि वरण गुनि नामको, जानि लीजिये वर्ग ॥९६॥

( अथ नक्षत्र रोगावली )

॥ चौपाई ॥

अश्विनि को जब पीड़ा होइ। आम बात ज्वर उपजै सोइ ॥
ज्वर अन्तर गत रहै शरीर। दारुण व्यथा अधिक तनु पीर ॥
प्रथम चरण महं नौ दिन जान। द्वितिये गेरह दिना बखान ॥
तिसरे दश दिन को परिमान। चौथे बीस दिना को जान ॥
चार चरणको कहेउँ प्रमान। अब याकी विधि कहहुं बखान ॥
अश्वनि देव तासु को स्वामी। पढ़ै मंत्र अश्विन के नामी ॥
पंच सहस्र जाप त्यहि करै। घृत अरु क्षीर अगिन में परै ॥
ब्राह्मण भोजन दीजै दान। यथा शक्ति जैसो उनमान ॥

( अथ भरणी )

॥ चौपाई ॥

भरणी नखत रोग जब होइ। छर्दि रोग उपजै तब सोइ।
ज्वर अधिकार बढ़ै अतिघोर नाना व्याधि अधिक तन जोर।

१—अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ। २ क ख ग घ ङ। ३ च छ ज झ ञ। ४ ट ठ ड ढ ण
५ त थ द ध न। ६ प फ ब भ म। ७ य र ल व ८ श ष स ह ॥

पहलौ चरण शून्य को जान। रोगी लहहि प्रान की हान॥
दुसरे कष्ट असी दिन होइ। तिसरे चालिश दिन लगि सोइ॥
चौथे चरण इकादश मानौ। चार चरण को यह परवानौ॥
भरणी नखत देव यम भनौ। ताके मंत्र पढ़े सुख सुनौ॥
मंत्र औषधी जप नहिं दाना। दश वासर में जैहैं प्राना॥
दश हज़ार जाप त्यहि करै। पाछे होम दान अनुसरै॥
अजा महिष गो दान तुरंग। ब्राह्मण भोजन वस्तर अंग॥
क्षेत्र पाल की पूजा करै। भरणी नखत दोष को हरै॥

## ( अथ कृत्तिका )

॥ चौपाई ॥

कृतिका नखत पीर जो होइ। रक्त नेत्र पीड़ा युत जोइ॥
शिर उर शूल तबहिं अनुमान। ऐसो रोग विधै तब आन॥
अबयाको परिमान बताऊँ। चारि चरन को भेद जताऊँ॥
प्रथम चरन नौ दिना बखानौ। दुसरे एकादश पहिंचानौ॥
तिसरे षोड़स दिना विशेष। चौथे चरण अठाइस लेख॥
चार चरन के दिवस बताये। अब ताकी विधि देहिं जताये॥
कीजै नव ग्रह केर विधान। ब्राह्मण भोजन कह्यो प्रमान॥
कृतिका केर अग्नि है देव। एक हजार जाप करि सेव॥
तिल घृत होम करै मति धीर। अग्नि रश्मि मन्त्रहिं जप वीर॥
कृत्तिका नखत दोष हरि लेउ। कह्यो पंडितन याको भेउ॥

## ( अथ रोहिणी )

॥ चौपाई ॥

रोहिणि नखत माथ पै शूल। दारुण व्यथा ताप अति हूल॥
अति विक्रम पुनि करै प्रलाप। दाह होइ अरु आंखिन झाप॥
पहिले चरन सात दिन पीर। दुसरे नव दिन दुःख शरीर॥
तिसरे दिवस अठारह जान। चौथे चरन तीस परिमान॥

देव प्रजापति जानहु त्यहि को । ब्रह्मयज्ञान मंत्र है त्यहि को ॥
जाप पंचशत ताकी जानौ । तिल घृत होम दान को ठानौ ॥
पंच कुमारि हिं भोजन देहु । खीर खांड़ मिश्रित कर लेहु ॥
यहि विधि पूजा करै बनाय । नखत दोष छिन में मिट जाय ॥

## ( अथ मृगशिरा )

॥ चौपाई ॥

मृगशिर नखत रोग जब होइ । अधशरीर पीर नर होइ ॥
दारुन महा व्यथा अधिकार । चार चरन को कहौं विचार ॥
प्रथम चरन नौ दिना बखानौ । दुसरे पांच दिवस परिमानौ ॥
तिसरे दिन सातक परिमान । चौथे चरन दशक दिन जान ॥
सोम देवता अधिपति जाको । एक हजार जाप करु ताको ॥
बछड़ा सहित गाय दै दान । दधि तंडुल है तासु विधान ॥
अष्ट विप्र को देइ बुलाय । कुल को देव पूजिये आय ॥

## ( अथ आर्द्रा )

॥ चौपाई ॥

आर्द्रा व्याधि होइ जब आन । अंग पीर अति ग्रहनी मौन ॥
शिर पीड़ा है तन अधिकार । अंग अंग दुख होत अपार ॥
मंत्र औषधो लगै न एकौ । नौ दिन अंतर रामहिं टेकौ ॥
प्रथमहि शून्य न जीवै लोइ । दुसरे अष्टादश पुनि होइ ॥
तिसरे चौथे शून्य विचार । मरै रोगिया ग्रथ उचार ॥
ताकर देव रुद्र है नाम । जपिये मन्त्र सरै तव काम ॥
दश हजार जाप त्यहिं करै । मधु घृत होम अग्नि में परै ॥
श्वेत वृषभ पुनि दीजै दान । भोजन विप्र कुमारी जान ॥

## ( अथ पुष्य )

॥ चौपाई ॥

पुष्य नखत जब व्याधी होइ । ज्वर पीड़ा दारुण नर जोइ ॥
शूल पीर अरु जकरै अंग । माथा शूल होइ चित भंग ॥

सुर गुरु देव जानिये जाको । मन्त्र जाप करु पूजन ताको ॥

## ( अथ पुनर्वसु )

——:o:——

नषत पुनर्वसु पीड़ा होइ ।
दारुन दुख पीड़ा कटि जोइ ॥
प्रथम चरन दिन सातक होइ ।
दुसरे दिन चौदा लगि सोइ ॥
तिसरे चरन दिना दश गाउ ।
चौथे इकइस दिवस बताउ ॥
आदिति देव तासु को धीर ।
आदिति मंत्र हरै तनु पीर ॥
जाप एक शत ताकी जान ।
घृत तंडुल को होम विधान ॥
कंचन को नर दीजै दान ।
भोजन विप्र कुमारी जान ॥

चार चरन के कहे प्रमानै । अब ताके पुनि सुनौ विधानै ॥
ताको पितर देवता जानौ । त्यहि आराधन करहु सयानौ ॥

सुर गुरु देव जानिये जाको। मन्त्र जाप करु पूजन ताको ॥
पांच सैकरा कर आवृत्त। होम करौ पायस अरु घृत्त ॥
पीत वसन गोधूमै दान। कंचन दीजै शक्ति प्रमान ॥
पुष्य नखत को कह्यो विधान। पंडित कहत वेद परवान ॥

## ( अथ श्लेषा )

॥ चौपाई ॥

असलेषा तनु पीड़ा होइ। अत्ति अंग दुख देवै सोइ ॥
पीड़ा अधिक होइ तनु पोर। औषधि लगै न तां कहँ घोर ॥

॥ दोहा ॥

कुल की माता योगिनी पूजा करौ विधान।
छूटै व्याधि उपाय ते, दीजै छाया दान ॥९७॥
प्रथम दूसरे शून्य है तिसरे इक चालीश।
शून्य जानिये चौथ में, बचै जो रक्षक ईश ॥९८॥
सर्प देवता तासु को सर्प मंत्र जपु धार।
दश हजार परिमान है, मिटिहै तनु की पीर ॥९९॥
होम करो घृत खाँड़ को, महिष दान पुनि देहु।
ज्योतिष के सिद्धान्त से यहै युक्ति सुनि लेहु ॥१००॥

## ( अथ मघा )

॥ चौपाई ॥

मघा नखत जब पीड़ा होइ। अर्ध शरीर गात पुनि जोइ ॥
प्रथम चरन पन्द्रह दिन जान दुसरे सात दिवस परिमान ॥
तिसरे चरन सप्त दश जानौ। चौथे पुनि दिन वीश बखानौ ॥
चार चरन के कहे प्रमानै। अब ताके पुनि सुनौ विधानै ॥
जाको पितर देवता जानौ। त्यहि आराधन करहु सयानौ ॥

एक हजार जाप अनुसरै । तिल तंडुल घृत होमहिं करै ॥
तिल पुनि माष वसन दै दान । छूट रोग मन निश्चय जान ॥

## ( अथ पूर्वा फाल्गुनी )

॥ चौपाई ॥

पूर्वा फाल्गुनि पीड़ा होइ । अर्ध गात्र शिर उपजै सोइ ॥
सकल अंग पीड़ा अधिकार । अति ज्वर दारुण होइ अपार ॥
पहिले चरण शून्य अनुमान । दुसरे पन्द्रह दिना बखान ॥
तिसरे चरण शून्य पुनि होइ । चौथे तीस दिना को जोइ ॥

॥ दोहा ॥

तासु ईश भग देव की, दश हजार करु जाप ।
तिल प्रियंगु घृत होम करु, तबै मिटै तन ताप ॥१०१॥

## ( अथ उत्तरा फाल्गुनी )

॥ चौपाई ॥

उत्रा नखत पीर जो होइ । कुक्षि शूल दारुण तब जोइ ॥
होय शरीर व्याधि अति जोर । पुनि पीड़ा उपजै शिर ओर ॥
प्रथम सात दिन कह्यो प्रमान । दुसरे पुनि चौदह दिन जान ॥
तिसरे सात दिवस परिमान । चौथे साठ दिना पुनि जान ॥
अर्यम देव तासु मति धीर । जपै मंत्र अर्यम हर पीर ॥
दशशत जाप करै द्विज ताको । तिल घृत होम नाम लै याको ॥
हेम रजत दै तिसको दान । यथा शक्ति ताको अनुमान ॥
अन्न पान द्विज देइ बुलाइ । तजौ शोच दुख जाइ पराइ ॥

## ( अथ हस्त )

॥ चौपाई ॥

हस्त नखत वेदन अति होइ । दारुण व्यथा शूल उर जोइ ॥
सकल अंग पीड़ा अरु दाह । अधिक प्रसेद चलै तन माह ॥
प्रथमहिं पंद्रह दिना बताउ । दूजे सत्रह दिवस जताउ ॥
तीजे दिन पंद्रह परिमानै । चौथे पंच दिवस मतिमान ॥
सविता देव तासु को जानौ । ताकी पूजा सेवा ठानौ ॥
पांच सैकरा कीजिय जाप । दधि घृत हवन किये नश पाप ॥
कीजिय छायादान विधान । दूध देत करिये गोदान ॥
हस्त नखत को कियो विचार । पुण्य किये दुख मिटै अपार ॥

## ( अथ चित्रा )

॥ चौपाई ॥

चित्रा नखत व्याधि जब होइ । चित्र दोष उपजै बहु सोइ ॥
महा कष्ट दारुण दुख जान । निन्दित रोग अंग पहिचान ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम चरन गेरह दिवस, नव दिन दूजे जान ।
तीजे दिन आठक कहत, चौथे षोड़श आन ॥१०२॥
त्वष्टा सुर ताको कहत, करिय वरण त्यहि मंत्र ।
जाप पांचसै होम करु, तिलतंडुल एकत्र ॥१०३॥
चित्र वृषभ गुड़ तेलदे, चित्रा दान विधान ।
सर्व व्याधि तन छूटिहै, ताते कहत सुजान ॥१०४॥

## ( अथ स्वाती )

॥ चौपाई ॥

स्वाति नखत उपजै जो रोग। अंग दाह ग्रह केर कुयोग॥
होम जाप ग्रह की करु धीर। नखत मंत्र जपु जैहै पीर॥
प्रथम साठ दिन लखु मति धीर। दुसरे सत्रह दिन लगि पीर॥
तीजे तीस दिवस लगि लेख। चरण चौथहैं शून्य विशेख॥
वायु देवता ताकर मानौ। पांच हजार जाप परिमानौ॥
तिल यव घृत को होम विधान। राती गाय देहु पुनि दान॥
स्वाति नखत को कह्यो प्रमान। याही विधि को करै विधान॥

## ( अथ विशाखा )

॥ चौपाई ॥

नखत विशाखा उपजै रोग। कुक्षि शूल तनु पीड़ा योग॥
प्रथम चरन पंद्रह दिन जान। दुसरे पुनि दिन बीश बखान॥
तीजे चरन चार दिन जानै। चौथे षट दिन बीश बखानै॥
इन्द्र अगिनि है अधिपति जाको। जपिये मंत्र विप्रवर ताका॥
द्वै हजार ताको जपु करौ। दधि तडुल घृत होमै करौ॥
राते वसन पीत पुनि देउ। कृष्ण वृषभ को दान शुभेउ॥

## ( अथ अनुराधा )

॥ चौपाई ॥

रोग होइ उतपत अनुराधा। ज्वर त्यहि काल दोष त्रय बाधा॥
प्रथम चरन दिन द्वादश जानौ। पुनि दुसरे दिन छहै बखानौ॥
तिसरे चौबिश दिन परिमान। चौथे बीस दिनन कहं जान॥

॥ दोहा ॥

मित्र देवता तासु को, एक सहस करु जाप ।
घृत यव होमै कनिक को, दान दिये मिट ताप ॥१०५॥

## ( अथ ज्येष्ठा )

॥ चौपाई ॥

ज्येष्ठा नखत रोग जब होइ । पित्त प्रकोप अधिक तब जोइ ॥
चित्त भ्रम तनु ब्याकुल होइ । माथौ शूल ओकाई सोइ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम चरन चौदह दिवस, दुसरे पंद्रह जान ।
तिसरे नव दिन कहत हैं, चौथे चार बखान ॥१०६॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ चौपाई ॥

इन्द्र नाम है ताकर देव । ताको अर्चन करहु सुसेव ॥
तीन हजार जाप अनुसरै । तिल तंदुल घृत अग्नी परै ॥

॥ दोहा ॥

तेल वसन को दान दे, नखत दोष मिट जाय ।
यह विधान विधि सो करै, जैहै पाप पराय ॥१०७॥

## ( अथ मूल )

॥ चौपाई ॥

मूल नखत उपजै जो रोग । उरमें शूलै त्रिदोष कुयोग ॥
प्रथम शून्य जानहु मति धीर । मृत्यु योग की उपजै पीर ॥

दुसरे चरण दिनो नव जानै । तीजे पंद्रह दिना बखानै ॥
चौथे षट दि कह्यो बखान । सुनिये सज्जन शान्ति विधान ॥
नैऋत देव तासु को स्वामी । अर्चन करहु सुफल अनुगामी ॥
एक हजार जाप अनुसरै । कंद मूल फल होमै करै ॥
श्याम गाय कहँ दीजै दान । यह पंडितन कह्यो प्रमान ॥
अजा हेम को दीजिय दान । कीनो याको सकल बखान ॥

## ( अथ पूर्वाषाढ़ )

॥ चौपाई ॥

पूर्वाषाढ़ रोग जब होइ । नाना व्याधि अधिक तनु जोइ ॥
महा घोर पीड़ा रह जाको । कंपमान उपजत बहु ताको ॥
पहिले चरण शून्य पुनि होइ । दुसरे पंद्रह दिन दुख जोइ ॥
तीजे चौबिश वासर जानै । चौथे दश दिन को परिमानै ॥
आप देवता ताको जानौ । आपो धर्म मंत्र जप ठानौ ॥
द्वै हजार जाप अनुसरौ । तिल घृत होम अग्नि में करौ ॥
जल भर घट दै वस्तर दान । कनिक दान पुनि उत्तम जान ॥
करौ नखत विधि को मति धीर । हरत सकल रोगी की पीर ॥

## ( अथ उत्तराषाढ़ )

॥ चौपाई ॥

उत्तराषाढ़ व्याध को योग । दारुण व्यथा पीर कटि रोग ॥
अति विक्रम पुनि करै प्रलाप । उर महँ शूल होइ तनुताप ॥
प्रथम तीस दिन जान प्रमान । दुसरे दिन चौबिस गुन ज्ञान ॥
तिसरे दिन छब्बीश प्रमान । चौथे षोड़श कहत सुजान ॥

चारि चरन को कह्यौ विशेष । अब ताकी विधि सर्वस देख ॥
बिश्वेदेव तासु पति जानौ । ताकी सेवा पूजन ठानौ ॥
एक हजार जाप करु ताको । तिल घृत अग्नि हवन करु वाको ॥
द्विज भोजन दै कंचन दान । मिटै रोग करु नखत विधान ॥

SANS
615.536
MIS

## (अथ श्रवण)

॥ चौपाई ॥

श्रवण नखत उपजै जब रोग । बात पित्त से होइ कुयोग ॥
अतीसार होवै अधिकार । अंग पीर दुख होइ अपार ॥
साठ दिवस पहिले पद जानौ । दुसरे चौबिस दिन पहिचानौ ॥
तिसरे षट दिन रोग बताउ । चौथे पद नौ दिवस सुनाउ ॥
विष्णु देवता जानौ ताकौ । पूजि सफल करिये मन्सा को ॥
एक हज़ार जाप करु तासु । तिल घृत यव होमे दुख नासु ॥
कनिक दान गोदानहिं देउ । भोजन दै द्विज की करु सेउ ॥
नखत बिधान यही बिधि कह्यो । सोनौ दान दिहे सुख लह्यो ॥

## (अथ धनिष्ठा)

॥ चौपाई ॥

नखत धनिष्ठा पीड़ा होइ । मूत्रकृच्छ्र जानौ तब लोइ ॥
ज्वर को कोप रक्त अतिसार । बार बार दुख कठिन अपार ॥
पहिले चरण तीस दिन पीर । दूजे दुख दिन बीशक धीर ॥
तीजे दिन पचीशक जान । चौथे षोड़श गर्ग बखान ॥
ताके अधिपति हैं वसुदेव । बसोः पवित्र मंत्र यह सेव ॥
एक हजार जाप करु धीर । तिल यव घृत होमे हर पीर ॥

IGNCA RAR
ACC. No. R 2911

नव ग्रह होम करौ द्विज सेव । पनहीं दान छत्र पुनि देव ॥
बलि पूजा योगिन को कही । नखत विधान जानिजै सही ॥

## ( अथ शतभिषा )

॥ चौपाई ॥

नखत शतभिषा पीड़ा होइ । पवन व्याधि उपजै नर सोइ ॥
सकल शरीर कष्ट अति ताको । शीत अंग ज्वर दारुण बांको ॥

॥ दोहा ॥

शून्य प्रथम पद दूसरे, दिन पैतालिस जान ।
चौथे बाइस दिन कह्यो, चारौ चरन प्रमान ॥१०८॥

॥ चौपाई ॥

ताको अधिपति वरुण सुदेव । वरुणस्तंभ मंत्र को भेव ॥
एक हजार जाप द्विज करै । घृत दधि तंडुल होमै परै ॥

॥ दोहा ॥

कनक लोह तिल दीजिये, तथा अजा गौ दान ।
मिटै पाप तनु दोष सब, कीजै नखत विधान ॥१०९॥

## ( अथ पूर्वभाद्रपद )

॥ चौपाई ॥

पूर्व भाद्र पद रोगी लोइ । अङ्ग अङ्ग प्रति पीड़ा होइ ॥
छर्दि त्रिदोष होइ अधिकार । ऐसो उपजै रोग अपार ॥
प्रथम शून्य दुसरे नव जान । तिसरे इकइस दिवस बखान ॥
चौथे छब्बिश दिन अनुमान । चार चरण को कह्यो प्रमान ॥

॥ दोहा ॥

देव तासु है अजचरण पञ्च सहस करु जाप ।
खीर खांड़ घृत होम कर, स्वेत दान मिट ताप ॥११०॥

## ( अथ उत्तराभाद्रपद )

॥ चौपाई ॥

उत्रभाद्रपद रोगी होइ । कमल वाय जानौ नर सोइ ॥
अतीसार ज्वर होवे ताको । वायु व्यथा उपजै बहु वाको ॥
अब ताकी मरयाद बताऊं । दिन दश पहिले चरण सुनाऊं ॥
दुसरे पन्द्रह दिवस बखानौ । तिसरे नव वासर परिमानौ ॥
चौथे पुनि पन्द्रह दिन जान । ताकी विधि करि दीजै दान ॥
अहिरबुघ्न है ताको देवा । ताकी पूजन करिये सेवा ॥
एक हजार जाप करु ताको । तिलघृत जवा होमियो वाको ॥

॥ दोहा ॥

रुक्म दान तिल दान करु, कृष्ण बसन पुनि दान ।
मिटै पाप पूरब कियो, ऐसो करै विधान ॥१११॥

## ( अथ रेवती )

॥ चौपाई ॥

रेवति नखत रोग जब होइ । वात पित्त उपजै तब लोइ ॥
चित्त भ्रम उपजे डर शूल । अति ही विकल बचन कह भूल ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमे अष्टादश दिवस, दुसरे दश दिन जान।
तिसरे दिन बत्तीश हैं, चौथे वीश बखान ॥११२॥

॥ चौपाई ॥

पूषा देव तासु को जानौ। ताकी पूजा विधि शुभ ठानौ॥
एक हजार तासु कर जाप। रुक्म बृषभ दै मेटौ ताप॥

( इति सप्त विंशति नक्षत्रानुसार रोग पीड़ा विवरणम् )

## ( अथ लग्न विवरण ) तत्र मेषलग्न।

॥ चौपाई ॥

मेष लगन जो उपजै रोग। महा अधिक ज्वर पीड़ा योग॥
रक्त पित्त ज्वर राते नैन। शूल उदर तन नेक न चैन॥
ताको देव भूमि सुत जान। ताकी प्रतिमा करौ विधान॥
चन्दन रक्त वसन लै लाल। पूजौ प्रतिमा प्रातहिं काल॥
तासु मन्त्र की करिये जाप। एक हजार मिटै तन ताप॥
रातौ बृषभ तासु को दान। रक्त वस्त्र युत करौ विधान॥

## ( अथ बृष लग्न )

॥ चौपाई ॥

बृषभ लगन जब पीड़ा होइ। शीत अंग ज्वर मानव लोइ॥
मन्दागिन मुख शोष अपार। सपनौ देखत बारम्बार॥
देह पिराय शूल अति होइ। नीची दृष्टि देखिजत लोइ॥
शुक्र देषता ताको जानौ। ताकी प्रतिमा सुन्दर ठानौ॥

पूजिय चन्दन श्वेत सुगन्ध । श्वेत वस्त्र अरपौ तजि धन्ध ॥
श्वेत पुहुप लै अक्षत श्वेत । मंत्र जपौ रोगी सुख हेत ॥
जाप पंच शत कीजिय लोय । दुरगा पाठ दूसरो होय ॥
वृषभ लगन की विधि या कही । उदन खांड़ घृत होमै सही ॥

## ( अथ मिथुन लग्न )

॥ चौपाई ॥

मिथुन लगन जब पीड़ा होय । अति शरीर ज्वर जानौ लोय ॥
अंग भंग तनु स्वेद अपार ।शीतल चरण हाथ अधिकार ॥
अन्न अरुचि पीड़ा मुख शोष । अतिहीं चटपट उपजै दोष ॥

॥ दोहा ॥

दुस्स्वभाव जानौ मिथुन, ताको स्वामी बुद्ध ।
कुंकुम मालति के पुहुप, पूजौ त्यागि विरुद्ध ॥११३॥
कंचन प्रतिमा बुद्ध की, करि पूजौ मति धीर ।
यह विधान को कीजिये, हरै सकल तनु पीर ॥११४॥

॥ चौपाई ॥

एक हजार कीजिये जाप । रोग छूटि मिटिहै तनु ताप ॥
कंचन लोह दीजियतु दान । मिथुन लगन को कहो विधान ॥

## ( अथ कर्क लग्न )

॥ चौपाई ॥

कर्क लग्न जो पीड़ा होय । अंग भंग चित चेत न जोय ॥
राते नैन तृषा अति होय । जक्का बँधै न भावै कोय ॥

॥ दोहा ॥

अति प्रस्वेद तनु दाह उर, व्याकुलता अति पोर ॥
अंग कम्प अतिसार बहु, पलक न लागत धीर ॥११५॥
कर्कपती है चन्द्रमा, प्रतिमा रुक्म बनाउ ।
पूजौ मालति पुहुप सों श्वेत वसन पहिराउ ॥११६॥
चन्द्र देव के मन्त्र की, जाप पञ्च शत कीज ।
रूप शङ्ख को दान दै, कर्क दोष हर लीज ॥११७॥

## अथ सिंह

॥ चौपाई ॥

सिंह लग्न जो पीड़ा होय । पित्त केर ज्वर जानौ लोय ॥
दाह होय लागै अति प्यास । दारुण वमन ऊब की त्रास ॥

॥ दोहा ॥

सूरज स्वामी सिंह को, प्रतिमा ताम्र बनाउ ।
रक्त पुहुप बन्धूक के, राते वसन उढ़ाउ ॥११८॥

॥ चौपाई ॥

भानु मन्त्र की करिये जाप । द्वै हजार मिटिहै तन ताप ॥
करु दशांश को होम विधान । राती वस्तु दान की ठान ॥

॥ दोहा ॥

दान दीजिये धेनु को, वसन सहित द्विज राज ।
मिटै दोष सब सिंह को, होय सदा शुभ काज ॥११९॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## ( अथ कन्या )

॥ चौपाई ॥

कन्या लगन पीर जब होइ । ब्याधि असक्त होइ नर सोइ ॥
धातु कोप अति परै अपार । ज्वर सूक्षम कम्पन अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

द्विस्वभाव कन्या लगन, स्वामी बुध महराज ।
कंचन की प्रतिमा करौ, साजो पेरी साज ॥१२०॥
पियाबांस को पुहुप लै, पीत वसन पहिराय ।
कुंकुम रोचन पूजिये, अरसी पुहुप चढ़ाय ॥१२१॥
चंद सुवन के मंत्र को, द्वै हजार करु जाप ।
कंचन केरो दान दै, मेटहु तन की ताप ॥१२२॥

## ( अथ तुला )

॥ चौपाई ॥

तुला लगन पीरा जब होइ । श्वास कास उपजै रे लोइ ॥
अधिक प्यास तन नेक न चैन । पोर पसुरियन रति नैन ॥

॥ दोहा ॥

तन पीरा उद्वेग पुनि, ताप महातन जोर ।
तुला लगन पति शुक्र है, रूप मूर्ति दुख मोर ॥१२३॥
स्वेत वस्तु से अर्चिये, एक सहेस कर जाप ।
स्वेत वसन कह दीजिये, मिटै तुला को पाप ॥१२४॥

## ( अथ वृश्चिक लग्न )

॥ चौपाई ॥

वृश्चिक लगन पीर जब होइ । विविध रोग शिर रोग विगोइ ॥
रक्तपित्त होवै अधिकार । महादोष दुख होइ अपार ॥

॥ दोहा ॥

अति प्रसेद तनु भंगता, उर उकलेद अपार ।
चित्त भंग विपरीत सब, बुद्धि विवेक बिचार ॥१२५॥
वृश्चिक पति है भूमि सुत, प्रतिमा ताम्र बनाउ ।
रक्त पुहुप सो पूजिये, राते बसन उढ़ाउ ॥१२६॥
तासु मंत्र अति नेम से, एक सहस्र करु जाप ।
लाल बल को दान दै, मिटै पूर्व को पाप ॥१२७॥

## ( अथ धन लग्न )

॥ चौपाई ॥

धन में उतपत पीड़ा होइ । शीघ्र व्यथा ज्वर जानौ सोइ ॥
श्वास प्रमेह धातु अति परै । कर्णमूल पीड़ा बहु करै ॥

॥ दोहा ॥

अङ्ग अङ्ग पीरा उठै, अन्न केर रुचि जाय ।
ताके पति गुरु की करौ, प्रतिमा हेम बनाय ॥१२८॥
चम्पक पुहुप चढ़ाइये, पांच सहस्र करि जाप ।
कनक पीत अम्बर दिये, मिटै व्यथा तन ताप ॥१२९॥

## ( अथ मकर लगन )

॥ चौपाई ॥

मकर लग्न पीड़ा जब होइ। वाय पित्त कहँ जानौ लोइ ॥
तृषा दाह अतिसार अपार। नेत्र पलक नहिं मिलै विचार ॥
हिचकी उदर व्याधि अधमान। दिना तीन पुनि रहै प्रमान ॥
मकर लग्न कौ स्वामी शनी। लोहे की प्रतिमा शुभ बनी ॥
नील कमल पूजा त्यहि करौ। कृष्ण वरन ओढ़न को धरौ ॥

॥ दोहा ॥

देव शनीचर मन्त्र को, एक सहस कर जाप।
कृष्ण गाय को दान दै, हरौ लगन को पाप ॥१३०॥

## ( अथ कुम्भलग्न )

॥ चौपाई ॥

कुम्भ लगन जब पीड़ा होइ। शिर अरु बात कोप कर दोइ ॥
प्रेत लगो सो चौंधो रहै। मुख सूखै छाती बहु दहै ॥

॥ दोहा ॥

कफ लेसो बिच आंत में, रात दिवस ज्वर जोर।
कंपमान तनु रुचि नहीं, अङ्ग पीर अति घोर ॥१३१॥
कुम्भ लगन पति शनि गुनौ, करु लोहे की मूर्ति।
श्याम वस्त्र से पूजिये, जाप पंच शत पूर्ति ॥१३२॥
पूजि शनीचर देव को, दीजिय अजया दान।
कुम्भ लगन की विधि कही ज्योतिष शास्त्र प्रमान ॥१३३॥

## [ अथ मीन लग्न ]

॥ चौपाई ॥

मीन लगन पीड़ा जब होइ । वात ताप तब जानहु लोइ ॥
गात्र भंग अति आवै स्वेद । पसुरिन पीर शूल शिर खेद ॥

॥ दोहा ॥

उर पीड़ा आसक्त पुनि, मूत्र-कृच्छ आचेत ।
अति विकल्प मति भ्रष्ट है, अश्रुपात कर देत ॥१३४॥
कंचन प्रतिमा जीव की, पीत वसन पहिराय ।
पीत वस्तु से पूजिये, पीरे पुहुप चढ़ाय ॥१३५॥
द्वै हजार जप मंत्र को, दशौं अन्श करि होम ।
कनक धेनु को दान दै, होइ न बांको रोम ॥१३६॥
यह विधान को कीजिये, लग्न शांति ह्वै जाय ।
मेष आदि द्वादश कह्यो, जानहु पंडित राय ॥१३७॥

## [ अथ ज्योतिष मतानुकूल कालज्ञान ]

+ अश्विनी भरणी कृत्तिका पाये मेष +

॥ दोहा ॥

चार चरन अश्वनि भरनि, कृतिकन को पद शष ।
राशि नखत नव चरन को, कह्यो आदि दै मेष ॥१३८॥
भौम क्षेत्र यह जानबी नव पद के फल जेति ।
ज्योतिष को मत देखि कै, भाखत फल सब तेति ॥१३९॥

॥ चौपाई ॥

प्रथमे राज होइ सनमान। दुसरे होइ धनाढ्य सुजान ॥
तिसरे विघ्न विविध विध होइ। चौथे गुरुपद सेवक सोइ ॥
पचयें चोर छठे व्यभिचारी। सतयें होइ साधु व्रत धारी ॥
अष्ट निर्धनी नव शुभ लच्छण। ये नव चरण जान फल तत छण ॥
अब ताकी सब अल्प बताऊँ। मास बरस के नियम सुनाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

एक मास नव मास पुनि बरस एक पुनि सात।
वरस आठ पंद्रह सुनहु, उनइस बाइस घात ॥१४०॥
सत्ताइस छत्तिस सुनहु, बरस पचासक जान।
बासठ और पचत्तरै अल्पैं कहीं बखान ॥१४१॥

॥ चौपाई ॥

अब याकी सुनु मृत्यु बताऊँ। सकल भेद कहि हेतु लखाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

अङ्ग रोग के दोष से, अगिन लोह डस व्याल।
मरन भेद नर के कहे, जिनते है निज काल ॥१४२॥
बरस ससत्तर जब लगै, आयु प्रमान बताव।
पंद्रह दिन के गत भये, षोड़स घटिका जाव ॥१४३॥
अगहन लागत चौथ को, मंगल भरनी होय।
मध्य दिवस में मृत्यु है, मेष राशि को जोय ॥१४४॥

## [ अथ वृष राशि ]

+ कृतिकानां त्रयो पादाः रोहिणी मृगशिरोऽर्द्धं वृष +

॥ दोहा ॥

कृत्तिकन के लै तीन पद रोहिणि चार प्रमान।
मृगशिर के पद दोइ लौ तब वृष होइ सुजान ॥१४५॥
शुक्र क्षेत्र यह जानबी, नव पद जिते सभाउ।
लघु दीरघ लक्षण कहत, जानहु पंडित राउ ॥१४६॥

॥ चौपाई ॥

नव पद के फल देउँ बताय। उत्तम मध्यम सब सुनाय॥

॥ दोहा ॥

प्रथम राज सनमान पुनि, द्वितिय होय बड़ भाग।
तिसरे यश चौथे मरन, पंचम त्रिय रति राग ॥१४७॥
छठय एकै मास में, करनमूल त्यहि देख।
सतयें महिना दूसरे मरिहै मृत्यु विशेष ॥१४८॥
अठयें होय धनाढ्य बहु, नव कुलतारक होय।
वृषभराशि के नव चरण, प्रकट किये फल होय ॥१४९॥
अब याकी निज मृत्यु के, चिन्ह बताऊँ अंग।
निशि दिन घेरे फिरत है, काल सिकारी संग ॥१५०॥
छठें सातयें मास पुनि बरस तीन पुनि चार।
छठौं बरस छत्तीस पुनि, चौवालिस दुख भार ॥१५१॥
पैतालीस कलेश पुनि, छइयालिस महँ घात।
बावन अरु सत्तावनै, पुनि बासठ में जात ॥१५२॥

अग्नि सर्प सुर दोष ते अंग रोग लग अत्र।
इतनी अल्पन जो बचै जियै बरस सौ मित्र ॥१५३॥
अंत बरस को दिन छठौ ता दिन आयु प्रमाण।
अगहन के सत पक्ष में तिथि नवमी पुनि जान ॥१५४॥
नखत रोहिणी वार भृगु, अर्ध रात बिच काल।
वृषभ राषि लक्षण कहे ज्योतिष फल ततकाल ॥१५५॥

## [ अथ मिथुन राशि ]

+ मृगशिरोऽर्द्धं आर्द्रा पुनर्वसु पादत्रयं मिथुन +

॥ दोहा ॥

मृगशिर के दुइ चरण लै, आर्द्रा के पद चार।
नखत पुनर्वसु तीन पद, ताको मिथुन विचार ॥१५६॥

मिथुन राशि बुध क्षेत्र है भिन्न भिन्न लै अंश।
अब इनके फल कहत हौ मेटौ जिय को संश ॥१५७॥

प्रथमे शुभ लक्षण सबै, दूसरे अति धनवन्त।
व्यभिचारी तिसरे अधिक, चौथे निर धनवन्त ॥१५८॥
महा आपदा पांचवें, षष्ठ तुरन्त मरन्त।
लोक बड़ाई सातवें अष्टम अति बलवन्त ॥१५९॥
देव दोष नव में महा ग्रह गत कही बखान।
भिन्न भिन्न नव चरन फल, भाख्यौ ज्योतिष जान ॥१६०॥
घात मास षट बरस इक, युग्म बरस पुनि पांच।
सात बरस दश अष्ट दश, तेइस सतइस बांच ॥१६१॥
तिरपन छप्पन साठ पुनि, अल्पैं कही बखान।
इनते जीवै अधिक जो वर्ष छयासी जान ॥१६२॥

मास पंच पुनि नौ दिना, प्रान तजत अस्थान ।
अब याकी निज मृत्यु को समयो करत बखान ॥१६३॥
पूस अंधेरो पाख में, तिथि आठैं बुधवार ।
नखत आर्द्रा कोप कफ, होवै प्रान प्रहार ॥१६४॥

## [ अथ कर्क राशि ]

+ पुनर्वसु पादमेकं पुष्यश्लेषान्ते कर्क +

॥ दोहा ॥

नषत पुनर्वसु एक पद, पुष्य चार पद जान ।
असलेषा पुनि चार पद, कर्क राशि परिमान ॥१६५॥
कर्क राशि पति चन्द्र है, नव पद करहुं विचार ।
उत्तम मध्यम तासु फल, सुखदुखकहत अपार ॥१६६॥
प्रथम होइ धनवन्त पुनि, द्वितिय होय महिपाल ।
तिसरे होय बिवेक निधि, चौथे वचन रसाल ॥१६७॥
पंचम होय धनाढ्यता, सभा चतुरता होय ।
देव पूज्य गुरु मान्यता, अन्त सुखी नर जोय ॥१६८॥
छठयें परतिय लालची, सप्त सुलच्छण होय ।
देव पुजारी आठयें, नव कुल तारक दोय ॥१६९॥
दिन एकादश घात है, मास नवौं पुनि जान ।
मास गेरहें वर्ष नव, वर्ष एकादश मान ॥१७०॥
वर्ष बीश चौबीश पुनि, वर्ष सताइश जान ।
तेतिस चवलिस बावनो इकसठ वर्ष प्रमान ॥१७१॥

॥ चौपाई ॥

मृत्यु अंग यहि केर बताऊं । जाते होत काल तियराऊं ॥

। दोहा ॥

राज दोष अरु अग्नि महं, प्रेत शंक तनु रोग ।
देव दोष के कोपते, होय मृत्यु को योग ॥१७२॥
इतनी अल्पनि जो बचै, जियै वर्ष सौ जानि ।
मास पंच पुनि माघ महं, कृष्ण पक्ष तनु हानि ॥१७३॥
पुष्य नषत तिथि चौथ को, वार सोम जो होय ।
संध्या बेरा मरन है, चहै नारि नर जोय ॥१७४॥

## [ अथ सिंह राशि ]

+ मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तरा पाए सिंह +

॥ दोहा ॥

मघापूरबा आठ पद, उत्रा पाये एक ।
सिंहराशि ताके कहत, नव पद केर विवेक ॥१७५॥
सिंह राशि रवि स्वामि प्रिय, जानहु पंडितराय ।
होम दान जप ध्यान ते, सबै दोष मिट जाय ॥१७६॥
प्रथम राज सन्मान अति, द्वितिय होय धन भोग ।
तृतिये तीरथ वास पुनि, चौथे बहु सुत योग ॥१७७॥
पक्ष हीन पँचयें रहैं, छठयें विद्यावन्त ।
सप्तम शुभ लक्षण महा, मात पिता तारन्त ॥१७८॥
अष्टम धन सामर्थ अति, पुनि बड़ भागी होय ।
नवमे निर्धनता रहै, कछुलंपट नर सोय ॥१७९॥

॥ चौपाई ॥

आयु अल्प के चिन्ह बताऊँ । मास बरस की घात सुनाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

घात पांचयें बरस पुनि, छठे और दश जान।
तेरह पन्द्रह बरस में, पुनि पच्चीस बखान ॥१८०॥
एकतीस सैंतालिसौं, इन अल्पन बचि जाय।
तौ जीवहि सौ बरस लौं, जो प्रभु कृपा कराय ॥१८१॥
चैत्रमास सितपक्ष जब तिथि पूनौ पर आन।
नषत पुनर्वसु वार रवि, प्रथम पहर जिव हान ॥१८२॥

## [ अथ कन्याराशि ]

+उत्तरायास्त्रयः पादा हस्त चित्रार्द्धं कन्या+

॥ दोहा ॥

उत्तरानि के तीनि पद, हस्त नषत पद चार।
चित्रन के पुनि दोइ पद, कन्या राशि विचार ॥१८३॥
बुद्ध क्षेत्र त्यहि जानबी, फल नव चरन विचार।
भिन्न २ लक्षण कहौं, ज्योतिष के अनुसार ॥१८४॥
प्रथम होइ अति निर्धनी, द्वितिय पुत्र की हान।
तिसरे पतनी ना मिलै, चौथे बहु धन जान ॥१८५॥
पंचम भक्ति सुधार मति, छठयें मति रण धीर।
सप्तम विद्यावन्त अति, अष्टम गुरु गंभीर ॥१८६॥
नव में होइ महा मुनी, नव पद कहे सुजान।
घात मास पुनि बरस की, सोऊ कहत बखान ॥१८७॥
बरस त्रयोदश पन्द्रहैं, सत्रह पुनि है घात।
पुनि दश अष्ट कलेश है, छब्बिस पीडित गात ॥१८८॥
इकतिस पुनि इकतालिसौं घात इक्यावन जान।
पुनि संतावन वरस में, अति कलेश दुख खान ॥१८९॥

अङ्गरोग परमेह पुनि, मित्र हतन कर तासु।
देव दोष के कोप करि नर त्रिय होय बिनासु ॥१६०॥
एती अलपन जो बचै, सप्त नवति की वर्ष।
लगत मृत्यु आवै निकट, यम को उपजत हर्ष ॥१६१॥
चैत्र मास सित पक्ष में, हस्त नषत बुधवार।
तिथि सातैं को मरन है, पंडित कहत विचार ॥१६२॥

## [ अथ तुला राशि ]

+ चित्रार्द्धं स्वाति विशाखापाद त्रयं तुला +

॥ दोहा ॥

चित्रनि के लै दोइ पद, स्वाति नषत पद चार।
तीन विशाखा के चरण, राशि तुला उचार ॥१९३॥
शुक्र क्षेत्र यह जानबी, नव पद कहत उचार।
उत्तम मध्यम तासु फल, विधिसों लिखत विचार ॥१९४॥
प्रथम चरन भोगी पुरुष, बुद्धि अल्प अति होय।
दुसरे पद धनवन्त बहु, तिसरे निरधन जोय ॥१९५॥
चौथे लम्पट जानिये, हीन पुरुष अति होय।
भोगी पंचम षष्ट महँ, परदारा रत सोय ॥१९६॥
है कुल तारक सात्यें, अष्टम नृपं सनमान।
नवमे शुभ लक्षण महा, जानहु सकल सुजान ॥१९७॥

॥ चौपाई ॥

अब तोकी सब अल्प बातऊँ। मास बरस की घात सुनाऊँ

॥ दोहा ॥

घात बरस दो चार छह, पुनि कलेश बड़ सात ।
नवौं बरस पुनि बारहौं, इक्यावन महँ घात ॥१९८॥
एती अल्पैं जो बचै, जियै बरस सौ जान ।
मृत्यु चिन्ह ये जानिये, जाते तनु की हान ॥१९९॥
अग्नि सर्प जल मँह मरै, अंग रोग सुर दुक्ख ।
ग्रह बाधा पुनि कष्ट अति, होइ न तन को सुक्ख ॥२००॥
काल जान बैशाख में, उतरत केरे पत्त ।
स्वाति नखत तिथि द्वादसी, गुरु वासर कहँ भत्त ॥२०१॥

## ( अथ वृश्चिक राशि )

+ विशाखा पाद मेकं अनुराधा ज्येष्ठान्ते वृश्चिक +

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

॥ दोहा ॥

एक विशाखा को चरण, अनुराधा पद चार ।
पुनि ज्येष्ठा के चार पद वृश्चिक राशि विचार ॥२०२॥
भौम क्षेत्र यह जानबो, नव पद फलहिं प्रकासु ।
उत्तम मध्यम सब कहौं, लक्षण नर त्रिय जासु ॥२०३॥
प्रथम होइ धनवन्त पुनि, दुसरे अति यशवन्त ।
तिसरे निर्धनता लहै, चौथे अगति कुमन्त ॥२०४॥
पंचम कुल मंडन महा, छठयें कलही व्यर्थ ।
सप्तम विद्यावन्त अति, अष्टम नृप सामर्थ ॥२०५॥
नवमें बंधव को हनै, नव पद कहे बखान ।
अब याकी अल्पैं कहौं, घात योग परिमान ॥२०६॥
पंच बरस पुनि छह सुनहु, सात बरस दश जान ।

तेरह सोरह बरस पुनि, उनईसौं तनु हान ॥२०७॥
छब्बिस उनतिस बरस पुनि, पैंतिस अरु छत्तीस।
उनतालिस चौवन बरस अट्ठावन तनु खीस ॥२०८॥
पुनि तिरसठ के साल मह, घात महा दुख दान।
आयु पछत्तर बरस की पूर प्रमान बखान ॥२०९॥
जेठ मास सित पक्ष में, तिथि द्वादशि महिपाल।
पुनि अनुराधा नषत में, अर्धरात त्यहि काल ॥२१०॥
अग्नि सर्प डस काल ज्वर, ग्रह बाधा संग्राम।
काल चिन्ह घेरे फिरत, निशि दिन आठौ याम ॥२११॥

## ( अथ धनराशि )

+मूलं च पूर्वषाढ उत्तरा पाये धन+

॥ दोहा ॥

मूलहि के लै चार पद, पूर्वषाढ़ पद चार।
उत्तर को लै एक पद तब धन कहौ बिचार ॥२१२॥
नक्षत्र हैं राशि धन, नव पद के फल जान।
भिन्न भिन्न लक्षण कहौं सुनिये सुमति सुजान ॥२१३॥
प्रथम घात कर आपको, द्वितिय होइ दातार।
तिसरे माता घात कर, चौथे धन अधिकार ॥२१४॥
पंचम सुयश प्रसिद्ध नर, छठयें गुरु मानीक।
सप्तम व्याभिचारी महा परदारा रत नीक ॥२१५॥
अष्टम करै उपाधि बहु, नवमें ह्वै कुल तार।
नव पद लक्षण ये कहे, ज्योतिष के अनुसार ॥२१६॥
अब याकी जे अल्प हैं, दैहौं सबै बताय।
बरस मास जे घात हैं, जानहु पंडितराय ॥२१७॥

पंच बरस पुनि षट बरस, सप्तम बरस कलेश।
घात बरस पुनि ग्यारहों, चौदह बरस मरेस ॥२१८॥
तथा बरस पुनि सोरही, घात बरस चौबीस।
पुनि कलेश उनतीस में बहुरि बरस छत्तीस ॥२१९॥
घात बरस अठतीस में, कष्ट पंच चालीस।
तथा बर्ष बावन कहत, पुनि सत्तावन दीस ॥२२०॥
घात बरस हम सब कही, जानहु पंडितराइ।
अब ताकी निज मृत्यु को, कहत चिह्न समुझाइ ॥२२१॥
चोर पंथ अहि सिंह पुनि, राज दुःख बहु देत।
देव दोष अरु ग्रहन ते, हरे प्रान यम लेत ॥२२२॥
इतनी अलपनि जो बचै, जियै बरस सौ पाँच।
कृष्णपक्ष आषाढ़ में, तिथि द्वितिया को याँच ॥२२३॥
नषत उत्तराषाढ़ में, प्रथम पहर गुरुवार।
मूल रोग ताको मरन, रचि राख्यो करतार ॥२२४॥

## ( अथ मकर राशि )

+ उत्तरायास्त्रयः पादः श्रवण धनिष्ठार्धं मकर +

॥ दोहा ॥

उत्रषाढ़ के तीन पद, श्रवण चार पद जान।
चरण धनिष्ठा के युगल, मकर राशि को मान ॥२२५॥
शन क्षेत्र यहि जानबो, नव पद करौ विचार।
भिन्न भिन्न लक्षण कहत, उत्तम मध्यम सार ॥२२६॥
अंग हीन प्रथमे चरण दुसरे सुख गुरु मन्य।
तिसरे पर दारा रमन, चौथे शुभ लक्षन्य ॥२२७॥
पंचम विद्यावन्त पुनि, छठयें उपजै व्याध।

सप्तम होइ महीपती अष्ट उभय कुल साध ॥२२८॥
नवमे पद दानी महा नव पद कहे बखान।
मास बरस की घात अब, सुनहु ज्योतिषी ज्ञान ॥२२९॥
घात बरस तिसरे कही, छुठईं बरस कलेश।
घात बरस पुनि सातईं नव पुनि दुःख प्रवेश ॥२३०॥
पुनि कलेश दश बरस मँह, घात तेरहौं जान।
घात सोरहौं बरस मँह, पुनि बीसौं अनुमान ॥२३१॥
घात बरस तैंतीस है, अति कलेश सैंतीस।
बरस बयालिस घात पुनि, तथा सप्तचालीस ॥२३२॥
घात इक्यावन बरस में सर्प अग्नि ज्वर काल।
जलते बूड़त जो बचै, जियै बरस शत लाल ॥२३३॥

॥ चौपाई ॥

अब ताकी मैं मृत्यु बताऊँ। मास पाख तिथि बार जनाऊँ
सावन शुक्ल पक्ष चौदश तिथि। श्रवण नखत शनिवार सत्य कथि
दुपहर प्राण देह को छांड़त। प्रानी यम सो युद्धहि माड़त

## ( अथ कुम्भराशि )

+ धनिष्ठार्धं शतभिषा पूर्वभाद्रपद पादत्रयंकुम्भ +

॥ दोहा ॥

नषत धनिष्ठा दुइ चरण, शतभिष के पद चार।
पूर्वभाद्र पद तीन लै, कुम्भ राशि उच्चार ॥२३४॥
शनी क्षेत्र याको कहत, पंडित ज्योतिष ज्ञान।
भिन्न भिन्न नव चरण को, फल भाखत मतिमान ॥२३५॥
प्रथम होइ यशवन्त अति, द्वितिय होय धनवन्त।

तृतिये भाषा हीन अति अगुण अमान वदंत ॥२३६॥
चौथे बहु सतान पुनि पचम व्यसनी राज।
छठयें मरन तुरंत है सप्त निर्धनी साज ॥२३७॥
समदर्शी अठयें रहै, नव में अति आचार।
यह ग्रह गति लक्षण सबै, पंडित करहु बिचार ॥२३८॥
नव पद लक्षण नषत के जानो सबै सुभाय।
अब याको जे अल्प हैं तिनको देउँ बताय ॥२३९॥
तीन दिना पुनि व स त्रय, अति कलेश पुनि चार।
तथा बरस दश घात है, पुनि तेरहौं बिचार ॥२४०॥
घात अठारह बरस में, अल्प बरस छत्तीस।
घात बरस इकसठ कही, जो बगसैं जगदीश ॥२४१॥
अग्नि बरै ज्वर सन्न ते, सर्प लोह भय संड।
देव दोष जल शंखिनी काल अत्र तनु खंड ॥२४२॥
जियै बरस अस्सो लगे, जो अल्पनि बचि जाय।
अब याकी निज मृत्यु को समयो देउँ बताय ॥२४३॥
भादौं कृष्णा पंचमी नषत पुनर्वसु जान।
वार शनीचर जानिये, अर्धरात तज प्रान ॥२४४॥

## ( अथ मीन राशि )

+ पूर्वभाद्रपद पाद मेकं उत्तराभाद्रपद रेवत्यंतं मीन +

॥ दोहा ॥

पूर्व भाद्र पद एक पद उत्र भाद्रपद चार।
रेवति के पुनि चार पद, मीन राशि उच्चार ॥२४५॥
गुरु क्षेत्र यहि जानवी, नव पद कहत वखान।
उत्तम मध्यम तासु फल, भिन्न भिन्न परिमान ॥२४६॥

प्रथम राज सनमान है, दुसरे पुनि धनवान।
तिसरे विद्यावान अति चौथे गौरव जान ॥२४७॥

॥ चौपाई ॥

पंचम चोर छठें व्यभिचारी। हीन बात बोलै कुबिचारी॥
सप्तम होइ गुणी यशवन्त। अष्टम जानौ निर्धनवन्त॥

॥ दोहा ॥

नवमें शुभ लक्षण महा, करै पुण्य बहु धर्म।
नव पद फल मैं ये कहे, सुनि मेटौ चित भर्म ॥२४८॥
जातक ज्योतिष ग्रंथ ते अल्प वर्ष कहुँ यांच।
जातक कालज्ञान को पंडित लीजौ बांच ॥२४९॥
घात बरस उनईस में, तथा वर्ष इकीस।
बरस सताइस दुःख है, घात वर्ष तैंतीस ॥२५०॥
जियै वर्ष इंक्यानबे, जो अल्पनि बचि जाय।
अब याकी नि मृत्यु को, भेद कहौं समुझाय ॥२५१॥
माघ मास सित पक्ष पुनि, तिथि द्वितिया गुरु वार।
उत्र भाद्र पद नषत में, प्रथम पहर यम मार ॥२५२॥

## ( इति मीन राशि )

॥ दोहा ॥

करि भाषा उपकार हित, विरच्यौ काल ज्ञान।
स्वमति कल्पना नहिं कछू, ग्रंथोद्धृत यह जान ॥२५३॥

॥ इति ज्योतिषीयकालज्ञानम् ॥

—✻—

( अथायुर्वेदीय कालज्ञानं निरूप्यते )

॥ दोहा ॥

नर गतायु भेषज किये अयश वैद्य को होइ ।
ताते चिन्ह गतायु के, भाखहुं शास्त्र विलोइ ॥२५४॥
जाको शील स्वभाव तनु, होइ और को और ।
ताको निश्चय जानिये, यम के पुर में ठौर ॥२५५॥
सहसा शब्द अनेक विधि, सुनै अनेकन भांत ।
अहित प्रीति हित लखिअरै, सोई यमपुर जात ॥२५६॥
तनु शीतल जाको अधिक, रहै भीतरी दाह ।
शीत उष्ण समुझै नहीं, ताकी यम को चाह ॥२५७॥
चन्दन आदि सुगन्ध सों, लिप्त शुद्ध भी देह ।
बैठै नीली मक्षिका, सो नर यम के गेह ॥२५८॥
जासु निरुज तनुते उठै सहसा आइ सुगन्ध ।
एक साल में अवसि सो, परत मृत्यु के धंध ॥२५९॥
आतु जं भरस स्वादु को गुनै विपर्य्यय रीति ।
अहित पदारथ हित करैं, हितहु करैं विपरीति ॥२६०॥
भोज्य पदारथ अन्न के, तिनको मिलै न स्वाद ।
एक मास में करहिं सो धर्म राज सवाद ॥२६१॥
[1]ल्यहिं सुगन्ध दुर्गंध को, उलटा सूझहि ज्ञान ।
अथवा गंध न आवई, ताहि गतायू जान ॥२६२॥
[2]शीत उष्ण ऋतु भेद अरु, वायु दिशा गुण कर्म ।
गुनै विपर्य्यय रीति त्यहि, अवशि मरण को धर्म ॥२६३॥

१ इस लक्षण से रोगी सात रात में निरोगी एक मास में मरता है ।
२ यह एक मास में मरे

जलत आग सम रवि शशी, जो देखै निज नैन।
अथवा रवि शीतल लगै, तप्त लगै हिमऐन[१] ॥२६४॥
बिनु बादर जो इन्द्र धनु बिजुली चमकत देख।
एक मास के भीतरै, अवशि मृत्यु त्यहि लेख ॥२६५॥
नील पीत कारी अरुण, जो देखै निज छांह।
परन चहत यम हाथ में, निश्चय ताकी बांह ॥२६६॥
लाज लच्छमी क्रान्ति मति, अकसमात ए जांय।
निश्चय यम के हांथ में, ताके प्राण बिकांय ॥२६७॥
नीच ओठ नीचे गिरै ऊरध ऊपर जाय।
अथवा जामुन सम अधर, ताहि लेइ यमराय ॥२६८॥
जासु दांत कारे परैं, अथवा होवैं लाल।
श्वेत होइँ खंजन सदृश ताको जानहु काल ॥२६९॥
जासु जीभ कफ सो लिहसी, सूखी स्याह कठोर।
सो नर थोरे काल में, जग को नातो टोर ॥२७०॥
जासु नाक टेढ़ो[२] फटी, सूखी भीतर बैठ।
शब्द युक्त श्वासा निकस, सो तज तनु की ऐंठ ॥२७१॥
अरुण आंख चेष्टा रहित, ठाढ़ पलक भयकार।
ऊरध दृष्टी जल बहै ताकी मीच पुकार ॥२७२॥
जासु केश बेणी सदृश, सहसा ग्रंथित होइ।
सिकुर भौंह नीचे गिरैं, चिपटी पलकैं जोइ ॥२७३॥
इन चिन्हन रोगी मरै, तीन दिवस के बीच।
आयु निरोगी पुरुष को छः महिना तक खींच ॥२७४॥
मुख थापित लीलै नहीं, थिरता लहै न माथ।
होठ लगै इक ओरही तुरत होइ यम साथ ॥२७५॥
निबल सबल कैसहु सबज, छिन २ सुछित देह।
धीर बैद्य ताको तजैं, जैहै यम के गेह ॥२७६॥
सोवै सदा उतान ही चरण विकलता फेंक।
अथवा पसरे ही रहैं, राम नाम त्यहि टेक ॥२७७॥

१ चन्द्रमा २ यह सात दिन में मरता है।

शीतल पग कर श्वास हो, पुनि पुनि टूटै श्वास।
राम नाम उपदेश कर बैद न जावे पास ॥२७८॥
नित सोवै नित जागही बोले मूर्छित होइ।
वृथा बैद औषध करै, जैहै यमपुर सोइ ॥२७९॥
पग सूझन ऊपर चलै, नर को हनै विशेष।
मुख सूझन नीचे चलै, नारी यमपुर देख ॥२८०॥
श्वेद दाह हिक्का श्वसन, ये चारों बलवान।
ताको मृत्यु विशेष है, कहा करैं भगवान ॥२८१॥
जीभ स्याह दाहिन नयन रहै मदो अति जासु।
श्वास देह दुरगन्ध अति, मृत्यु जानिये तासु ॥२८२॥
नयन भरे अँसुवान सों, भ्रमै तारका जासु।
पैर पसीजैं तासु की, दोघटका की श्वासु ॥२८३॥
मीन कींच घृत तेल पुनि वसा सदश तनु वास।
मधुर सुगंधित वमन कर, साल भरे की श्वास ॥२८४॥
कफ मल वीरज जासुको पानी में डुब जाय।
कहा करै ताको दवा यम के घर ठहराय ॥२८५॥
जो न लखै शशि श्यामता, ओदे में पग विम्ब।
ताको एक अधार है, राम नाम अवलम्ब ॥२८६॥
निज छाया मँह नहिं लखै निज शिर को नर जोइ।
या बहु छिद्रत छांह लख, यमपुर जावे सोइ ॥२८७॥
जो चमकीली वस्तु को, देखै इक की दोइ।
एक बर्ष के अन्तरै, यमपुर जावे सोइ ॥२८८॥
साने कैसी द्युति लखै, वृक्ष लता के बीच।
ताको निश्चय जानिये, ले चहत है मीच ॥२८९॥
अरुन्धती ध्रुव वष्णुपद[1] मातामंडल[2] जान।
आयु हीन नहि देखहीं, भाषत कालज्ञान ॥२९०॥
( आकाश में अरुन्धती आदि का ज्ञान न होने से शरीरही में कल्पना
जीभहिं कहत अरुन्धती, नाक अग्र ध्रुव मान।

१ श्रवण नक्षत्र के तीन तारा २ कृत्तिका के छः तारा

मातामंडल भौंह युग, हरिपद त्रिकुटी जान ॥२९१॥
तिरछी अँगुरो तीन जो, मुख भीतर न अमाय ।
सात रात में पुरुष सो, अवशि प्राण तजि जाय ॥२९२॥
कान छिद्र अँगुरीन ते दाबि सुनै नहिं नाद ।
ता प्राणी के आयु की आइ रही मरयाद ॥२९३॥

## ( अन्य रीति से अरिष्ट विचार )

॥ दोहा ॥

पुरुष नहाये ओदहीं, परखै अंग बिचार ।
ताके लक्षण कहत हौं, समर सार अनुसार ॥२९४॥
प्रथम कान सूखे लखै, जीवन द्वादश वर्ष ।
कंध सुखे सातक वरस, कर सूखे दश वर्ष ॥२९५॥
मुख सूखे एकै वरस, पसुरी सूखे तीन ।
उर सूखे दुइ वरस लौ, जीवन को कहि दीन ॥२९६॥
सकल अंग ओदे रहैं, छाती सर्व सुखन्त ।
छा महिना के बीच में, प्राणी अवशि मरन्त ॥२९७॥

## ( अरिष्ट होने पर अरिष्ट नाशक अवधि )

॥ दोहा ॥

निज माथे धरि हाथ को, लखै न पहुँचा छिन्न ।
छा महिना लगि तासु के प्राण होहिं नहिं भिन्न ॥२९८॥

## ( अथ छायापुरुषपरिज्ञानम् )

तंत्र शास्त्र मत से कहौं, छाया पुरुष विचार ।
यथा शंभु कैलाश में, गिरिजा प्रति उच्चार ॥२९९॥

जाके जाने दूर से होइ काल को ज्ञान ।
दृष्टि साधना प्रथम करु पुनि छाया अनुमान ॥३००॥
निर्जन थल एकान्त में, महि सम आड़ निवारु ।
प्रात समय रवि पीठ दै, अथवा चांदनि चारु ॥३०१॥
अति निर्मल आकाश में सम तनु करि दृग खींच ।
अपनी छाया भूमि लख, शीश श्रवण के नीच ॥३०२॥

## मंत्र–[ ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः ]

॥ दोहा ॥

आठ बरण के मंत्र को, प्रणव समेत उचार ।
शुद्ध चित्त मन रोंक जप अष्टोत्तर शतवार ॥३०३॥
एक अंग कँह देखिये निमिष एक दो चित्त ।
पुनि ऊरध को हेरिजै, गगन दृष्टि करि मित्त ॥३०४॥
देखहि मूरति पुरुष की अंग हीन नहिं कोइ ।
अति उज्वल असफटिक सी किये दरश शुभ होइ ॥३०५॥
संपूरन छाया लखत सदा सुक्ख परकासु ।
जो लगि छाया शीश तनु, मृत्यु निकट नहिं तासु ॥३०६॥
शीश हीन छाया लखै, होइ मृत्यु षट मासु ।
बांह हीन बन्धव मरै होइ व्याधि पुनि तासु ॥३०७॥
कान हीन छाया लखै, जीवहि बारह वर्ष ।
कन्ध हीन सातक बरस, हाथ हीन दश वर्ष ॥३०८॥
बिनु मुख जीवहि वर्ष इक, बिनु पसुरिन के तीन ।
बिना हृदय दुइ बरस लौ समर सार कहि दीन ॥३०९॥
हृदय बीच देखहि विवर, जीवहि महिना सात ।
द्वै शरीर के देखतहिं, तुरत देह तजि जात ॥३१०॥

कृष्ण वरण छाया लखै होइ हीन धन धाम ।
जानु हीन छाया लखै, मरै तासु को वाम ॥३११॥
मध्य छिद्र छाया लखै, शस्त्र घात तन होइ ।
धड़ से देखत अलग शिर, कलह मीच लह सोइ ॥३१२॥
श्याम वरण उदवेग पुनि, पीत वरण दुख जान ।
रक्त वरण भय भीत अति, लहै दुःख की खान ॥३१३॥
नील वरण छाया अशुभ, अलप मृत्यु कहं जान ।
नाना रँग छाया दुखद, स्वेत वरण सुख दान ॥३१४॥
छाया के लक्षण सुभग, होइ अंग नहिं भग ।
छाया हीन जु देखि है जैहै यम के संग ॥३१५॥
चरण हीन षट मास में, गुल्फ हीन इक साल ।
उदर हीन दो वष में ग्रास करत है काल ॥३१६॥
छाया पुरुष विचार यह ज्ञान लेहु मतिमन्त ।
याके लक्षण ज्ञान हित कछु दिन सेवहु सन्त ॥३१७॥
छै महिना अभ्यास से, लोक पूज्य नर होइ ।
युग्म वर्ष अभ्यास से, त्रिकालज्ञता जोइ ॥३१८॥
करै निरन्तर प्रति दिवस, जो साधन नर कोइ ।
ताको त्रिभुवन में कतहुँ, कछु दुर्लभनहिं होइ ॥३१९॥
गुरु शिक्षा अभ्यास बहु, तत्व बोध पुनि होइ ।
ताके करतल ज्ञान यह, और नजानो कोइ ॥३२०॥

( इति छायापुरुष परिज्ञानम् )

## ( अथ स्वरोदय मत से कालज्ञान )

॥ दोहा ॥

देह रूप यह नगर में, आतम को परकाश ।

ताको रक्षक जानिये पवन रूप जो श्वास ॥३२१॥
दश अंगुल तक होत है, शुद्ध वायु परवेश।
द्वादश अंगुल ते निकस पवन अशुद्ध हमेश ॥३२२॥
यह क्रमते विपरीत जो, पवन करै संचार।
तौ अरिष्ट लक्षण अशुभ योगी जन उच्चार ॥३२३।
भानु उदै दहिनौ चलै, अस्त समय स्वर वाम।
तौ अरिष्ट नहिं आवही. उलटे नाकिश काम ॥३२४॥
सदा दाहिंनौ स्वर चलै. चलै न कबहूं वाम।
एक पाख में जाइ है, सो नर यम के धाम ॥३२५॥
एक मास षट मास अरु एक पक्ष त्रय मास।
पँाच रात अथवा चलै, एकै स्वर तौ नास ॥३२६।

## अथ भानु शशि विम्ब परीक्षा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ दोहा ॥

रवि शशि छाया को लखौ, जल भरि भाजन माहिं।
ताको देखि विचार कर चिन्ह लखौ जे ताहि ॥३२७॥
पूरब दिसि देखहि विवर, मृत्यु होइ षट मास।
दक्खन में लखि छिद्र को. तीन मास में नास ॥३२८॥
पश्चिम दिशि लख छिद्र जो, द्वै महिना तनु आस।
पुनि उत्तर दिशि छिद्र लख. एक मास लौ साँस ॥३२९॥
रवि शशि देखत धूम्र रंग, दश दिन लगि तनु खेत।
चित्र वरण जो लख परै, एक मास लगि जेत ॥३३०॥
रवि शशि मण्डल में लखै, पश्चिम पावक ज्वाल।
भाखै काल ज्ञान इमि, मृत्यु लहै ततकाल ॥३३१॥
प्रतिमा पूजन जो लखै, ताको साध्य बखान।

अंग हीन प्रतिबिम्ब लखि, तब असाध्य अनुमान ॥३३२॥

## ( अथ आतुर छाया परीक्षा )

॥ दोहा ॥

दरपन जल घृत तेल में, छाया लखि नर नारि ।
बिना शीश तन मरन है पंडित लेहु विचारि ॥३३३॥

## अथ अपर छाया परीक्षा

॥ दोहा ॥

पग छाया गनि दश दिशा, नव ग्रह द्वादश होइ भान ।
तिथि पंद्रह गनि एक करि, त्यहि को भाग विधान ॥३३४॥
वसु को भाग भुजानि दे दक्षिण कर पुनि वाम ।
शेष परैं ज्यहि अंग में, करैं अशुभ शुभ काम ॥३३५॥
दक्षिण जीवै रोगिया, वाम अंग मरि जाय ।
छाया विवरण सुमति सों, जानहु पंडित राय ॥३३६॥

## अथ घातचन्द्र विचार

॥ सोरठा ॥

मेष आदि १ वृष पांच, मिथुन नवौं ९ पुनि जानिये ।
कर्क दूसरौ २ बाँच, सिंह छठौं ६ घातक शशी १
कन्या पुनि दश १० जान, तुला राशि गनि तीसरौ ३
वृश्चिक सातौं मान, धन को चौथो चन्द्रमां २
मकर आठऔं हान कुंभ इकादश घात शशि ।
मीन बारहौं जान, कहीं राशि द्वादश सबै ३

## ( अथ घात चन्द्र को दान )

॥ दोहा ॥

वशपात्र अरु वसन सित, स्वेत द्रव्य दधि जान ।
सित तंडुल दै विप्र कँह घात चन्द्रमा दान ॥३३७॥

## (अथ बारहौ राशि कौ चन्द्र तिथिवार नक्षत्र को घात)

॥ दोहा ॥

मेष राशि तनु १ चन्द्रमा, मघा नषत रवि वार ।
परिवा छठि एकादशी, घातक दोष विचार ॥३३८॥
वृष पंचम घातक शशी नषत हस्त पुनि जान ।
दशमी पूनौ पंचमी घात शनिचर मान ॥३३९॥
मिथुन नवौं शशि घात है, स्वाति नषत पुनि होइ ।
द्वितिया द्वादशि सप्तमी, घात वार शशि लोइ ॥३४०॥
कर्क दूसरो चन्द्रमा अनुराधा नक्षत्र ।
दुइज सप्तमी द्वादशी बुद्ध घात है मित्र ॥३४१॥
सिंह छठौ चन्दा हनै मूल नषत पुनि जान ।
तीज त्रयोदशि अष्टमी, होइ घात शनि आन ॥३४२॥
कन्या दशवां चन्द्रमा, नषत श्रवण कर हान ।
पूनौ दशमी पंचमी, घात शुक्र को जान ॥३४३॥
तुला तीसरो शशि हनत, नषत शतभिषा जान ।
नौमी चौथ चतुर्दशी घात वार गुरु मान ॥३४४॥
पुनि वृश्चिक शशि सातवां, रेवति नषत प्रमान ।
परिवा छठि एकादशी, घात शुक्र को जान ॥३४५॥
धन को चौथो चन्द्रमा, भरनी नषत बखान ।

तृतिया तेरसि अष्टमी, घात सोम को जान ॥३४६॥
मकरै आठौ चन्द्रमा, रोहिनि होय नक्षत्र ।
नौमी चौथ चतुर्दशी, घात भूमि को पुत्र ॥३४७॥
कुम्भ गेरहौं चन्द्रमा, आर्द्रा नषत प्रमान ।
तेरसि आठैं तीज तिथि, होत घात रवि आन ॥३४८॥
मीन राशि द्वादश शशी, नषत पुष्य पुनि होइ ।
दशमी पूनौ पंचमी, घातक भृगुसुत जोइ ॥३४९॥
घात राशि द्वादश कहे, चन्द्र नषत तिथि वार ।
ये सब दुक्खद होत हैं, चिन्ता करत अपार ॥३५०॥
ये तिथिवार नक्षत्र को, होम दान जपु कीज ।
विप्रन भोजन दीजियो, व्याधि दोष हर लीज ॥३५१॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## ( अथ स्वप्नपरीक्षा )

॥ दोहा ॥

स्वप्न विषे जो देखियतु शुभ अरु अशुभ विशेष ।
सदा होइ शुभ ते भलौ अशुभ हानि दुख देख ॥३५२॥

## ( अथ शुभ स्वप्न परीक्षा )

॥ दोहा ॥

देव भूप अरु विधव त्रिय, विप्र गाय सँग वच्छ ।
गमन अगम्या नारि पै, चढ़ै उच्च गिरि वृच्छ ॥३५३॥
श्वेत वसन निर्मल महा, मांस मृतिका होइ ।
अश्व चढ़ै अरु गज चढ़ै, नृपति देखिजै कोइ ॥३५४॥
अंग लेप विष्ठा भरै, कर विलाप अति रोइ ।
भोजन करै कु अन्न को, धन पावै पुनि लोइ ॥३५५॥

भ्रमर जलौका सर्प के, काटे ते शुभ होइ।
सरुज निरोगी होइ नर, निरुज लहै सुख लोइ ॥३५६॥

## ( अथ अशुभ स्वप्न परीक्षा )

॥ दोहा ॥

नगिन जटाधर मुन्डिया अंग अंग तनु श्याम।
कृष्ण रक्त गेरू रगे वसन अशुभ लिय चाम ॥३५७॥
अस्त्र घात निज नारि को देखै दक्खिन देश।
महिष चढ़ो खर पै चढ़ो मूड़ मुड़ाये केश ॥३५८॥
औंधे मुख जो गिर परै मही अगिन जल बीच।
परै आपदा सपन में नोचै तनु को नीच ॥३५९॥
तेल लगाये नगिन पुनि मृतक पुरुष कर युद्ध।
विना शीश आपै लखै, एतो बड़ो विरुद्ध ॥३६०॥
ज्योतिष भणित अरिष्ट बहु, सपने औरहु देख।
होइ व्याधि आरोग्य कँह, रोगी मरत विशेष ॥३६१॥
लखि अरिष्ट धर्महिं करै, जैहै दोष बिलाइ।
गऊ दान असनान पुनि, तिल घृत होम कराइ ॥३६२॥
विष्णु मन्त्र को जप करै सुचित दिवाले जाइ।
दिना तीन लगि नेम सो, अशुभ स्वप्न मिट जाइ ॥३६३॥

## ( अथ दोनों के हित सुगम उपाव )

॥ श्लोक ॥

वाराणस्यां दक्षिणस्थः कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः। तस्य स्मरण-मात्रेण दुःस्वप्नश्च विनश्यति १

॥ अर्थ ॥

काशी जी में दक्षिण दिशा पर स्थित कुक्कुट नाम ब्राह्मण हैं तिनके स्मरण मात्र से खोटे स्वप्न नाश होते हैं । इस श्लोक को पढ़ कर तीन बार कुक्कट इस नाम को कह कर हाथ की दोनों गदेली देख प्रणाम करे इससे बुरे स्वप्नों का दोष नाश होता है काशी जी की वृद्ध परंपरागत यह बात मैंने लिख दी है )

## ( अथ स्वप्न का काल निर्णय )

॥ दोहा ॥

प्रथम पहर को सपन फल, एक वर्ष में भास ।
दूजे फल षट मास में, तीजे फल त्रय मास ॥३६४॥
चौथ पहर को सपन फल दश दिन बाद दिखात ।
दिन को सपना फल रहित जानहु मति अवदात ॥३६५॥

* इति श्रीमन्महर्षि शाण्डिल्य गोत्रीय कान्यकुब्जकुलोद्भव गोपनाथीय मिश्र श्री मञ्जुड़ामनतनूजश्र रामचरणाचार्य्यं कृत संग्रहे भैषज्यभास्करे प्रथमखण्डे वैद्यलक्षणादि ज्योतिश्शास्त्रीय चिकित्सोपयोगिक्रमदर्शकः प्रथमाविष्कारः १

## ( अथ नाड़ी परीक्षा )

॥ दोहा ॥

वाम हस्त गहि वाम को, दक्षिण पुरुष सुजान ।
ज्योतिष वैदक आदि दै, ग्रंथन लिखित प्रमान ॥३६६॥
कर अंगुष्ठा मूल पै, तीन दोष परसिद्ध ।
भेद बतावत धमनिका, लक्षण लखत सुबुद्ध ॥३६७॥

नाड़ी रोग शरीर के, सुख दुख देत बताइ ।
अति प्रवीन नर वैद्यवर, जानत पंडितराइ ।३६८॥

## ( अथ नाडी का पहिला मत )

॥ दोहा ॥

आदि मध्य अरु अन्त में, वात पित्त कफ जान ।
क्रम ते नाडी तीन विधि, यँह नाड़ी को ज्ञान ॥३६९॥

## ( दूसरा मत )

॥ दोहा ॥

उभय पाणि सो देखिजै, त्रय अंगुलि के भाइ ।
आदि पित्त कफ मध्य है, अन्त पवन ठहराइ ॥३७०॥

## तीसरा मत

॥ दोहा ॥

आदि पित्त कौ ठौर है, मध्य जानिजै वात ।
अंत नाडिका कफ कहत, वैद्य बुद्धि अवदात ॥३७१॥

## ( पाहिले मत का पुष्टि कारक वाक्य )

॥ श्लोक ॥

आद्यौ च वहते वातो मध्ये पित्तं तथैवच । अन्ते च वहते श्लेष्मा नाडिकात्रयलक्षणम् १

॥ अर्थ ॥

पहली अंगुरी (तर्जनी के नीचे स्थान वात का है दूसरी अंगुरी (मध्यमा) के नीचे स्थान पित्त का है तीसरी अंगुरी (अनामिका) के नीचे स्थान कफ का है

## ( दूसरे मत की पुष्टि का प्रमाण )

॥ श्लोक ॥

आदौ च वहते पित्तं मध्ये श्लेष्मा तथैव च। अन्ते प्रभञ्जनो ज्ञेयः सर्वशास्त्र विशारदैः २

॥ अर्थ ॥

आदि में पित्त की मध्य में कफ की अन्त में वात की नाड़ी सर्व शास्त्र के वेत्ताओं से जानने योग्य है २

## [ तीसरे मत की सदृष्टान्त पुष्टि ]

तृण पुरस्सरं कृत्वा यथा वातो वली वहन्। पाश्चात्यं तृणमादाय पृथिव्यां याति बक्रगः ३ एवं मध्य गतो वायुः कृत्वा पित्तंपुरस्सरम्। स्वांनुगं कफ मादाय नाड्यां वहति सर्वदा ४

॥ अर्थ ॥

'जसे प्रवल पवन तिनूकों को अगाड़ी कर के कुछ पीछे लेकर आप बीचमें टेढ़ी होकर बौंड़र रूप से चलती है ३ इसी भांति मध्य गत वायु पित्त को आगे करि और अपने पीछे कफ को करि आप बीच में टेढ़ी हो के चलती है ४ (पेंच शंका की वात है कि कदाचित् किसी रोगी के पित्त की व्याधि होइ और वैद्य वुद्धि भ्रम से वात कोप की नाड़ी अग्रभाग में समझ कर उस रोगी के दोष

दूर करने को गरम सोंठ आदि देइ तो कहो एक तो पित्त दोष की गरमी दूसरे वातशमन को दी गई गरम औषध अब कहो वह रोगी गरमी के मारे कैसे बच सकता है इसी प्रकार रोगी के वातसंबंधी व्यथा होइ और वैद्य बुद्धि भ्रम से पित्त की नाड़ी जान कर पित्तशमन कर्त्ता शीतल दवा करे तो कहो शरद औषध से वातरोगी कैसे बच सकता है)

## उपरोक्त विषय पर सिद्धान्त

॥ श्लोक ॥

अत्र्याद्यैश्च भिषग्वर्य्यैस्सर्वं संशोध्य तत्वतः । कथ्यते नास्ति नास्तीति नाडीस्थान विचारणा ५ किन्तु नाडगतिः श्रेष्ठा शास्त्रकारैः प्रकीर्त्तिता । नचतत्रहि संदेहो लेशमात्रोऽपिविद्यते ६

॥ अर्थ ॥

अत्रि मुनि आदि और श्रेष्ठ वैद्यों से संपूरण सिद्धान्त शोध कर यही कहा गया है नाड़ी का स्थान विचार नहीं है ५ किंच शास्त्रकारों ने नाड़ी की गति (चाल) ठीक मानो है गति में संदेह लेशमात्र भी नहीं है ६ (इस से जो किसी ने आदि मध्य अन्त ये स्थानबांधे हैं वे मोटे मत के हैं और अमाननीय हैं किंतु नाड़ीकी गति सत्य है इस में वात पित्त कफ की यथार्थ प्रतीति में कोई भ्रम नहीं है और वात पित्त कफ यथार्थ अपनीगति के अनुसार प्रतीत होते हैं। पर इस में सुक्ष्मता का काम है पूरा नाड़ी का ज्ञान गुरु शिक्षा स्वानुभव इष्टबल और पूरे अभ्यास से होता है।

## [ नाड़ी की गति का ज्ञान ]

दोहा

सांप जोंक गति सम चलै, नाड़ी वात बखान।
चपल काग मेंढुक छवा, गति तब पित्त प्रमान ॥३७२॥

मोर कबूतर पडुकुली, राजहंस तमचूर ।
इनकी गति नाड़ी निरखि, कफ जानहु यह सूर ॥३७३॥
बार बार मंडूक गत बार बार अहि गौन ।
वात पित्त की नाडिका पडित जानौ तौन ॥३७४॥
सर्प हंस गति सम चलै, नाड़ी तब कफ वात ।
मोर लवा गति पित्त कफ, जानहु मति अवदात ॥३७५॥
रहि रहि फोरत काठ ज्यों, कठफोरा करि शोर ।
तब नाड़ी सो जानिज, सन्निपात कर जोर ॥३७६॥
तीस बार नाड़ी फरक फिरि नाड़ी रहि जाइ ।
तब निश्चय यह जानिये, रोगी ना ठहराइ ॥३७७॥
रहि रहि करि फर फिर चलै, नाड़ी बारम्बार ।
तब रोगी प्राण हू, जान चहत यम द्वार ॥३७८॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## षटपदी

जमि तिमि नाड़ी चलै लवा व्यालहिं गति फिरि फरि ।
रहि रहि नाड़ी चलै जाय सूक्षम ह्वै गिरि गिरि ।
फरकै कंठ मँझार नित्त नाड़ी न सधै बहु ।
चलि चलि अँगुरी छुवै बहुरि नाड़ी बहकै बहु ।
यहि भांति होइ बहुतै निबल नाड़ी को गुन निरखि नित ।
जानौ असाध्य नाड़ी तबहि सन्निपात बुध जानि चित ?
पहिल पित्त गति होइ बात गति होइ बहुरि वह ।
कफ गति नाड़ी होइ भेद कहि दियो बुद्ध यह ।
चक्र चढ़ी सो फिरै थान अपनो नाहीं तजि ।
बहुत भयानक होइ मोर गति चलै बहुरि सजि ।
होइ जाइ सूक्षम बहुरि जानि परै न किये परस ।
यहि भांति होइ नाड़ी जबहि तब असाध्य कहिये निरस २

॥ दोहा ॥

लघु दीरघ गति धमनिका धावति कुरुक सुभाइ।
शीत ताप संताप पुनि तुरत मरन व्है जाइ ॥३७९॥
छीन नाड़िका छीन तनु, मन्द अग्नि बल हानि।
पवन कोप कफ कंठ में मृत्यु तासु की जानि ॥३८०॥
नाड़ी फड़कै मांस मधि, बहु गम्भीर बखान।
नाड़ी ज्वर के जोर ते, गुप्त अस्त ऋति जान ॥३८१॥
चिंताधिक अति क्षीणता, अफरे गरुई होइ।
काम क्रोध भय कोपते, तेज गमन अति जोइ ॥३८२॥
क्षीण रुधिर मल धातु पुनि, क्षीन नाड़िका जासु।
याको कहत विचारु यह, मृत्यु निकट है तासु ॥३८३॥
रुधिर कोपते उष्ण गति, गरुता को अधिकार।
क्षुधा तृषाते चपल गति, अस्थिर तृपित अधार ॥३८४॥
दुपहर अग्नि समान ज्वर, मलगिर चुञ्चुल नार।
वह जीवै नर एक दिन मुनि जन कह निरधार ॥३८५॥
जैसे डमरू चलत है, त्यों नाड़ी चलि जाइ।
जानौ वह नर एक दिन, नीठ नीठ ठहराइ ॥३८६॥
शीत उष्ण अरु तरक गत, त्रिविध नाड़िका होइ।
है असाध्य जीवै नही, कहत भिषज सब लोइ ॥३८७॥
जासु नाड़िका तड़ित सम, रहि रहि चमक कराय।
ता रोगी को जानिये, एकै दिवस रहाय ॥३८८॥
तीनौ घर अति वेग सो कुटिल भौलै अहि गौन।
ता प्राणी को जानिये, चलन चहत यम भौन ॥३८९॥
चलत चलत जाकी धमनि, कांपि २ रहि जाय।
पुनि अंगुरिन जबतब छुवे, ताहि चहत यमराय ॥३९०॥

शीतल नाड़ी जासु की, अन्तर ज्वर की दाह।
अरु त्रिदोष से युक्त हो, ताकी यम को चाह ॥३९१॥
छोंड़ छोंड़ स्थान को, चलै धमनिका जासु।
अन्तर ज्वाला की दहन, ज्वाला वधि ता श्वासु ॥३९२॥
कर अंगुष्ठा मूल से, द्वै अंगुल के वाद।
मिलै धमनिका तासु, कीं अर्ध प्रहर मरयाद ॥३९३॥
जासु नाड़िका रेख सम, सूक्ष्म थिर अति होइ।
तासु मीच छै पहर में, जान लेहु सब कोइ ॥३९४॥
शोक मोह भय मूर्छना, श्रम पीड़ित निर धातु।
भूत लग्यो उन्माद पुनि, अपस्मार युत गातु ॥३९५॥
ये दोषन में नाड़िका, करत विविध संचार।
वाते इनमें नहिं गुनिय, साध्या साध्य विचार ॥३९६॥

## ( अथ सूत्र द्वारा नाड़ी ज्ञान )

॥ श्लोक ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि नाड़िका भेद मुत्तमम्।
यस्य विज्ञान मात्रेण राजपूज्यो भवेद्द् भिषक् ७
कन्या कार्त्तित सूत्रेण रुग्णपाणिं निवन्धयेत्।
तत्सूत्रे ध्यान माकृत्य वक्तव्यो रोगनिर्णयः ८
उच्चशब्देन जानीयात् वायुं च कुशलो भिषक्।
मध्यशब्दात् कफंचैव पित्तं शब्दस्य शून्यतः ९

॥ अर्थ ॥

अब हम ( वैद्यभास्करोदय नामक ग्रंथ से ) सूत्र द्वारा नाड़ी ज्ञान कहते हैं जिसके जानने से वैद्य राजपूज्य होय ७ वैद्य कन्या

के काते भये सूत से रोगी के हांथ में नाड़ी के मध्य स्थान पर बँधावै वह सूत अपने हांथ से पकड़ कर बहुत सूक्ष्म विचार से रोग निर्णय कहै ८ निपुण वैद्य सूत में उच्च शब्द के अनुमान से बात दोष कहै मध्य शब्द से कफ कहै शब्द की शून्यता से पित्त कहै ६ ( परंच इस रीति में पूरा अनुभव और अभ्यास बढ़ाना चाहिये )

## ( अन्य चमत्कार रावण संहिता से )

॥ श्लोक ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि लोकानां परमाद्भुतम् ।
कौतुकाय च वैद्याना मङ्गावीक्ष्य शुभाशुभम् १०
पारदं हरितालं च केसरञ्च मनश्शिला ।
गंधकञ्चैव सिन्दूरं गोमूत्रेणतु पेषयेत ११
ललाटे लेपनं कृत्वा रोगिणां नात्र संशयः ।
यद्वर्णं तत्फलं ब्रूहि दोषाणां च शुभा शुभम् १२
भास्करा भिमुखे स्थाप्य पित्तं रक्तानुवर्णतः ।
श्वेत वर्णाद्वदेत्वातं धूम्र वर्णा दरिष्टकम् १३
नील वर्णान्मलाधिक्यं कृष्ण वर्णान्न जीवति ।
हरि तालपीत वर्णाच्च कफं वैद्यस्तु बुद्धिमान १४

॥ अर्थ ॥

अब हम ( रावण संहिता से ) पुरुषों को परम आश्चर्य रूप और वैद्यों को कौतुक के अर्थ अङ्ग से देख कर शुभ अशुभ परीक्षा कहते हैं १० पारा हरतार केसर मनसिल गंधक सेंदुर ए सब सम भाग लेकर गोमूत्र से पीसि गोली बना राखै ११ पानी में घिस रोगी के माथे में लेपन करे फिर सूर्य के सामने बैठाकर मस्तक में देखे

बुद्धिमान वैद्य लाल रङ्ग से पित्त दोष कहै सपेत रंग से वात दोष कहै धूमिल रंग से अरिष्ट कहै १३ नीले रंग से मल की अधिकता कहै काले रंग से रोगी का मरण कहै हरे या पीरे रंग से कफ रोग कहै १४

## ( अथ मुख परीक्षा )

॥ दोहा ॥

प्रथम पित्त कफ वाय को, आनन होत सुभाय ।
त्रिविध भेद लक्षण सुनो, दीन्हों सबै बताय ॥३९७॥
पित्त अरुण कफपीत द्युति अनिल श्यामता आन ।
कोप करत त्रय दोष तनु, प्रगट होत मुख आन ॥३९८॥

॥ सोरठा ॥

तिक्त रक्त पुनि पीत बदन पित्त यह जानिये ।
मधुर श्वेत गुरु मीत, कफ लक्षण जानहु भिषज ॥
रूखो कडुवो वक्त्र जानहु दोष समीर को ।
त्रिविध दोष ऐक्त्र ताहि त्रिदोष बखानिये ॥

## ( अथ नेत्र परीक्षा हारीत संहिता से )

॥ दोहा ॥

नेत्र रक्त प्रिय नर बदन, अति निर्मल सुकुमार ।
श्वेत कृष्ण कछु अरुणता, शोभा जगत अपार ॥३९९॥
तिनमें दोष प्रसिद्ध है, पवन पित्त कफ जान ।
धरत आपने रूप को, प्रगट होत दृग आन ॥४००॥
युग्म दोष द्वंद्वज सुना, तीन त्रिदोष बखान ।
भिन्न भिन्न लक्षण कहत, मुनि हरीत मन जान ॥४०१॥

## ( अथ वायुनेत्र )

॥ दोहा ॥

धूम्र वरन रूखे अधिक, करू पीर अधिकार।
फूले पटल निहारिये वायु रोग संचार ॥४०२॥

## ( अथ पित्तनेत्र )

॥ दोहा ॥

पीत वरन अरु रक्तता, नील वरन दुख दैन।
ये लक्षण सब पित्त के, होहिं तिमिर अति नैन ॥४०३॥

## ( अथ कफनेत्र )

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ दोहा ॥

जलद स्वेत निर्मल महा, लखिये दृग अभ्यास।
अश्रु भरे चिकने लखै, तब कफ को परकास ॥४०४॥

## [ अथ बातपित्तनेत्र ]

॥ दोहा ॥

रक्त नील रूखे महा धूम्र वरन दृग देख।
बात पित्त तब जानिये, लक्षण कह्यो विशेष ॥४०५॥

## [ अथ कफवातनेत्र ]

॥ दोहा ॥

बिह्वल जल दृगरूक्ष अति धूम्र वरन पुनि होइ।
कफ समीर तब जानबी, कहत भिषज सब कोइ ॥४०६॥

## ( अथ कफपित्तनेत्र )

॥ दोहा ॥

पीत वरन पुनि रक्त है, बिह्वल जल प्रस्राव ।
उभय दोष कफ पित्त के, द्वंद्वज कहे स्वभाव ॥४०७॥

## ( अथ त्रिदोषनेत्र )

॥ दोहा ॥

कारे टेढ़े मोह अति, निद्रायुत फिर देख ।
लाल भयानक नैन लखि, कहै त्रिदोष विशेष ॥४०८॥
जो दृग ठाढ़ी दै रहैं, मिलै पलक नहिं जासु ।
रौद्र भयंकर दृष्टि अति, यमपुर करिहै वासु ॥४०९॥
अतिहिं रौद्र आरक्त, पुनि रूखे कोप समीर ।
सन्निपात दृग जल बहै, मरन जान मतिधीर ॥४१०॥
आंख भयानक एक बहु, पुनि दूजी मुंद जाय ।
तब रोगी दिन तीन में, यम के घर ठहराय ॥४११॥
जा रोगी के तुरत ही, लोचन ज्योति विहीन ।
अरु कछु कारे होइं तो, यम सेवक कहि दी[illegible] ॥४१२॥
भ्रमते दृग तारे फिरैं, एक दृष्टि नहिं चेत ।
एक रात में यम नगर, मग रोगी गहि लेत ॥४१३॥
ना कछु देखै ना सुनै, ना कछु बोलै बैन ।
शीत उष्ण तनु होत है, खड़ी मृत्यु त्यहि लैन ॥४१४॥

## ( अथ जीभ परीक्षा )

दोहा

हरकी पीरी खरखरी, जीभ पवन कहि देत।
लाल वात ते श्याम पित, कफ ते पिच्छल सेत ॥४१५॥
कारी सूखी कंटकित, सन्निपात कहिदीन।
मिलवां लक्षण दोष के अशुभ स्वादु से हीन ॥४१६॥

## ( अथ नख परीक्षा )

॥ दोहा ॥

नख के लक्षण देखि कै, कीजो भिषज्ञ विचार।
धातु दोष मल दोष को, रुधिर कोप अधिकार ॥४१७॥
नख के लक्षण जानिबो, देखो निकट निहार।
वात पित्त कफद्वंद्वजे, बहुरि त्रिदोष बिचार ॥४१८॥
दोष लखो सब नखन मँह, कहे शास्त्र मत देख।
इनके लक्षण विविध विधि, बुध जन सुनहु विशेष ॥४१९॥

## ( अथ वायु नख लक्षण )

॥ सोरठा ॥

नील वरन नख वाय, रक्त वरन है पित्त ते।
पीत वरन कफ आय, तीन वरन कह दोष के

## ( अथ वात पित्त नख लक्षण )

॥ दोहा ॥

मुनि हरीत मत ग्रंथ में, ऐसो कहत विचार।
नील रक्त नख देखिये, वात पित्त अधिकार ॥४२०॥

## [ अथ पित्त कफ नख लक्षण ]

पीत अरुण नख देखियतु, नीके करे बखान।
प्रगट रोग यह नखन में, श्लेष्मा पित्त सुजान ॥४२१॥

## [ अथ वात कफ नख लक्षण ]

॥ सोरठा ॥

नील वरन अरु पीत, वात श्लेष्मा कोप ते।
लक्षण देखहु मीत, कहे ग्रन्थ हारीत में

## ( अथ त्रिदोष नख लक्षण )

॥ दोहा ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नील पीत आरक्त अति धरैं नखा यह रूप।
वात पित्त कफ कोप ते, कहु त्रिदोष अनुरूप ॥४२२॥

॥ सोरठा ॥

कृष्ण नील पुनिपीत, हरित श्वेत निर्मल महा।
सन्निपात नख मीत, कह्यो मरन हारीत महँ

## ( अथ वस्त्र परीक्षा )

॥ दोहा ॥

बहु दिन को ओढ़ो वसन, रोगी केर मगाय।
चतुर वैद्य तहि सूँघ कर, कहहि दोष समुझाय ॥४२३॥

॥ सोरठा ॥

वसन सुगन्ध वसाय, अथवा नमक समान गुन।
वात कहौ समुझाय सुघर वैद्य अनुभव चतुर
पुहुप समान सुगन्ध, अथवा मास समान पित।
पकी मीन दुरगन्ध, सरो मास सम कफ गुनहु
मुर्दा कैसी वास, जा रोगी के वसन में।
आइ रही ता स्वास, पूर भई वाकी उमिर

## ( अथ मूत्र परीक्षा )

॥ दोहा ॥

निशा अन्त रह पहर इक आतुर वैद उठाय।
मट्टी भाजन धातु को, तामे मूत्र कराय ॥४२४॥
सावधान निज चित्त करि, खोइ बुद्धि को भेउ।
तिल को तेल मगाय करि, तृन से तामे देउ ॥४२५॥
पसर तेल जो मूत महँ वाय रोग कँह जान।
वहीं ठौर जो बुन्द रह, ताको पित्त बखान ॥४२६॥
जल में भिद कै मिल रहै, कफहिं कहहु परबीन।
बहुत बुन्द नीले लखत, सन्निपात कहि दीन ॥४२७॥

## ( अथ मूत्र का रंग देखि दोष लक्षण )

॥ चौपाई ॥

राते वरन पित्त को जान। पीत वरन कफ कहत बखान।
श्वेत वरन तब जानहु वाय। कृष्ण बरन त्रयदोष सुभाय।

॥ दोहा ॥

पारे कैसे कण चमक. त्यों कहहु परवीन ।
बूंद बूड़ आवै तुरत, त्यहि असाध्य विधि कीन ॥४२८॥
तेल बूंद मूतहिं परत, पूरब करहि पसार ।
तुरत निरोगी होइ सो. दक्षिण ज्वर अधिकार ॥४२९॥
उत्तर पश्चिम फैलही, रोगी होय निरोग ।
कोन इशानै जाई जो मृत्यु मास इक योग ॥४३०॥
अग्नि निऋति वायव्य में फैल छिद्र व्है जाय ।
सुधा पान की बो करै, तऊ नहीं ठहराय ॥४३१॥
पसर तेल की बुन्द पै, बनै कछू आकार ।
सुयश आपनो भिषज यह. करै नहीं प्रतिकार ॥४३२॥

## ( अथ मल परीक्षा )

॥ दोहा ॥

झागदार रूखो कुरँग, टूटो मल सो वात ।
हरित पीत दुरगंधि युत, गरम ढील पित गात ॥४३३॥
शीतल पिच्छल गाढ़ मल, श्वेत रंग कफ चोख ।
मिलवां द्वन्द्वज जानिये, सब लक्षण तिरदोष ॥४३४॥

॥ चौपाई ॥

मल जो अपक गिरावै वैद । याढ़ै रोग शोक से कैद ।
ताते मल पाकन दे धीर । निर्मल होइ न रोग शरीर ।

## ( अथ अपक मल परीक्षा )

॥ चौपाई ॥

अपको मल जानौ यहि रीति । जौलौं रोगी ज्वर सो प्रीति ।

अपको मल के लक्षण जिते । बरनि कहौं ग्रंथन मत तिते ।
फूटो लाल सेत पंडूरो । पीरो रँग दुरगंध हरीरो ।
कारौ रग ज्यों बरन कपोत । अरुन उफान्यो ढीलो होत ।
ऐसो कच्चो मल है गुनी । ग्रंथन बीच देखि मैं भनी ।

## ( अथ पक्वमल परीक्षा )

॥ चौपाई ॥

जो मल निचट निरस अति होइ । जैसो मूसर जानौ लोइ ।
ना रूखो अरु जोत चीकनी । रहै न मांझ नाज की कनी ।
पाकै मल तौ दीजै झार । काचौ रहै तौ बढ़ै विकार ।
ज्वर के छूटे दीजै झार । कह्यो ग्रंथ मत वैद विचार ।

॥ दोहा ॥

अति कारो अति सेत अरु, अति पीरो अति लाल ।
महा गरम मल जासु को ताको मरण त्रिकाल ॥४३५॥

## ( अथ साध्य लक्षण )

॥ दोहा ॥

दृष्टि सुभग सुन बचन श्रुति कहै सुमति सो वात ।
गुदा भ्रंश नहिं मल द्रवत, साध्य सु लक्षण गात ॥४३६॥
चरन हाथ रह उष्ण अति, अंग दाह नहिं होइ ।
रसना कोमल जासु की. शुभ लक्षण नर जोइ ॥४३७॥

॥ चौपाई ॥

विनु शिर स्वेद होइ ज्वर जाको । सरल श्वास कफ कंठ न ताको ।
ऐसे लक्षण रोगी जान । ताहि साध्य सब कहत बखान ।

॥ दोहा ॥

तृषा हीन कर पद तपत. मृदु रसना वर वैन।
ये लक्षण हैं साध्य के, शुभ चितवनि चित चैन ॥४३८॥
इन्द्री गण चेतन सदा. सुख निद्रा जु प्रसेव।
स्वादु गन्ध सबही कहत, जानु साध्य को भेव ॥४३९॥

॥ सोरठा ॥

सबल उपाधि न होइ, वायु पित्त कफ एक सम।
दीप्त अग्नि पुनि जोइ मन प्रसन्न इन्द्री सुभग

## [ अथ असाध्य लक्षण ]

( षटपद )

नींद नाश निशि होइ कंठ कफ भरि भरि आवत।
होइ देह में दाह चैन पल एक न पावत।
वात कहत तुतरात होइ लघु सूक्षम नारी।
इन्द्री बल, मति जाय शक्ति सब नसै विचारी।
होइ जाइ रोगी जु इमि तुरत रोग आधीन जब।
ता कहं विचारि औषध करहु राम नाम तजि काम सब।

## [ भुजंगप्रयात छन्द ]

मुखै नाशिका ते गिरै रक्तधारा। दृगों से बहै आप तैं अश्रुधारा ॥ मुहे मांझ लाली लसैं ज्यों गुलाली। सो रोगो न जीवै परैं यत्न खाली १ रहै श्याम जिव्हा मुदै वाम आंखी। मुहे गंध ऊर्ध्वै रहै दीठ राखी ॥ सदा ऊर्ध्व ओठैं को चाटा करै जू। बहुतै डकारै सो रोगी मरै जू २

॥ सोरठा ॥

लिये उपद्रव साथ होइ त्रिदोष जु कोप करि।
स्रावित पुनि पुनि माथ अगिन मंद चिरकाल की
दिन दिन बाढ़ै रोग, क्षुधा हीन अरु हीन द्युति।
कफ मारुत संयोग, कह्यो मरत हारीत में

॥ दोहा ॥

कंठ अधिक कफ दाह पुनि, अति शीतल दिन जान।
लक्षण कहत असाध्य ये, करैं प्रान की हान ॥४४०॥
गुदा भ्रष्ट मुख हीन स्वर, कास स्वास अधिकार।
व्याकुल हिचकी शोथ तनु, किय असाध्य करतार ॥४४१॥
हियो चरन कर नाशिका, नाभि होइ हिम जासु।
शेष देह में दाह अति, मृत्यु जानबी तासु ॥४४२॥
बूझे दीपक गंध की, आनै कछू न बास।
मति अज्ञात द्युति हीन जो, मरन जानिजै तास ॥४४३॥
औषधि वैद न मानहीं, गांस्यो दारुण व्याध।
ऐसे लक्षण नारि नर, भाखत भिषज असाध्य ॥४४४॥
जीभ नाशिका अग्र पुनि, भृकुटी मध्य न देख।
भाखत कालज्ञान मत, ताकी मृत्यु विशेष ॥४४५॥
शिर ढोरै पटकै भुजा, व्याकुल हिचकी श्वास।
दियौ नाडिका छांड़ि बल, तौ नहिं जीवन आस ॥४४६॥
नेत्र दाहिनौ पुरुष को, स्रवहि रात दिन तोन।
दशै दिवस के बीच में प्राण लेहि यम छीन ॥४४७॥
इस्त्री मुख पद पुरुष के, शोथ होइ जब आनि।
जानहु चिन्ह असाध्य को, करत प्रान की हानि ॥४४८॥
कर पल्लव कंपन लगै, गहत नाड़िका जासु।

खैंचत भुज अति कठिन करि मृत्यु जानिजै तासु ॥४४९॥
गंध न आवै नासिका, जिव्हा लहै न स्वाद।
कंपमान अति शीश तनु श्रवण सुनै नहिं नाद ॥४५०॥
अधिक वायु शीतांग कफ कंपमान तनु जाहि।
करपद शीतल तनु दहै, यम लै जैहै ताहि ॥४५१॥
मेघ न गरजै तड़ित द्युति, त्रिकुटी दृग नहिं देख।
सतपंच नव तीन दिन, हंसा गमन विशेख ॥४५२॥

## ( अथ वैद्य प्रति शिक्षा )

॥ दोहा ॥

तजै न भेषज भिषज दृढ़ देखि कुयोग अरिष्ट।
कहुँ असाध्य नर दैव वश, जियत भोगि बहु कष्ट ॥४५३॥
कर्मज रुज के शमन हित, देवाराधन कीज।
नषत ग्रहादि कुदोषजहिं, तासु शान्ति विधि लीज ॥४५४॥
देश काल ऋतु हेतु सब लहै सुचित्त बहु शोध।
दोष विषम सम बहुरि गुनि चतुर वैद्य वर बोध ॥४५५॥
पाछे औषधि शोध कै. कीजिय वैद्य उपाय।
होइ सुयश कल्याण बहु, ईश्वर करहि सहाय ॥४५६॥

## ( अथ त्रिविध देश वर्णन )

॥ दोहा ॥

जंगल[1] देश अनूप[2] अरु, साधारणहिं[3] वखान।
भिन्न भिन्न लक्षण कहहुँ, सुनिये वैद्य सुजान ॥४५७॥

## ( अथ जंगल देश लक्षण )

॥ दोहा ॥

अति विशाल गोरे पुरुष, वृत्तन पियरे पात ।
बारू के थल देखियतु, पानी नहिं ठहरात ॥४५८॥
भानु तपैं त्यहि भूमि पर, पीत बरन व्है जायँ ।
सूखि जात सरिता सबै, अल्प नीर ठहराय ॥४५९॥
व्याघ्र नखी श्रंगी बहुत, निरस औषधी तुच्छ ।
छौंकर बेल करील पुनि, अर्क पीलु लघु बृच्छ ॥४६०॥
तुच्छ धान्य उपजत तहां, दूर दूर हैं गाउँ ।
मृगा मांस रूखौ सकल, पित्त कोप त्यहि ठाउँ ॥४६१॥

## ( अथ अनूप देश )

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

॥ दोहा ॥

वृत्त सुभग अति सघनता, देवदारु बहु दारु ।
द्रुम दीरघ सुन्दर सुमन, कानन को अधिकारु ॥४६२॥
अति सुगंध प्रफुलित सदा, वह समीर गति मन्द ।
छौ ऋतु छाया सघन अति लखन परैं रवि चन्द ॥४६३॥
नाना तरु फल शोभिजैं, देखत होत अनन्द ।
महिषा गैंड़ा शूकरा, खात घोघ तृण कन्द ॥४६४॥
नीर निकट त्यहि भूमि मँह, सरिता वहत समूह ।
शीतल सलिल प्रवाह पुनि, दाच्छ मच्छ को यूह ॥४६५॥
चक्रवाक सर सुभग अति, जलचर खग वक पांति ।
विहरत विमल तड़ाग नद, तीर फिरत वहु भांति ॥४६६॥
कंज अमल जल हंस पुनि, सर वर गहिर गंभीर ।

उदय अस्त नहिं देखियतु, श्याम स्वच्छ वहु नीर ॥४६७॥
अत्री ऋषि हारीत सों. कहे वरन ये रूप ।
सदा वाय कफ रहत तहँ. ऐसो देश अनूप ॥४६८॥

## ( अथ साधारण देश लक्षण )

॥ दोहा ॥

जल समीप सरिता बहुत. शीत उष्ण सम भाइ ।
कहत पुत्र हारीत सों ऋषि अत्री समुझाइ ॥४६९॥
उदय अस्त सब देखियतु, साधारण सब देश ।
वाय पित्त कफ एक सम, कह्यो ऋषिन उपदेश ॥४७०॥

## ( अथ अष्ट दिशा रोग वरणन )

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

॥ चौपाई ॥

पूरब अनिल कुष्ट अति जान । अग्नि कोण कफ कह्यो बखान ।
दक्षिण सन्निपात अधिकार । नैऋत कफ अरु पित्त अपार ।
पश्चिम रक्त पित्त अति होइ । वायव कफ पुनि जानहु लोइ ।
उत्तर केवल पित्त प्रधान । कोन इशान शीत अति जान ।
अष्ट दिशान चिन्ह ये कहे । मध्य देश लघु भोजन रहे ।

## ( अथ ऋतु परिज्ञान )

॥ चौपाई ॥

सावन भादौं वरषा जान । आश्विन कातिक शरद बखान ।
मारग पूस हेम पुनि कही । फागुन माह शिशिर ऋतु सही ।
ऋतु वसन्त बैशाख चैत । ग्रीषम असाढ़ जेठै कहैत ।

## ( अथ ऋतु रोग बखान )

॥ दोहा ॥

बरसा पवन प्रसिद्ध है, शरद पित्त अधिकार।
अनिल हेम शिशिरै अधिक, कफ बसन्त अवतार ॥४७१॥
ग्रीषम पित्त प्रकोप कर, अति प्रचण्ड हो आन।
औषधि करहु विचार करि, सकल भिषज ऋतु जान ॥४७२॥

## [ अथ रात दिन में षट ऋतु प्रवेश ]

दोहा ॥

प्रातः काल बसन्त ऋतु, राजा कफ परिमान।
ग्रीषम ऋतु पुनि मध्य दिन, पित्तराज पहिचान ॥४७३॥
पहर एक दिन अन्त को, पहर एक निशि आद।
ऋतु बरसा राजा पवन, जानहु त्यागि विवाद ॥४७४॥
अर्धरात्र पुनि शरद ऋतु, पित्त राज द्वै याम।
पहर भोर में शिशिर हिम, पवन राज सो काम ॥४७५॥

## [ वातादि दोषों का चय कोप शमन ]

॥ दोहा ॥

ग्रीषम संचय होत है, बरषा कोप करन्त।
शरद पाय कै शमन है, वात दोष वरनन्त ॥४७६॥
बरषा ऋतु संचय लहत शरद कोप परचण्ड।
शान्त शिशिर में होत है, पित्त दोष उद्दण्ड ॥४७७॥
शिशिर होत संचय बहुत, कोपहि करत बसन्त।
ग्रीषम ऋतु में शान्त है, कफ की अवधि वदन्त ॥४७८॥

## ( अथ वात कोप को हेतु )

॥ दोहा ॥

कडुवा तिक्त कषाय रस, मेघ गगन जब छाइ।
चनि मसूर बटुरा भखन पीवतु जलहिं अघाइ ॥४७६॥
साधत मूत्र पुरीष को रूक्ष अन्न जो खाइ।
तिरै नदी पुनि बल करै, भ्रमत रैन दिन जाइ ॥४८०॥
चोट अजीरन कोहं अति, काम शोक भय आन।
मिथ्याहार विहार ते, वायु कोप अति जान ॥४८१॥

## ( अथ पित्त कोप हेतु )

॥ दोहा ॥

आमिल तीक्षण लवण कटु, अधिक वचन आहार।
दधि कांजी तिल मीन मद, काम भोग अधिकार ॥४८२॥
लंघन दाहक भषन ते सन्मुख देखत दीप।
क्रोध करै तापै अगिन, भ्रमै घाम शिर टीप ॥४८३॥
अर्धरात पुनि मध्य दिन प्रकटत अपनो रूप।
वरषा बीते घन मिटे, पित्त प्रकोप निरूप ॥४८४॥

## [ अथ कफ कोप को हेतु ]

॥ दोहा ॥

विषमाशन दधि दूध ते अति शीतल पुनि नीर।
अम्ल मधुर अति लवण ते, बाढ़त कफ की पीर ॥४८५॥
मच्छ इक्षु भोजन गरू, तिल पुनि घृत को योग।
नवो अन्न वृन्ताक पुनि, होत अधिक कफ रोग ॥४८६॥

दिन सोवै निशि को जगै, धूम्र निकट अधिकार ।
हेतु पाय कफ कोप करि, प्रकटतु करत अपार ॥४८७॥

## [ अथ कुपित वात का रूप ]

॥ दोहा ॥

सर्व गात्र पीड़ा करै, शीश नैन भुज कान ।
ग्रीवा दन्त कपोल कटि, पीठ पासुरो जान ॥४८८॥
जंघ कोख उर शूल अति, उदर अफारा जान ।
वेग रोध आनन करू लक्षण वात बखान ॥४८९॥

## अथ कुपित पित्त का रूप

॥ दोहा ॥

मुख दृग विष्ठा मूत्र नख, पीरे होत विचार ।
देह फटत शिर घूमनी मुख कटु मिश्रित खार ॥४९०॥
अति प्रलाप अतिसार ज्वर, भ्रम मद अरु मुख शोष ।
श्वेद दाह मूर्छा तृषा, लक्षण पित्त सदोष ॥४९१॥

## अथ कुपित कफ का रूप

॥ दोहा ॥

तनु भारी मन्दी अगिन, आलस तन्द्रा नैन ।
रोम हर्ष शिरवर्त्त पुनि, पीनस खेहर वैन ॥४९२॥
श्वास कास मुख षार मधु, निंद्रा श्रम अधिकार ।
जीभ लिसी कफ सों रहै, मल को अधिक उतार ॥४९३॥
गौर वर्ण शीताङ्ग तनु, चलत अधिक है स्वेद ।
स्वेत नेत्र नख मूत्र मल, कफ लक्षण को भेद ॥४९४॥

## अथ वात प्रशमन

॥ दोहा ॥

उष्ण वृष्य अरु चीकने, लवण स्वेद तनु जान ।
सेकन दाहन तापने, होइ अनिल की हान ॥४९५॥
अरु नहाय जल तप्त सो, मांस मच्छ पुनि खाय ।
सुरा पान उपवास ते वायु दोष मिट जाय ॥४९६॥
मर्दन कीन्हे तैल सो, शयन करै अति निद्र ।
अरु उपनाह विधान ते, होइ समीर अभद्र ॥४९७॥
उष्ण वारि पीवै सदा पवन पीर सब जाय ।
ये सब हरत समीर को, ऐसो करहु उपाय ॥४९८॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

## अथ पित्त प्रशमन

॥ दोहा ॥

सुमन वाटिका बाग भ्रमि, तरै तरंगिनि जाय ।
तिक्त मधुर कै खाय रस, अशन पान हिम प्याय ॥४९९॥
घृत पय शीतल पान जल, तनु सुगन्ध हिम ल्याइ ।
शयन करै निशि चन्द्रिका, वीजन वायु चलाइ ॥५००॥
छाया वृन्द सुधाम की, अलज देखियतु दृष्टि ।
उमड़ै घन चहुं ओर ते, करत पवन सँग वृष्टि ॥५०१॥
वमन बिरेचन रुधिर स्रव, आनंद सुखद बिलास ।
कामिनि षोड़स वर्ष की, करत पित्त की नाश ॥५०२॥

## अथ कफ प्रशमन

॥ दोहा ॥

रूक्ष अन्न कटु औषधी, तिक्त कषैला दार।
अति व्ययाम निशि को जगै, त्रिय क्रीड़ा अधिकार ॥५०३॥
गरम कवल अरु नस्य विधि, करै स्वरस लघु पान।
वमन विरेचन लंघनै इनते कफ की हान ॥५०४॥

इति श्रीमन्महर्षि शाँडिल्य गोत्रीय कान्यकुब्ज कुलोद्भव गोपनाथीयमिश्र श्रीमज्जुड़ावन तनूज श्रीरामचरणाचार्य्य कृतसंग्रहे भैषज्य भास्करे प्रथमखण्डे नाडीपरीक्षादि चिकित्सा विवेक क्रम वर्णनो नाम द्वितीयाविष्कारः २

## अथ चिकित्सोपक्रमे ज्वरोत्पत्ति वर्णनम्

॥ दोहा ॥

मिथ्याहार विहार ते, दोष विषमता गात।
अथवा मल के कोप ते, ज्वर उपजत यहि भांत ॥५०५॥
निकसो बाहर उदर ते, जठर अगिन यह जान।
याही ते ज्वर होत है, अंग २ प्रति आन ॥५०६॥
ज्वर उत्पत्ति अजीर्ण ते, लंघन ते ज्वर जात।
सबै दोष पचि कै तुरत जँह के तहां समात ॥५०७॥

## अथ ज्वर की उपाधि

॥ दोहा ॥

श्वास कास मूर्च्छा अरुचि छर्दि तृषा अतिसार ।
हिचकी पुनि मल को रुकब, हड़ फूटन अधिकार ॥५०८॥

## अथ असाध्य उपाधि

॥ दोहा ॥

श्वास कास हिचकी बहुर आध्मान अतिसार ।
यह उपाधि के उपजते रोगी यम के द्वार ॥५०९॥

## अथ साध्य उपद्रव

॥ दोहा ॥

ग्रंथि भेद मूर्च्छा तृषा अरुचि छर्दि ये साध ।
इनते रोगी के तुरत, छूट जात है व्याध ॥५१०॥

## तरुण ज्वर कथन

॥ दोहा ॥

प्रथम तरुण ज्वर तीन दिन औषधि यतन निवार ।
ज्यों पन्नग मुख पय दिये, विष सम होत विचार ॥५११॥

## अथ तरुण ज्वर को अहित

॥ दोहा ॥

शीतल लेप नहाब पुनि, तक्र पीन त्रिय भोग ।
अग्नि तपन निद्रा करन, मरदन तेल कुयोग ॥५१२॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

घृत पय दधि अरु मांस रस घाम उष्ण व्य याम।
तरुण ताप की भाफ में भिषज बुरे ये काम ॥५१३॥

## अथ ज्वर में हित उपाय

॥ दोहा ॥

शयन करै निर्वात में, उष्ण वारि करि देउ।
परमौषधि लंघन कह्यो, चक्रदत्त सुनि लेउ ॥५१४॥
अति प्रवात निर्वात अति, अति लंघन नहिं पथ्य।
पुनि साधारण कर क्रिया ज्वर के आगम कथ्य ॥५१५॥
लंघन ज्वर के आदि हित, पाचन ज्वर मधि दीज।
औषधि ज्वर के अन्त पै, तथा विरेचन कीज ॥५१६॥
ज्वर आगम में वमन हित, रेचन ज्वर के अन्त।
ज्वर मधि वमन विरेचनै, मुनि जन मने करन्त ॥५१७॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ चौपाई ॥

ज्वर की आदि क्रिया है येह। वायु रहित पुनि लंघन देह।
तपत नीर बहुतै गुन करै। उदर सूख दोषन को हरै।

## अथ अवधि वर्णन

॥ दोहा ॥

सात दिवस लगि तरुण ज्वर, दश वासर लौं मध्य।
तेरह दिन परिपूर्णता, औषधि करिये सध्य ॥५१८॥
ज्वर की परिमिति पक्ष इक, कहत ग्रंथ मत जान।
ता ऊपर ज्वर जीर्ण है, मन्द वेगता आन ॥५१९॥
ताको कहिये विषम ज्वर, कर पद अति सन्ताप।
रोग वृद्ध दिन दिन करै, जानहु पूर्वज पाप ॥५२०॥

जब लगि ज्वर को अंश है, तब लगि उष्ण न अन्हाय।
नहिं तौ उपजै विषम ज्वर, कहत ग्रंथ समुझाय ॥५२१॥
वासित जल पीवै नहीं, करै नहीं व्यायाम।
दिन अकाल सोवै नहीं मैथुन करै न वाम ॥५२२॥
भोजन करै न चीकने, औ लौं बल नहिं होइ।
ये लक्षण निन्दित सबै, सुनौ कान दै लोइ ॥५२३॥

## अथ दोष प्रमान

॥ दोहा ॥

बात सप्त पुनि पित्त दश, द्वादश दिन कफ जान।
रोग वृद्ध तेरह दिना, सन्न षोड़शै मान ॥५२४॥

## अथ ज्वर के शुभ लक्षण

॥ दोहा ॥

दोष अग्नि पुनि धातु मल, चारो समता जान।
मन प्रसन्न इन्द्रीन में, चेतनता न बिलान ॥५२५॥
ये लक्षण ज्यहि ताप में, त्यहि को करु उपचार।
रोगी नीको होइगो, भाखत वैद्य विचार ॥५२६॥

## अथ शमन अशमन विचार

॥ दोहा ॥

शिर भारी जब लो रहै, तब लौ ज्वर नहिं जाय।
शिर हरवा जबहीं लगै, ज्वर ले गयो बलाय ॥५२७॥

## अथ विरुद्धता

॥ दोहा ॥

दिन सोवै निशि जागहो, रहै मूत्र मल बांध।
विषमाशन जल पान अति, षट प्रकार से व्याध ॥५२८॥

## अथ वात ज्वर के लक्षण

॥ दोहा ॥

गात पीर पुनि रूक्ष अति, कंपित देह जँभाय।
आधमान अरु विरस मुख, कान बधिर न सुनाय ॥५२९॥
शूल गांठ विष्टम्भ ज्वर, कंठ अधर मुख शोष।
नींद न निशि दिन बकत भ्रम लक्षण मारुत दोष ॥५३०॥

## अथ पित्त ज्वर लक्षण

॥ दोहा ॥

मुख कटुता अरु मूरछा, कंठ पाक तनु ताप।
देह दाह प्रस्वेद अति, वमन तृषा परलाप ॥५३१॥
अति दुरगंधित अंग अरु, छर्दि होइ भ्रम जासु।
नेत्र मूत्र मल नख त्वचा, रँग पीरो परकासु ॥५३२॥
दाह श्वास अरु अरुचि अति, कास होइ अधिकार।
लक्षण ये सब पित्त ज्वर, भन हारीत विचार ॥५३३॥

# अथ कफ ज्वर लक्षण

॥ चौपाई ॥

निश्चल अंग वेग पतराई। मधुर वदन आलस ठहराई।
मल अरु मूत श्वेत रँग होई। तप्त तृपित ये जानहु दोई।
गरुता शीत और उकलेद। रोम हर्ष निद्रा यह भेद।
फुरियो अंग सेत पर सेत। खजुरी तंद्रा छर्दि अचेत।
ताती वस्तु बहुत मन मानै। मन्दपेट की अग्नि बखानै।
पीनस अरुचि सेत द्रग कास। कफ ज्वर लक्षण कहहु प्रकास।

# अथ वात पित्त ज्वर लक्षण

॥ चौपाई ॥

नींद न आवै मूड़ पिराई। भ्रम मद कंठ शोष अधिकाई।
तृषा दाह मूर्छा तनु आई। रोम हर्ष वमि अरुचि बताई।
गांठ गांठ उपजै अति पीर। लागैं मनहुँ भरे विष तीर।
मोह होइ अरु होइ जँभाई वात पित्त ज्वर रीति बताई।

# अथ वात कफ ज्वर लक्षण

॥ चौपाई ॥

पर्व भेद शिर भारी जान। नाशा बहै कास मुख आन।
स्वेद छर्दि उदराग्नि नाशु। अति निद्रा आलस पुनि तासु।

॥ दोहा ॥

भारी अँग पुनि शोष मुख नैनन परै न चैन।
कफ समीर ज्वर एक घर, निशा दिवस दुख दैन ॥५३४॥

## अथ पित्त कफ ज्वर लक्षण

॥ दोहा ॥

तिक्त मधुर मुख दाह तनु, कहुँ बहु शीतल अंग।
कास अरुचि तृष्णा महा, नीद पीर तनु भंग ॥५३५॥
ये लक्षण ज्यहि ताप के, जानौ वैद सुजान।
पित्त श्लेष्मा एक घर, माधव कहत निदान ॥५३६॥

## अथ सन्निपात लक्षण

॥ चौपाई ॥

क्षण में जाड़ौ क्षण में दाह। मूड़ पीर नहिं होइ निबाह।
सन्धि सन्धि हाड़न में पीर। नैनन में भरि आवत नीर।
टेढ़े पलक नैन अति लाल। भरि राखौ है मनहुँ गुलाल।
कर्ण नाद अरु कान पिराई। कंटक होंइ कंठ भरि आई।
तंद्रा मोह प्रलाप प्रकाश। श्वास अरुचि उपजै अति कास।
जीभ खरखरी जरी समान। शिथिल अंग सब होंइ निदान।
कफ लोहू उगलै मुख पित्त। धुनै शीश दुख पावै चित्त।
आवै अलप पसीनो अंग। थोरी नीद मूत्र मल संग।
देह दूबरी अधिक न आइ। घन सम कंठ घनो घहराइ।
देह ददोरा कारे लाल। मंडल होंवें बड़े विशाल।
पकै कान मुख बोल न आवै। अधिक उदर मधि बोझ बतावै।
जाड़ो लगै सबै दिन सोवै। अरु जागत सिगरी निशि खोवै।
रैन दिना कै जागत जाई। बहुत पसीना कै नहिं आई।
हँसि हँसि नाचै, गावै गीत। लीला निरखि होइ मन भीत।
लक्षण सन्निपात के भांखे। जे मुनि ग्रंथन में लिख राखे।

## अथ आगन्तुक भेद

॥ दोहा ॥

चोट श्राप अभिचार से, प्रेत आदि आवेश।
ज्वर आगन्तुज चार विधि, भाखत ग्रंथ सुदेश ॥५३७॥

## अथ लंघन आदि विचार

॥ दोहा ॥

ज्वर में लंघन प्रथम ही, मुनि जन दीन बताय।
ताते लंघन कीजिये, दोष सकल पचि जाय ॥५३८॥

॥ चौपाई ॥

वात ज्वर अरु छइ ज्वर वारो। भूँखो होइ सो बहुत विचारो।
नारि गर्भिणी वालक प्यासो। बूढ़ो अरु डरपोका खासो।
अरु दुरबल उरछुत सो आरत। उदर वात को रोग बखानत।
इतने रोगी बुध जन लेइ। लंघन करैं न इनको देइ।

॥ दोहा ॥

लंघन मानुष करत है, दोष सहित वह आय।
दोष गये फिर कैसहू लंघन सह्यो न जाय ॥५३९॥

## अथ प्यास में जल देयत्व

॥ दोहा ॥

प्यास भयानक बहुत है, प्यास हरत है प्रान।
मोह प्यास ते होत है, मोह लेत है प्रान ॥५४०॥

प्यासे को जल दीजिये, यही बात परिमान।
ताते पंडित कौन विधि, बरजैं जल को पान ॥५३१॥

## अथ शीतल जल के योग्य रोगी

॥ सवैया ॥

मूरछा दाह महा गरमी अरु पित्त घनो ज्यहि ते दुख पावै।
पंथ चलै अति होइ परिश्रम चोट लगै कछु जाहि न भावै।
पित्त के रक्त के दाह को और औ खाये ते माहुर जोर जनावै।
होत हैं रोग इते नर जाहि को ताहि को शीतल नीर पियावै।

## अथ उष्ण जल योग्य रोगी

॥ चौपाई ॥

नयन रोग ज्वर मंडल अंग। उदर रोग को लखहु प्रसंग।
मन्दागिनि अरु अरुचि विचारो। मुख जरिबो पीनस निरधारो।
क्षय अरु शोथ रोग पुनि ऐसो, फुरिया मुख मधु माहुर जैसो।
इतने रोग जाहि लखि पावो। ताहि कुनकुनो नीर पियावो।
कफ अरु नूतन ज्वर पहिचानो। और गलग्रह रोग बखानो।
पीर पसुरिया की कहि देउ। संग्रहणी पुनि मन धरि लेउ।
आधमान अरु अरुचि बतावै। पित्त व्यथा उरक्षत मन लावै।
गुल्म विबन्ध कास अरु श्वास। विद्रधि रोग जो होइ प्रकास।
बार बार हिक्का जो होइ। स्नेह पान नर करै जु कोइ।
इतने रोग जाहि लखि पावै। ताको तातो नीर पियावै

## अथ उष्ण जल की विधि

॥ दोहा ॥

पाद हीन हर वात को, अर्द्ध हीन हर पित्त ।
पाद शेष कफ को हरत लघु दीपन गुन मित्त ॥५४२॥

## अथ ऋतु के अनुसार जल की विधि

दोहा

पाद हीन हिम शिशिर में, पाद शेष मधु जान ।
शरद ग्रीष्म आधो रहे सो गुण दायक मान ॥५४३॥
वर्षा ऋतु बहु दोष ते अष्ट, मांश अवशेष ।
सो जल पीवै रोगिया लिख्यो ग्रंथ मत देख ॥५४४॥
दिन को चुरवो रात पै निशि चुरवो दिन माहिं ।
सो गरुवो जल जानिजै रोगी पीवै नाहिं ॥५४५॥

## अथ शीतलोदक गुण

॥ दोहा ॥

मद मूर्च्छा श्रम पित्त ज्वर, वमन तृषा क्लम दाह ।
शीतल जल इनको हरै, कहत भिषज नरनाह ॥५४६॥

## अथ उष्णोदक गुण

॥ दोहा ॥

श्वास कास ज्वर मेद कफ बात अरुचि मिट जाय ।
आम दोष हर अगिन कर, उष्णोदक गुण गाय ॥५४७॥

## अथ शर्करोदक (सरबत) गुण

॥ श्लोक ॥

जलेन शीतलेनैव घोलिता शुभ्र शर्करा ।
एलालवंगकर्पूरमरिचैश्च समन्विता
शर्करोदक माख्यातं शुक्लं शिशिरं सरम् ।
मूर्च्छाछर्दितृषादाहज्वरशान्तिकरं परम्

॥ अर्थ ॥

शीतल जल से साफ सक्कर घोरै तिसमें गुजराती लौंग शुद्ध कपूर मिर्च मिलावै इसे सर्करोदक (सरबत) कहते हैं। यह वीर्य वर्धक ठंढा मल उतारने वाला मूर्च्छा (बेहोशी) बमन प्यास दाह ज्वर इन्हों को शांत करता है ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## अथ औषधि क्रिया

॥ दोहा ॥

स्वरस क्रिया पुटपाक हिम, क्वाथ फांट मंथान
मंड सुयूष विलेपिका, कल्क चूर्ण वटि जान ॥५४८॥

## अथ स्वरस विधि

॥ दोहा ॥

सद्य औषधी आन कै, बांटौ दृढ़ करि सोइ ।
तब कपड़ा में घोरि कै, लीजै स्वरस निचोइ ॥५४९॥
याको भाखत स्वरस कवि, अनोपान सो देउ
एक स्वरस यहि विधि कह्यो,अब दूजो सुनि लेउ॥५५०॥

ताज़ी औषधि ना मिलै, तब सूखी कहँ लेउ।
एक अंश त्यहि कूटि करि, दूगुन जल मधि देउ॥५५१॥
निशि दिन राखै तासु कहँ, लीजो वसन निचोइ।
यहौ स्वरस उत्तम कहौ, अनोपान रूज खोइ॥५५२॥

## अथ स्वरस के अनुपान

॥ दोहा ॥

मधु मिश्री पय गुड़ लवण, जीरा घृत दै तेल।
अनोपान ये स्वरस के, कहुँ कहुँ चूरन मेल॥५५३॥

## अथ पुटपाक विधि

॥ चौपाई ॥

औषधि की पीठी कर नीर। पिंडु बांधि तब धरिजै धीर।
अंडपत्र अथवा वट पत्र। अथवा बाँधौ जामुन पत्र।
ऊपर तासु सूत लपटावै। माटी सान लेप चढ़वावै।
अंगुल एक कह्यो परवान। अगिन मांझ तब देइ सुजान।
होइ पक्व तब जानौ लोइ। तब गोला रस देइ निचोइ।
त्यहि पुट पाक स्वरस पल एक। अनोपान मधु कहत विवेक।
अथवा कल्क चूर्ण सँग देउ। पुटपाकन को याही भेउ।

## अथ हिम की विधि

॥ दोहा ॥

औषधि लीजै एक पल, षट पल लीजै वारि।
बाँटि छान त्यहि लीजिये, भाखज भिषज विचारि॥५५४॥

ताहि कहत हिम नाम यह दूजो शीत कषाय।
कह्या ग्रंथ सारंगधर, यह विधान करि ध्याय ॥५५५॥

## अथ अनुपान

॥ दोहा ॥

मधु मिश्री पय चूर्ण हू यथा योग अनुपान।
देश काल रुज भेद सो, बैद करै अनुमान ॥५५६॥

## अथ क्वाथ विधि

॥ दोहा ॥

पानी षोड़श अंश लै, द्रव्य लेउ पल एक।
मृतिका भाजन मेलिकै लै चूल्हे पर टेक ॥५५७॥
अष्ट अंश त्यहिं राखिये मध्यम राउ बताउ।
अनोपान दै युक्ति सो, तब रोगी को प्याउ ॥५५८॥

## अथ अनुपान

॥ दोहा ॥

मधु मिश्री को मेल कै, अथवा गूगुर जान।
लवण शिलाजतु क्षीर हू, दीजे भिषज सुजान ॥५५९॥

## अथ फाण्ट तलफा विधि

॥ दोहा ॥

छोटे चुकरी अगिन में, कीजै लाल तपाय।
द्रव्य स्वरस तामें भरी, वासन संपुट ताय ॥५६०॥

मधु मिश्री अनुपान है, जानहु वैदसुजान ।
रोग समुझि गुटकादि हू, दीजै मन अनुमान ॥५६१॥

## ( अथ मंथान विधि )

॥ दोहा ॥

मृतिका भाजन मेलि कै, औषधि नीर मिलाय ।
मथकै दृढ़करि सहत सँग सो रस द्वै पल प्याय ॥५६२॥

## ( अथ मंड विधि )

॥ दोहा ॥

एक अंश लै वस्तु को आठ अंश जल नाउ ।
मन्द अग्नि सों सिद्ध करि, अनोपान सों प्याउ ॥५६३॥
जीरा धनयां मिर्च घृत, सैंधो हींग लवंग ।
यथा योग रुज देखि कै, दीजै ताके संग ॥५६४॥

## ( अथ यूष विधि )

॥ दोहा ॥

यूष वस्तु लै एक पल, षट पल लीजै नीर ।
मन्द आंच सों औंटिये, कहत यूष त्यहि धीर ॥५६५॥

## ( अथ विलेपिका ( अवलेह ) विधि )

॥ दोहा ॥

सिता आदि संग औषधी, मध्यम आंच पचाय ।
मधु संग चाटन योग जो, ताहि विलेपी गाय ॥५६६॥

## ( अथ कल्क विधि )

॥ दोहा ॥

ओदी औषधि आनकै, पिठीं बांठि कै लेउ ।
अथवा जूड़े नीर सो, कहत कल्क को भेउ ॥५६७॥

## ( अथ चूर्ण और वटी ( गोली ) विधि )

॥ दोहा ॥

औषधि पीस महीन कै, ताको चूर्ण बखान ।
द्रवित वस्तु सो बांधिये, सोई वटिका जान ॥५६८॥

( अथ ज्वरों पर उपचार लिखते हैं )

## पाचन काढ़ा सब ज्वरों पर

Indira Gandhi National Centre for the Arts

देवदारु धनियां सोंठ छोटी व बड़ी भटकटाई की जर ए पांचौ औषधि समान लेकर काढ़ा करै सब प्रकार के ज्वर पाचन के लिये पहिले देइ तो ज्वर पच कर छूट जाते हैं और बिगड़ते नहीं ।

## अथ वात ज्वर में काढ़ा

गुरिज सोंठ नागरमोथा धमासो ( जवासा ) इनको सम भाग काढ़ा करि पिये वात ज्वर जाइ ।

## पुनः वात ज्वर में काढ़ा

खस पृष्टपर्णी ( पिंथवन ) सोंठ चिरायता मोथा शालपर्णी ( सरिवन ) दोनौ भटकटाई की जर गुरिज गुखुरू बड़ी ये दश औषधो समान ले काढ़ा करि पिये वात ज्वर अवश्य दूर होई ।

## पुनः वात ज्वर में काढ़ा

गुरिज पिपरामूर सोंठ ये तीन ही के काढ़े से बात ज्वर जाता है।

## पुनः वात ज्वर में काढ़ा

धनियां देवदारु छोटी भटकटाई की ऊर सोंठ इन्हों का समान समान भाग काढ़ा करि पीने से बात ज्वर शीघ्र जाता है।

## बात ज्वर में गोली

शुद्ध कोचिला[1] १ तोला मिर्च १ तोला अफीम ।/ भर इन तीनों को गूमा के रस से घोंट कर एक रत्ती प्रमान गोली बांधो तुलसी को रस और सहत में मिला कर गोली १ शाम सुबह देने से बात ज्वर तत्काल दूर होता है ( तथा इस गोली से कोई प्रकार का बात हो दूर होता है अजीर्ण मंदाग्नि आदि को बहुत फायदा होता है ) अनुपान से सब रोगों में फायदा होता है।

## बात ज्वर में मालिश

चिरायता १ तोला मालकां कुन २ तोला सोंठ बैतरा १ तोला अफीम २ रत्ती इन सबों को छेरी के दूध ऽ= में खूब महीन बांटि मालिश करे तो बात ज्वर देह पीड़ा दूर होइ।

## अथ पित्त ज्वर में उपचार

चिरायता कुटकी मोथा पित्तप परा जवासा इन्हें बराबर क्वाथ कर पिये तो पित्त ज्वर जाय।

---

१ सरौते से कुचिला के दो दो टुकड़े कर लेवे फिर गाय के मूत में डार देइ दश रोज मूत में राखे रोज ताजा मूत बदलता जाय ग्यारहवें दिन गरम पानी से साफ करके गाय के दूध में दोला यन्त्र से आधा घन्टा चुरै लेइ तो कुचिला उत्तम शुद्ध हो जाता है।

## पुनः पित्तज्वरे काढ़ा

पित्तपापरा लाल चन्दन नेत्रवाला सोंठ इनको समान भाग ले काढ़ा करि पियै तो अवश्य पित्तज्वर जाय ।

## पुनः अन्य

दाख पित्तपापरा अमलताश, कुटकी नागरमोथा हर्रे सम भाग काढ़ा करि पीने से पित्तज्वर मूर्च्छा ( बेहोशी ) पसीना तृषा प्रलाप ( बकवाद ) भ्रम ये सब दूर होंइ ।

## पुनः अन्य

जवासा मेहदी की पत्ती चिरायता कुटकी अरूस पित्तपापरा इनको सम भाग काढ़ा करि मिश्री मिलाय पीवै तो पित्तज्वर तृषा दाह और रक्तपित्त भी दूर होता है ।

## पुनः अन्य

गुरिज औरैठी पित्तपापरा इनका काढ़ा या तलफा पीने से पित्तज्वर अवश्य दूर होता है ।

## पुनः अन्य

नेत्रवाला खस नागरमोथा पित्तपापरा सोंठ लालचन्दन ये छै औषधियों के काढ़े का शीतल जल पीने से दाहसहित ज्वर तृषा तथा नये ज्वर को भी तत्काल दूर करै ।

## पित्तज्वर में तलफा

गुरिज तीन अंगुल पीपर छोट तीन पित्तपापरा २ मासा मुनका तीन इन्हें महीन पीस छा पैसा भर पानी मा घोरि छानि लेइ चार पांच चुभरिया आग में लाली करि तलफा बनावै मिश्री तीन मासा घोरि पिये तो पित्तज्वर वातज्वर कफज्वर तीनौ छूटैं।

## तथा

छभेर के गाभा के रस में मिश्री घोर पिये पित्त ज्वर जाई।

## पित्तज्वरे चूर्ण

नेत्रवाला २५ भर मोथा २५ चन्दन सुपेत २५ पित्तपापरा २५ खस २५ गुजराती २५ कबाबचीनी २५ मुहलेठी २५ सबको चूर्ण करि मिश्री ८= मिलाइ धर राखे खुराक २५ भर सहत से चाटै तौ पित्त-ज्वर जाय छर्दि दाह अरुचि दूर होइ।

## अन्य काढ़ा

लाल चन्दन पदमाख धनियां गुरिज नीम का गाभ समान भाग काढ़ा करि पीने से पित्त ज्वर वातज्वर वातपित्तज्वर दाह तृषा वमन मन्दाग्नि दूर होइ। यदि सिद्ध होने पर सहत मिलाया जाय तो उत्तम हो यह धना पंचक कहा जाता है।

## अथ कफज्वर पर काढ़ा

बिजौरा नीबू की जर हर्र सोंठ पिपरामूर सज्जीखार इनको समान भाग काढ़ा करि पीवै तो कफ ज्वर जाइ।

## अन्य

पित्तपापरा पीपर छोट नीम का गभ नरकचूर सोठ सतावर गुरिज भटकटैया की जर सब समान भाग करि मौताद १। भर रोज काढ़ा करि पियैं तो कफ ज्वर जाय।

## अन्य

परवर का पात त्रिफला कुटको नरकचूर अरूस गुरिज सब सम भाग से मौताद १। भर को काढ़ा करि पियै कफ ज्वर जाय।

## ( हिचकी वमन युक्त कफज्वर पर )

कैफरा भारंगी मोथा धनियां पित्तपापरा वचखुरासानी हर्र ककरासिंघी देवदार सोंठ सब समभाग से मौताद १। भर काढ़ा करिं पियै तो हिचको वमन कफ ज्वर कास श्वास गले की पीर सब दूर होइ।

## अन्य

ककरासिंघो पीपर छोट कैफरा पुहकरमूर ये चारौ सम भाग चूर्ण करि।) भर सहत से चाटै तो श्वास कास संयुक्त कफज्वर अवश्य मिटै।

## अन्य

॥ दोहा ॥

ककरास्र गि अतीस लै, पीपर मधु सो देइ।
कफ ओ की वाधा विषम, इनहिं तुरत हर लेइ॥

## [ अन्य कट्फलादि चूर्ण ]

॥ दोहा ॥

कट्फल कुटकी शृंगिका मोथा पुहकर मूल।
और कचूर मिलाइ कै, औषधि सम कर तूल ॥
याको चूरन मधु सहित, सुन्ठी रस सो देउ।
कंठ रोग कफ ज्वर छर्द, वातज्वर हर लेउ ॥
श्वास शूल ओकी अरुचि, या चूरन ते जाय।
कट्फलादि यह नाम है, टंक एक भर खाय ॥

## अथ वात पित्त ज्वर में काढ़ा

पित्तपापरा मोथा गुरिज सोंठ चिरायता समान भाग से मौताद १। भर को काढ़ा पियै वात पित्त ज्वर जाय।

## अथ कफ वात ज्वर में काढ़ा

बड़ी भटकटैया की जर सोंठ गुरिच पुहकरमूर समभा से मौताद १। भर को काढ़ा करि पीवै तो कफ वात ज्वर कास श्वास अरुचि पसुरी की पीर ये सब दूर होंइ।

## अथ कफ पित्त ज्वर में काढ़ा

अमलतास पिपरामूर मोथा कुटकी हर्र समान भाग से मौताद १। भर को काढ़ा पियै तो कफ पित्त ज्वर आम वात शूल जाइ और दीपन पाचन है।

## अन्य

गुरिज नीम की छाल कुटकी मोथा इन्द्रजौ सोंठ परवर का डार पात चन्दनसुपेत पीपरछोट समता से मौताद १। भर को काढ़ा पिये तो कफ पित्त ज्वर छर्दि अरुचि लार बहब दाह तृषा ये नाश होंइ।

## अथ सर्व ज्वरे क्वाथ

भटकटैया दूनौ सोंठ धनियाँ देवदारू समता से मौताद १। भर को क़ाढ़ा पियै तो सब प्रकार के ज्वर जांय।

## अन्य

भटकटैया को जर पुहकरमूर चिरायतो गुरिज सोंठ समता से मौताद १। भर को काढ़ा पिये तो सब प्रकार के ज्वर जांय यह पंचतिक्त नाम का काढ़ा है सब ज्वरों में उत्तम चलता है (यद्यपि काढ़ा उत्तम औषध है पर वैद्य आलस वश प्रतिदिन न निर्माण कर सकें तो अर्क विधि से अर्क उतार काम में लावें)

## अथ सान्निपात ज्वर

सन्निपात मुख्य तेरह प्रकार के हैं तिनकी सनिदान चिकत्सा कहते हैं।

## तेरह सन्निपातों के नाम

॥ श्लोक ॥

संधिकश्चान्तक श्चैव रुग्दाह शिचत्तविभ्रमः। शीतांगस्तान्द्रिकः प्रोक्तः कंठकुब्जस्तु कर्णिकः १ विख्यातो भुग्ननेत्र श्च रक्तष्ठीवी प्रलापकः। जिव्हक श्चेत्य भिन्यासः सन्निपातास्त्रयोदश २

॥ अर्थ ॥

संधिक १ अन्तक २ रुग्दाह ३ चित्तविभ्रम ४ शीतांग ५ तान्द्रिक ६ कंठकुब्ज ७ कर्णिक ८ भुग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ यह तेरह प्रकार के सन्निपातों के नाम हैं।

( अब संधिक सन्निपात का लक्षण कहते हैं)

॥ श्लोक ॥

पूर्वरूपकृतशूलसम्भवं शोषदाहवहुवेदनान्वितम्। श्लेष्मतापवल-हानिजागरं सन्निपात मिति संधिकं वदेत् ३

॥ अर्थ ॥

पहिले ही से शूल लिये शोष मुँह को सूखा रहना दाह बहुत पीड़ा से युक्त कफ ज्वर वल की हीनता नींद न आना इन लक्षणों से संधिक सन्निपात कहा जाता है ३

## तिसका उपचार

॥ श्लोक ॥

संध्याख्ये हित मस्ति लंघनविधिः स्वेदोपनाहादिकं रूक्षं कर्म समग्र मेव विहितं कुर्याद्रु यवागूरसम्। मूलैः पंचभि रेव कल्कित मिदं सन्मागधीमिश्रितं कौलत्थेन रसेन सैन्धवयुतं पेयं च विश्वौषधम् ४

॥ अर्थ ॥

सन्धिक नाम सन्निपात में लंघन वालुका स्वेद उपनाह लेप आदि रूखे कर्म धूरन आदि गण हितकारी हैं और पंचमूल

अर्थात् सरिवन पिठवन बड़ी व छोटी भटकटैया गुखरू बड़ी इनसे युक्त सोंठ मिला यवागू रस और सेंधा नमक से मिली आद् की चटनी सेवन करै ४

## सँधिक सन्निपात पर काढ़ा

॥ श्लोक ॥

रास्ना गुडूची सटि वृद्धिदारु सुराह्व विश्वा त्रिफला सतावरी। क्वाथं पिबेद् गुग्गुलसंप्रयुक्तं समस्तसंधिग्रहसन्निपाते ५

॥ अर्थ ॥

रासन, गुरिज, कचूरचकरी विधारा देवदारु, अतीस त्रिफला सतावर, इनको समान भाग से काढ़ा करि गूगुर मिलाय पीवै तो संधिक सन्निपात न रहै परंच काढ़े में गूगुर ।) भर छोड़े (प्रमाण) जीरकँ गुग्गुलं क्षारं लवणं च शिलाजतु। हिंगु त्रिकटुकं चैव क्वाथे शाणोन्मितँ क्षिपेत् १ अर्थ-जीरा, गूगुर, खार, नमक शिलाजीत हींग, सोंठ, मिर्च, पीपर, इनको टका भरे की औषधि के काढ़े में आठ आना भर डारै ५

## अन्य काढ़ा

॥ श्लोक ॥

अमृतोरुबूकरास्ना सुरतरु विश्वा हरीतकी क्वाथः ॥ सकल समीरण रोगान् प्रातः पीतो हरेत् सद्यः ६

॥ अर्थ ॥

गुरिज, अंडा की जर, रासन, देवदारु, सोंठ, हर्र इनको सम भाग काढ़ा करि पियै तो सम्पूर्ण वात सम्बन्धी रोग तत्काल दूर होते हैं ६

## अन्य काढ़ा

॥ श्लोक ॥

ग्रंथिककलितरुपथ्या कृतमालशिवोरुबृषै र्विहितः ॥ एरण्डतैल सहितः क्वाथो हन्यान्मरुद्रोगान् ७

॥ अर्थ ॥

पिपरामूर, बहेर, हर्र, अमलतास, हर्र अरूस, इनको समान भाग करि मौताद १। भरे को काढ़ा बनाय तिसमें रेंड़ी का तेल १ तोला भर मिलाय पियै तो समस्त वात रोग संबन्धी दोष दूर होइ यहां हर्र दो बार कही है इससे प्रमाण में दुगुनी लेना चाहिये लिखा भी है कि ( एक मप्योषधं योगे यस्मिंस्तु पुनरुच्यते। मानतो द्विगुणं प्रोक्तं तद्द्रव्यं तत्वदर्शिभिः १ ) अर्थात्-जिस योग में एक औषधि दो बार कही जाय तहां उस औषध को प्रमाण में दूनो कर देइ ऐसा तत्वदर्शियों ने कहा है। ७

## अन्य काढ़ा

॥ श्लोक ॥

रास्ना शुंठी गुडूची सहचर जलदै र्भीरु पथ्या सुराह्वै स्तिक्ता कचूर वासानिलरिपुसहितैः पंचमूली द्वयेन ॥ एभिर्द्रव्यैः कषायस्त्व-रितमुपहरेत्पीतमात्रं प्रभातेमन्यास्तम्भांत्रवृद्धि ज्वर पिडक कटी संधिसर्वांगपीडां ८

---

१ क्षीरं घृतं गुडं तैलं मूत्रं चान्यद्रवं तथा। कल्कादिकं च क्वाथे हि निक्षिपेत् कर्ष संमितम् १ दूध, घी गुर, तेल, मूत्र, अन्य पतले पदार्थ, और चटनी आदि काढ़े में तोला प्रमाण डारै ॥

॥ अर्थ ॥

रासन, सोंठ, गुरिज, कटसरैया की जर, मोथा सतावर, हर्र देवदार, कुटकी, कचूर, अरूस, रेंड की जर, दशमूल ( अर्थात्- सरिवन, पिथवन, भटकटैया दूनौ, गुखरू बड़ी बेल की जर, इन्नी सोनापाठा, खम्हार कै छाल, पांडर, ) इनको समान भाग से काढ़ा करि प्रातः काल पीवै तो हड्डियों का जकड़पन अंत्र वृद्धि ज्वर फुन्सी कमर दर्द और सब अंगों की पीर आदि सविकार सन्निपात तत्काल दूर होइ ॥

( इति संधिक सन्निपात )

## अथ अन्तक सन्निपात लक्षण

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ श्लोक ॥

दाहं करोति परितापन मातनोति मोहं ददाति तुदतीति शिरः प्रकम्पम् ॥ हिक्कां करोति कसनारुचि मंगभङ्ग जानीहि तं विबुधवर्जित मन्तकाख्यम् ९

॥ अर्थ ॥

दाह व संताप अधिक होइ मोह होइ अर्थात् इन्द्रिन की चेतना जाती रहै व्यथा होइ शिर कंपावै हिचकी आवे खांसी तथा अरुचि होइ अंग टूटै ऐसे लक्षण युक्त वैद्यों से त्यागा भया अन्तक नाम का सन्निपात जानो। ६ ( इसको असाध्य होने से चिकित्सा नहीं कही )

## अथ रुग्दाह को लक्षण

॥ श्लोक ॥

प्रलापपरितापनप्रबल मोह माद्यश्रमः परिभ्रमणबेदना व्यथित कंठमन्या हनुः ॥ निरंतरतृषातुरः श्वसन शूलशल्याकुलः सकष्टतर साधको भवति हन्ति रुग्दाहकः १०

॥ अर्थ ॥

प्रलाप ( मनमाना बकना ) सँताप अत्यन्त अज्ञानता मादकता ( धतूर फल के खाये माफिक नशा होना ) थकावट भौंरी सी आना व्यथायुक्त गल ठोढ़ी गरदन के पीछे की हड्डी में अधिक पीड़ा होना हमेशा प्यास से युक्त रहना श्वास शूल की मरोर से व्याकुलता होना आदि लक्षणों से युक्त अति कष्ट साध्य रुग्दाहक नाम सन्निपात रोगी को मारता है १०

## अथ उपचार

॥ श्लोक ॥

जलधर मलयज नागर पर्पटकोशीर बालकैः ॥ कथितं यः पिवति पयः शीघ्रं शाम्यति रुग्दाहकस्तस्य ११

॥ अर्थ ॥

नागरमोथा, चन्दन सपेत, सोंठ, पित्तपापरा, उसीर, सुगंधवाला इनको समान भाग से काढ़ा करि शीतल हो जाने पर पियै तो रुग्दाह नामक सन्निपात शान्त होइ ११

## अन्य उपाय

॥ श्लोक ॥

बदरी निम्बदलेर: श्रीखंडारिष्टफेनसयुक्तः ॥ दातव्यो पादतले लेपो रुग्दाहसन्निपातघ्नः १२

॥ अर्थ ॥

सपेत चंदन नीम के पात, बेरी के पात इनको छेरी के दूध से महीन पीस फिर दूध में घोर कर नीम की पतरी डार चौकोर फार मथानी सी बनाय मथै फेना निकार पायन के तरवन में लेप करे तो रुग्दाह सन्निपात दूर होइ। (इससे जीर्ण ज्वर दाह भी दूर होते हैं) मूल में जो फेन शब्द आया है इससे कोई समुद्र फेन ग्रहण करता है परं च दूध को ग्रहण उत्तम है प्रमाण–दुग्ध फेनँ हिमँ वृष्यं दाह जीर्ण ज्वरापहम्। अर्थात् दूध का फेना शीतल पुष्ट कर्ता दाह जीर्ण ज्वर नाश करै १२

## रुग्दाह सन्निपात पर काढ़ा

॥ श्लोक ॥

अभया पर्पट मुस्तं कटुका शम्याक गोस्तनी क्वाथः ॥ पीतः करोति शमनँ रुग्दाहक सन्निपातस्य १३

॥ अर्थ ॥

हरें पित्तपापरा मोथा, कुटकी, अमलतास, दाख, इनको सम भाग से काढ़ा करि पीवै तो रुग्दाह सन्निपात दूर होइ १३

## अन्य काढ़ा

॥ श्लोक ॥

ब्राह्मी द्राक्षा जलधर वचोशीर शम्याक तिक्ता पथ्या धात्री कलितरु बलानिम्ब कोशातकाभिः ॥ भूनिम्बाद्यैः रजनि युगलैः पंचमूली द्वयेन पीतः क्काथः सकलपवनव्याधि रुग्दाहहन्ता १४

॥ अर्थ ॥

ब्राह्मी दाख, मोथा, वच, खस अमलतास, कुटकी हर्र, औरेठी बहेर बरियारी की जर नीम का गाभ करू तोरई, चिरायता, हरदी, दारुहरदी, दशमूल, इनको समान भाग काढ़ा करि पियै तो सब प्रकार के वात रोग और रुग्दाह सन्निपात दूर होइ १४

इति रुग्दाह सन्निपात ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## अथ चित्तभ्रम सन्निपात

॥ श्लोक ॥

यदि कथमपि पुंसो जायते तापपीडा भ्रममदपरितृप्ति मोहि-वैकल्यभावः ॥ विकटनयनहासो गीतनृत्यप्रलापः विदधति तमसाध्यं केपि चित्तभ्रमाख्यम् १५

॥ अर्थ ॥

जब कहीं किसी पुरुष को चित्तभ्रम नाम का सन्निपात होता है तो ये लक्षण होते हैं कि– सन्ताप देह में पीड़ा भ्रम मद ( नशा सा चढ़ा रहना ) अफ़ारा लगना मोह विकलता भयानक नेत्र होना, गाना नाचना बकवाद करना ये लक्षण युक्त चित्त भ्रम नामक सन्निपात है कोई आचार्य इसको असाध्य कहते हैं । १५

## अथ उपचार

॥ श्लोक ॥

पथ्या पर्पट कटुका मृद्वीका दारु जलद भूनिम्बैः ॥ शम्याक पटोलि शिवा क्वाथ चित्तभ्रमँ हन्ति १६

॥ अर्थं ॥

हरँ, पित्तपापरा कुटकी दाख, देवदारु, मोथा चिरायता अमलतास परवर के पत्ता, हरँ, ( दो बार होने से तौल में दूनी लेना ) इनके काढ़े से चित्तभ्रम नामक सन्निपात दूर होता है १६

## अन्य काढ़ा

॥ श्लोक ॥

हरीतकी पर्पट हारहूरा शम्बूक पुष्पी कटुका पयोभिः ॥ शम्याक मेघाह्वय भारतीभि चित्तभ्रमँ हन्ति कृतः कषायः १७

॥ अर्थं ॥

हरँ. पित्तपापरा, ( हारहूरा ) हुरहुर, कोई २ हारहूरा शब्द से दाख को ग्रहण करते हैं मदन विनोद निघंटु मे प्रमाण भी है-द्राक्षा मधुफला स्वाद्वी हारहूरा फलोत्तमा-इति सखौली. कुटकी. नेत्रवाला अमलतास, मोथा. गूमा इनको समान भाग करे काढ़ा पीवै तो चित्तभ्रम सन्निपात दूर होइ १७

## अथ शीताङ्ग सान्निपात

॥ श्लोक ॥

हिमशिशिरशरीरो वेपथुश्वासहिक्का शिथिलितसकलाङ्गः क्षीण-नादप्रतापः ॥ क्लमथुदवथुकासः छर्दयतीसार युक्त स्त्वरितमरण जीवी शीतगात्राभिधः स्यात् १८

॥ अर्थ ॥

बरफ से भी ठंढा देह रहना कप श्वास और हिचकी से सब अंगों का शिथिल होना क्षीण स्वर और संताप हो । चित्त को घूमना दाह होना तुरंत मरे के सदृश होना और जी उठना ऐसे लक्षणों से शीतांग नाम का सन्निपात कहा जाता है ( यह असाध्य है राम नाम औषधि है इसमें उपचार नहीं है १८

## अथ तांद्रिक सन्निपात

॥ श्लोक ॥

प्रभूता तन्द्रार्त्तिः ज्वरकफपिपासाकुलतनुः भवेत्श्यामा जिह्वा प्रथुलकठिनोत्कंटकवृता ॥ अतीसार श्वासक्लमथु परितापश्रुतिरुज स्तथा कंठे कंडू भवति सततं तांद्रिकगदे १९

॥ अर्थ ॥

अधिक तन्द्रा ( झाप ) से दुःखित कफ ज्वर प्यास से व्याकुल होनो जीभ श्यामता लिये मोटी कठिन कांटों से युक्त होइ अतोसार श्वास ग्लानि संताप और कान में पीर होइ गले में खुजली होइ ये लक्षण तांद्रिक नाम सन्निपात में होते हैं। १९

## अथ उपचार

॥ श्लोक ॥

भार्ङ्गी पुष्कर पथ्या निदिग्धिका नागरामृताकाथः ॥ अपनयति तांद्रिकगदं निस्सन्देहं दिनादि निःपीतः २०

॥ अर्थ ॥

भारंगी पुहकरमूर, हर्र भटकटैया, सोंठ, गुरिज इनको समान भाग से काढ़ा करि प्रातः काल पीवै तो तांद्रिकसन्निपात नष्ट होइ २०

## अन्य उपाय

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ श्लोक ॥

कुष्ट गवाक्षी नागर निशाद्वयँ मरिच पिप्पली सवचः ॥ वस्तशलिलेन पिष्ट स्तान्द्रिकहन्ता भवेन्नस्यः २१

॥ अर्थ ॥

कूट इँडोरन, साठ हरदी, दारु हरदी मिर्च छोटपीपर बच दूधिया इन सबको समान भाग ले चूर्ण करि पीछे बकरे के मूत्र से घोंट कर सुखा लेवे इसकी नास देने से तांन्द्रिक सन्निपात दूर होता है २१

## अन्य

वच सेंधानोन, सम भाग से बांटि नास लेइ तो निद्रा व तन्द्रा जाइ ॥

## अन्य

पीपर छोट, सौंफ सेंधानोन, करू तेल में पीस कर अंजन करै ता निद्रा व तन्द्रा जाइ ॥

( इति तांद्रिक )

## अथ कंठकुब्ज को लक्षण

॥ श्लोक ॥

शिरोर्त्तिकंठग्रह दाह मोह कंपज्वरोरस्क समीरणार्त्तिः ॥ हनुग्रह-स्तापविलाप मूर्च्छा स्यात् कंठकुब्जः किल कष्टसाध्यः २२

॥ अर्थ ॥

शिर में पीड़ा कंठावरोध ( अर्थात् कंठ को रुक जाना व पीड़ा होना ) दाह[1] मोह ( बेहोशी को बक ) कांपना ज्वर छाती का दर्द वात को पीड़ा हनुस्तंभ ( ठोढ़ी रह जाना ) भीतरी जलन प्रलाप अचेतपन की भाप इन लक्षणों से कंठ कुब्ज कहाता है और यह कष्ट साध्य होता है २२

## उपचार

॥ श्लोक ॥

त्रिकटु कलिंग कटुका हरीतकी विभीतकामलकैः ॥ अपनयति कंठकुब्जं वृष रजनीयुग्म मिश्रितः क्वाथः २३

---

१ बाहरी जलन ।

॥ अर्थ ॥

सोंठ, मिर्च, पीपरछोट, कुरैया, कुटकी हिर्र बहेर, औंरा अरूस, हरदी दारुहरदी, इनको समान भाग से काढ़ा पीवै तो कंठकुब्ज सन्निपात नष्ट होइ ॥

## अन्य

॥ श्लोक ॥

शृंगी वत्सकचेतकी घनसटी भूनिम्ब भार्ङ्गी निशा तिक्ता पुष्कर चित्रकैश्च चविका शुंठी कणाकटफलैः । धात्री दारु विभीतकैः समरिचै र्व्याघ्री वृषोन्मिश्रितै रेषः कुन्तति कंठ कुब्ज मचिरात् क्वाथः कणामिश्रितः २४

॥ अर्थ ॥

ककरासिंघी, इद्रजौ हर्र, मोथा, कचूर, चिरायता, भारंगी, हरदी, कुटकी, पुहकरमूर, चितावर, चाब सोंठ, पीपर छोट, कैफरा, औंरा, देवदारु, बहेर, मिर्च, भटकटैया, अरूस, इनको समान भाग से काढ़ा बनाय छोटी पीपर का चूर्ण दो रत्ती मिला कर पीवै तो बहुत जल्दी कंठकुब्ज सन्निपात दूर होइ २४

## नस्य

॥ श्लोक ॥

अपनयति कंठकुब्ज कृष्णापामार्गवीजजम् ॥ अपहन्ति सलिल-सहितं त्रिकटु तुम्बिनो नस्यम् २५

॥ अर्थ ॥

छोटी पीपर, चिरचिरा के बीजा इन दोनौ को महीन पीस कर नास लेने से कंठकुब्ज दूर होता है तथा सौंठ, मिर्च, पीपर, करुई लौकी के बीजा इन्हों को पानी से पीस नास लेइ तौ भी कंठकुब्ज नष्ट होता है २५

( इति कंठकुब्ज )

## अथ कर्णिक के लक्षण

॥ श्लोक ॥

प्रलाप श्रुति ग्लानि कंठग्रहांग व्यथा स्वास कम्प प्रसेकप्रवाहः ज्वराताप कर्णार्त्तिकृत् ग्रथिशोफो बुधाः कर्णिकं सन्निपातं वदन्ति २६

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ अर्थ ॥

बकवाद बहिरापन कंठ का रुकना अंगों में पीड़ा होना श्वास कंप लार का बहना ज्वर सन्ताप कान में पीड़ा कर्णमूल होना इन लक्षणों से पंडित कर्णिक सन्निपात कहते हैं ( यह कर्णिक कष्ट साध्य होता है ) २६

## उपचार

॥ श्लोक ॥

रास्ना वृहती पथ्या घन कटुका व्योष पुष्कराह्व वचा ॥ श्रृङ्गी धारा भार्ङ्गी क्वाथः कर्णिकापहः पानात् २७

॥ अर्थ ॥

रासन १ टकटैया हर्र. मोथा, कुटकी पिपरामूर, मिर्च सोंठ, पुहकरमूर, वच ककरासिंघी. गुरिच, भार्ङ्गी इनको काढ़ा करि पीवे तो कर्णिक सन्निपात जाइ २७

## अन्य

मरिच दशमूल कटुका फलत्रय कणा महौषधोमिश्रैः भूनिम्ब युतः पीतः कर्णिकहन्ता भवेत्क्वाथः २८

॥ अर्थ ॥

मिर्च. दशमूल ( सरिवन १ पिथवन २ बड़ी भटकटैया ३ छोट भटकटैया ४ गुखरू बड़ो ५ वेल की जर ६ अँगेथुआ-अर्थात् अरन ७ टैंटू-अर्थात् सोयन की जर ८ खंभार की जर ९ पांडर की जर १० ) कुटकी आंरा, हर्र, बहेर, पीपर, सोंठ, चिरायता इन्हों के काढ़े से कर्णिक सन्निपात दूर होता है। ( तथा च जोंक आदिकों से कर्णमूल की गांठ को रक्त निकालना चाहिये ) २८

## कर्णमूल पर लेप

॥ श्लोक ॥

इगुदि निशा विशाला सैन्धव सुरदारु कुष्ट रवि दुग्धैः। दत्तः क्रमेण लेपो हरति महाकर्णग्रन्थिम् २९

॥ अर्थ ॥

इंगुवा का गाभ, हरदी, इंडोरन, सेंधानोन, देवदारु, कूट इनको महीन पीस अकवन के दूध से लेप करै तो प्रवल कर्णमूल को दूर करै २९

## अन्य

॥ श्लोक ॥

दशशतकदुग्धं पुष्कर स्नुक् समंगा दहन कुटज कुम्भी कुष्ठ कासीस युक्तम् ॥ अपनयति वितीर्ण लेपन सप्तवारात् श्वयथुहरणमेतत् कर्णिकंग्रन्थिजातम् ३०

॥ अर्थ ॥

अकवन का दूध, पुहकरमूर सेंहुड़ का दूध मजीठ कुरैया की छाल पाँड़र, कूट हरा कासीस, इनका लेप बनाय सातबार लेपन करने से बहुत सूजा भया कर्णमूल शीघ्र नष्ट होता है ३०

## अन्य

॥ श्लोक ॥

रविदुग्धचक्र पुष्कर दन्ती गुड़ दहन कुष्ट कासीसैः ॥ अपनयात कर्णकरुजं लेपोऽयं सप्तरात्रेण ३१

॥ अर्थ ॥

अकवन का दूध, घमोय की जर, पुहकरमूर, दांतुन, गुड़, चितावर, कूट, कासीस, इन्हों का लेप सात रात में कर्णमूल को हरै ३१

## अन्य

॥ श्लोक ॥

दन्ती चित्रकयोर्मूल स्नुगर्कपयसा गुडैः ॥ भल्लातकास्थि कासीसलेपो भिन्द्याच्छिलामपि ३२

॥ अर्थ ॥

दांतुन की जर चीते की जर, गुड़ भिलवां की गुठली, कौसीस, इन को सेंहुड़ और अकवन के दुध से लेप करै तो पत्थर को फोरै कर्णमुल की बात ही क्या है । ३२ ॥ इति कर्णिक ॥

## ( अथ भुग्नदृक् सन्निपात )

॥ श्लोक ॥

ज्वर वलोपचयस्मृतिशून्यता श्वसन भुग्नविलोकन मोहता ॥
प्रलपनभ्रमकम्पन शोफवान् त्यजित जीवित माशु सु भुग्नदृक् ३३

॥ अर्थ ॥

ज्वर के वल को बढ़ना स्मरण शक्ति न रहना श्वास टेढ़ी निगाह अचेतपन प्रलाप ( बकबाद ) भ्रम कंप सूजन इनलक्षणों से भुग्नदृक् सन्निपात होता है और जीवन को शीघ्र नष्ट करता है ३३

## ( उपाय )

॥ श्लोक ॥

दार्व्यंम्बुदस्तिक्त फलत्रिकं च क्षुद्रा पटोली रजनी च निम्बः ॥
क्वाथं विदध्याज्ज्वर सन्निपात निश्चेतने पुंसि विवोधनार्थम् ३४

॥ अर्थ ॥

दारुहरदी, मोथा, चिरायता औरा, हरै, बहेर भटकटैया, परवर, हरदी नीम इनको काढ़ा सन्निपात ज्वर से अचेत मनुष्य को देने से सचेत करै और भुग्नदृक् सन्निपात दूर होइ ३४

## ( अन्य उपाय )

॥ श्लोक ॥

पथ्या पटोल कटुका घन निम्ब सुर ह्व धान्यकैः ॥ क्काथः पीतो निहन्ति मोहम्पित्तज्वरसन्निपातोत्थम् ३५

॥ अर्थ ॥

हर्र, परवर, कुटकी मोथा, नीम देवदारु, धनियां, इनको काढ़ा पीने से पित्तज्वर सन्निपात से पैदा भया मोह (बेहोशी) दूर होती है ३५

## ( अन्य उपाय )

॥ श्लोक ॥

भूनिम्ब माक्षिक कणा सहितं च कुर्य्यात् लेहं कणोषणरसोन शिलालकैश्च ॥ नेत्राञ्जनं च लवणोत्तमपिप्पलीभ्यां नस्यं बचामरिच विश्व मधूकसारैः ३६

॥ अर्थ ॥

चिरायता, पीपर छोट, इन दोनों को सम भाग बांटि सहत से अवलेह बनाय खाय + और पीपर मिर्च, लहसुन, मनसिल, इन्हों का अंजन बनाय नेत्रों में आंजै + तथा सेंधानोन, पीपर बच, मिर्च, सोंठ, महुवा का सार, इनकी नास लेइ + तो इन उपायों से भुग्नदृक् सन्निपात जाय ३६

## ( तथा और नास )

मिर्च. असगंध. पोपर. सेंधानोन. लहसुन, बच, आद, इनको बकरा के मूत से पीस कर सुखै कै नास देइ तो भुग्नदक् सन्निपात जाय ॥

इति भुग्नदक्

## ( अथ रक्तष्ठीवी के लक्षण )

॥ श्लोक ॥

रक्तष्ठीवी ज्वर वमि तृषा मोह शूलातिसारो हिक्का ध्मानभ्रमण दवथु श्वास संज्ञा प्रणाशः ॥ श्यामा रक्ताधिगतरसना मण्डलोत्थान रूपो रक्तष्ठीवो निगदित इति प्राणहर्ता प्रसिद्धः ३७

॥ अर्थ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

× रक्तष्ठीवी सन्निपात के लक्षण कहते हैं ×

ज्वर वमन पियास बेहोशी शूल अतीसार हिचकी पेट का फूलना भ्रम दाह श्वास ज्ञान भ्रष्टता श्याम तथा रक्त से लिहसी जीभ का होना लाल चकत्ते पड़ना ( जैसे कि बरैया के काटने से होते हैं ) मुँह से रक्त थूकना इन लक्षणों से रक्तष्ठीवी नाम का सन्निपात कहा जाता है और यह प्राण हरने वाला प्रसिद्ध है ३७

## ( तिसपर उपचार )

॥ श्लोक ॥

पर्पट धन्वयवासा भूनिम्बकः कटुका फलनीभ्याम् ॥ शर्करया सहितोपि कषायो लोहित मास्यगतं खलु हन्ति ३८

॥ अर्थ ॥

पित्तपापरा धमासा, चिरायता. कुटकी प्रियंगु ( फलिनी ) इनके काढ़े में सक्कर ( काढ़े से आठवां हिस्सा—क्यों कि रक्तष्ठीवी सन्निपात में पित्ताधिक होता है । और लिखा भी है कि- क्वाथे दिपेत् सिता माषै श्चतुर्थाष्टमषोड़शैः । वातपित्तकफाधिक्ये विपरीते मधु स्मृतम् ॥

॥ अर्थ ॥

काढ़े में सक्कर अधिक वात होने में चौथवां हिस्सा पित्त अधिक में आठवां हिस्सा कफ अधिक में सोलहवां हिस्सा डारै विपरीत दशा में शहत डारनो चाहिये ) डार कर पीवै तो रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर होता है ३८

## ( और उपाय )

॥ श्लोक ॥

जलदाह्वय पद्मक पर्पटकै र्मलयोद्भव जाति वरी मधुकैः ॥ मधु निम्ब जलारुण चन्दनकैः क्वथितं मुखरक्तहरं शलिलम् ३९

॥ अर्थ ॥

मोथा, पदमाख, पित्तपापरा. चन्दनसपेत, चमेली. सतावर, मुलेठी नीम. नेत्रवाला, लालचन्दन, इन्हों के काढ़े में शहत डार कर पीवै तो घोर मुख से रक्त गिराने वाला रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर होइ ३९

( इति रक्तष्ठीवी सन्निपात )

## अथ प्रलापक सन्निपात लक्षण

॥ श्लोक ॥

कम्प प्रलाप परितापन शंखपीड़ा शोफ प्रयास पवमानखराङ्गता च ॥ संज्ञाप्रणाश विकल प्रचुर प्रवादः क्षिप्रं प्रयाति पितृपालपदं प्रलापो ४० ॥

॥ अर्थ ॥

कंप बेहोशी की बात सन्ताप कनपटी में पीड़ा सूजन परिश्रम होना श्वास अंगो की जड़ता अचेतपन विकलता बहुत बक करना इन लक्षणों से प्रलापक सन्निपात जानना सब लक्षण मिलने से यमराजपुर को शीघ्र पहुंचाता है ४०

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## ताको उपचार

॥ श्लोक ॥

सगर तुरगगन्धा पर्पटैः शंखपुष्पी त्रिदशविटपतिक्ता भारती भूतकेशी ॥ जलधर कृतमालै श्वेतकी गोस्तनीभ्यां सच हरति कषायः पानतोयं प्रलापम् ४१

॥ अर्थ ॥

कूट, असगन्ध, पित्तपापरा, सखोली, देवदारु, कुटकी, गुम्मीठर्रा, निर्गुंडी, मोथा, किलवार, हर्र, दाख, इन्हों के काढ़े के पानी पीने से प्रलापकसन्निपात दूर होता है ४१

## अन्य उपचार

॥ श्लोक ॥

जलधर दशमूलं वारि शुंठी समेतं मलय घन मुशीरं पर्पटं वासकं च सम धरण धृतानां क्वाथशेषं च कार्यं शमयति खलु शीघ्रं पीतमत्रं प्रलापम् ४२

॥ अर्थ ॥

मोथा, दशमूल (पहिले लिख आये हैं) नेत्रवाला, सोंठ, चन्दन सुपेत, मोथा, (दो वार पाठ में आने से दूना डारना) खस पित्तपापरा अरूस, इनको सम भाग करि काढ़ा पीने से बहुत शीघ्र प्रलापक सन्निपात जाता है ४२

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## ( अथ जिह्वक लक्षण )

॥ श्लोक ॥

श्वसन कास परिताप विह्वलः कठिन कण्टक सम्वृत जिह्वकः ॥ वधिर मूक वल हानि जागरः भवति कष्टतरः खलु जिह्वकः ४३

॥ अर्थ ॥

श्वास खांसी तपन व्याकुलता जीभ में कठोर कांटे होना बहिरापन साफ बोल न निकलना कमजोरी आंख न लगना इन लक्षणों से जिह्वक सन्निपात होता है यह कष्ट साध्य है ४३

## उपाय

॥ श्लोक ॥

शुकतरु कटुनिम्बै रक्त पथ्या पटोली रजनि युगल विश्वा सिंहिका पुष्कराह्वः ॥ शलिल धर गुडूची संयुतः सर्व मेभिः प्रशमयति कुतोऽयं जिह्वकं कष्टसाध्यम् ४४

॥ अर्थ ॥

शिरसा की छाल, कडू नीम बहेर, हर्र, परवर, हरदी दारुहरदी अतीस भटकटाई पुहकरमूर मोथा गुरिज इन्हों के काढ़े से कष्ट साध्य जिह्वक सन्निपात दूर होता है ४४

## अन्य उपाय

॥ श्लोक ॥

निर्गुंडी पिचुमन्द कुष्ट विजया कर्पास सिद्धार्थकैः षड्ग्रन्था तगरामरेन्द्र गुरुभि मार्त्तंण्डमूलान्वितैः ॥ फालत्रिफयकरञ्जमाल्य सहितै र्मध्वासवै र्मोदितै र्धूपोऽयं ग्रह सन्निपात मचिरात्पीडां निषेधत्य हो ४५

॥ अर्थ ॥

निर्गुंडी, नीम, कूट, भांग, कपास के विनौले, सपेत सरसों, बच तगर देवदार, अगर, अकौवा की जर, त्रिफला करील के फूल, इनको मदिरा से सुगंधित कर धूप देने से सन्निपात भूत प्रेत पिशाचादि शीघ्र दूर होते हैं ४५

## ( लेप जीभ पर )

राई मिर्च, सेंधानोन, बिजौरा नींबू का रस इनको १ शुद्ध करू तेल में फेंट जीभ में लेप करने से जिह्वक के कांटे दूर होकर जीभ मुलायम होती है ॥

( इति जिह्वक )

Indira Gandhi National Centre for the Arts

१ नीबू की पत्ती डार करू तेल पकाने से शुद्ध होता है।

## ( अथ अभिन्यास )

॥ श्लोक ॥

दोषत्रयस्निग्धमुखत्व निद्रा वैकल्यनिश्चेतन नष्टवाचः ॥ बल-प्रणाशः श्वसनादिविड्ग्रहोऽभिन्यास उक्तः खलु मृत्युकल्पः ४६

॥ अर्थ ॥

तीनो दोषों से मुख में चिकनाई रहना झाप का लगना विंक-लता बदहोशी वाणी बन्द होजाना वल का नाश श्वास मल का अवरोध इन लक्षणों से मृत्यु करने में समर्थ अभिन्यास नाम का सन्निपात होता है ४६

## ( उपाय )

॥ श्लोक ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रामठ नागर सहितं भृङ्गरसं लेढ़ितः प्रातः ॥ अथ कटुतिक्तायुक्तं भवति मुखे शोधनं तस्य ४७

॥ अर्थ ॥

भुंजी हींग, सोंठ, इन दोनो को भमिरा के रस में सान प्रातःकाल चाटै। अथवा सोंठ, मिर्च, पीपर, गुरिज के रस से चाटै तो अभिन्यास सन्निपात में मुख की लिहसाहट दूर होती है। ४७

## ( अन्य उपाय )

॥ श्लोक ॥

मरिच लवणकृष्णा भूतकेशी मधूकैः मृदुलमति मृदित्वा कोष्ण नीरेण नस्यम् ॥ प्रशमयति विकीर्णं श्चाष्टभि र्वा चतुर्भिः सकल करणवोधं विन्दुभि र्दीयमानैः ४८

॥ अर्थ ॥

मिर्च, सेंधानोन, पीपर, निरगुंडी महुवा का सार, इनको खूब महीन पीस कर गरम जल से चार या आठ बूँद के नास लेने से सब इन्द्रियां जाग उठती हैं और अभिन्यास दूर होता है ४८

## ( अन्य उपाय )

॥ श्लोक ॥

लसुन मरिच कृष्णा मानमंथोग्रगन्धा शुकतरुफल वोजैः स्राजगो-मूत्रपिष्टैः॥ कफपवनविकारे सत्वसञ्ज्ञाप्रबोधं गदित मगदविद्भि नेंत्रयोरञ्जनञ्च ४९

॥ अर्थ ॥

लहसुन मिर्च, पीपर, सेंधानोन, बच, सिरसा के बीजा, इन्हों को बकरी और गाय के मूत से पीस अंजन तयार करे यह अंजन कफ वात के विकार में वैद्यों से तत्काल होश पैदा करने वाला कहा गया है ४९

## ( अन्य उपाय )

॥ श्लोक ॥

संज्ञा यस्य न जायते चरणयो र्द्वंद्वे समादह्यते भाले लोहसला-कयापि निकृते सर्वक्रिया कर्मणि ॥ शृंगी धन्वयवासपुष्कर हटा भार्ङ्गी सटी सिंहिका क्वाथः पानविधानतः कफहरोऽभिन्यास-विध्वंसकः ५०

॥ अर्थ ॥

यदि अनेक उपाय करने पर भी होश न होय तो लोह की शलाका से दोनो पांव के तलुओं में या माथे में दाग देना चाहिये तो होश आता है। ककरासिंघी, धमासा, पुहकरमूर, जटामासी, भारंगी, कचूर, भटकटाई, इनके काढ़े को पीने से कफ और अभिन्यास सन्निपात दूर होता है ५०

## ( अन्य उपाय )

॥ श्लोक ॥

मंजिष्ठा गिरिं विल्वमूलक सटी सुंठी करंजो निशा त्रायन्ती बृहती वृषोषणकणा काथं च पेपीयते ॥ यः प्रातः प्रणिधाय लक्षित-पदं वैद्योत्तमं सन्निधौतस्यापि प्रशमं प्रयान्ति सहसा सर्वें ज्वरा व्याधयः ५१

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

॥ अर्थ ॥

मजीठ कुरैया, बेल की जर कचूर, सोंठ कंजा, हरदी, त्रायमाण, भटकटाई अरूस मिर्च पीपर, इनके काढ़े को जो पुरुष निदान वेत्ता वैद्य को समीप बिठार कर पीता है तिसके बहुत जल्दी सब प्रकार के ज्वर रोग शान्त होते हैं ५१

## ( अन्य उपाय )

॥ श्लोक ॥

सुरभिशलिलयुक्तः सिंहिका श्रीफलाभ्यां परमलवण पाठा विश्व पाषाणभेदैः ॥ पवन रिपुजटाभि स्संयुतः काथ मेव प्रतिदिन-मपि पीतो हन्त्यभिन्यास शूलम् ५२

॥ अर्थ ॥

भटकटाई. बेल सेंधानोन. पाढ़ो, सोंठ. पाषानभेद. अंडा की जर इन्हों के क्वाढ़े में गोमूत्र तोला भर ( प्रमाण-क्षीरं गुडं घृत तैल मूत्रं चान्यद्रव तथा ॥ कल्कं चूर्णादिकं क्वाथे निक्षिपेत् कर्ष संमितम् ॥ अर्थात् दूध गुर, घो. तेल मूत और भी पतले पदार्थ कल्क चूर्ण आदि काढ़े में १ तोला छोड़ना चाहिये ) डार कर पीवे तो अभिन्यास का शूल दूर होइ ॥ ५२

( इति अभिन्यास )

( इति त्रयोदश सन्निपात सनिदान चिकित्सा )

× अब तेरहो सन्निपातों की मर्यादा लिखते हैं ×

॥ श्लोक ॥

सन्धिके सप्तदिवस मन्तके दश वासरम् । रुग्दाहे विंशति ज्ञेयं षट् त्रिकं चित्तविभ्रमे ५३ शीतांगे पक्ष मेकं तु तांद्रिके पंच विंशतिः । विज्ञेया वासरा श्चात्र कंठकुब्जे त्रयोदश ५४ कर्णिके तु त्रयो मासा भुग्ननेत्रे दिनाष्टकं । रक्तष्ठीवी दशाहानि चतुर्दश प्रलापकः ५५ जिह्वके षोडशाहान्यभिन्यासे पक्षसंख्यकः । परमायुरिति प्रोक्तः तदर्वाग् वा मृति र्भवेत् ५६

॥ अर्थ ॥

सन्धिक सात दिन अन्तक दश दिन रुग्दाह बीस दिन चित्तभ्रम नव दिन शीतांग पन्द्रह दिन तांद्रिक पच्चीश दिन कंठकुब्ज तेरह दिन कर्णिक तीन महीना भुग्ननेत्र आठ दिन रक्तष्ठीवी दशदिन प्रलापक चौदह दिन जिह्वक सोरह दिन अभिन्यास पन्द्रह दिन इस प्रकार तेरह सन्निपातों की मर्यादा है मर्यादा के अनन्तर मृत्यु संकट होता है ॥ ५३ । ५४ । ५५ । ५६

( यह तेरह सन्निपातों की मर्यादा लिखी गई )

( अब तेरहो सन्निपातों के रहने के स्थान )

॥ श्लोक ॥

सन्धिकः सन्धिदेशेषु उदरे चान्तकस्तथा ॥ रुग्दाहो नाभिमूले च शीतांगः कुक्षि मध्यके ५७ तान्द्रिको हृदये स्थाने कंठकुब्जः स्वरे तथा ॥ कर्णिकः कर्णमूले तु भुग्ननेत्रश्च नेत्रयोः ५८ रक्तष्ठीवी गुदे प्रोक्तः मुखे चैव प्रलापकः जिह्वको रसनायां च नाभौ चित्तभ्रमस्तथा ५९ सर्वदेहे त्वभिन्यासः स्थानदेशाः प्रकीर्तिताः

॥ अर्थ ॥

हड्डियों के जोड़ों में सन्धिक नाम सन्निपात बसता है। पेट में अन्तक सन्निपात बसता है। गूदी के जड़ में रुग्दाह रहता है। कोख के बीच में शीतांग। हृदय में तांद्रिक। आवाज में कंठकुब्ज। कान की जड़ में कर्णमूल। नेत्रों में भुग्ननेत्र। गुदा में रक्तष्ठीवी। मुख में प्रलाप। जीभ में जिह्वक। गूदी के बीच में चित्तभ्रम। सब देह में अभिन्यास। इस भांति तेरह सन्निपातों के रहने के स्थान कहे हैं ५७। ५८। ५९।

## सन्निपातों में पसीने का उपचार

॥ श्लोक ॥

मरिचं पिप्पली सुंठी पथ्या लोध्रं सपौष्करम् ॥ भूनिम्बः कटुका-जाजी यवानी कट्फलं तथा ६० कुलत्थं समभागेन सूक्ष्मचूर्णं च कारयेत् ॥ प्रस्वेदं कंठरोधं च सन्धिपीडनकं हरेत् ६१ एतच्च धूलनं श्रेष्ठं सन्निपातहरं परम् ॥

॥ अर्थ ॥

मिर्च, पीपर सोंठ हर्र, लोध, पुहकरमूर, चिरायता कुटकी, जीरा, जवायन, कैफरा कुरथी सम भाग से चूरन करै यह धूरन शरीर में मलने से पसीना कटरोध जोड़ों का दर्द जाय और सन्निपात दूर करने में अधिक श्रेष्ठ है ६० । ६१

## अन्य

॥ श्लोक ॥

कट्फलं जीरकं व्योषं सैन्धवं कृष्णजीरकम् ॥ धूलनं वचया युक्तं प्रस्वेदादिनिवारणम् ६२

॥ अर्थ ॥

कैफरा जीरासपेत, सोंठ, मिर्च, पीपर सेंधानमक, जीरास्याह, बच, इन्हों का धूरन सन्निपात के पसीने आदि उपद्रव दूर करता है ६२

## सब प्रकार के सन्निपातों पर काढ़ा

आक की जर, जवासा, चिरायता देवदारु, रासन बच, अरण (इमी) सहिंजन, पिपरामूर, पीपर छोट, चाव चितावर, सोंठ, अतीस, घमिरा, जैत के बीज, इनको सम भाग से काढ़ा सब प्रकार के सन्निपात जिसमें देह धनुषाकार होजाय ऐसा वात रोग दन्तों का बांधना अंगों में अधिक शीत प्रस्वेद बढ़ा भया श्वास खांसी आदिकों को तथा प्रसूता स्त्री की वातव्याधि को नष्ट करै ॥

## अन्य

हर मोथा, धनियां लाल चंदन पदमाख अरूस इन्द्रजौ, गुरिज, अमलतास, पाढ़ी, सोंठ सम भाग से मौताद १। भर का काढ़ा करै पीपर छोट मासा १ पीस कर मिलाय पियावे तो त्रिदोष पियास दाह कास श्वास प्रलाप तन्द्रा दूर होइ दीपन पाचन है ॥

## अन्य अष्टादश क्वाथ

चिरायता कुटकी मोथा, धनियां, इन्द्रजौ, दशमूल देवदारु, सोंठ, गजपीपर, मौताद १। भर को काढ़ा पार्श्वशूल सन्निपातज्वर कास श्वास तन्द्रा छाती के पीड़ा को दूर करै यह अष्टादश क्वाथ उत्तम है अठारहो औषधि सम लेना ॥

## सब सन्निपातों की विशेष मर्यादा

॥ दोहा ॥

सतयें दशयें बारहें, तेरह पन्द्रह मांहि।
छूट जाय अथवा बढ़े, मारै रोगी कांहि ॥

अब सन्निपातों में वैद्यों के उपकारार्थ कुछ रसक्रिया दिखाते हैं + कम कीमत बालानशीन की कहावत घटित करते हैं + )

## संखिया की क्रिया

सपेत संखिया ॢ- भर गाय का दूध पांच सेर में दोला

---

१ पोटली में बांध करि भँड़िया में लटकाय स्वेदन करने को दोलायंत्र कहते हैं।

यंत्र से शोधै मन्द आंच में तीन दिन यदि दूध कमती परै तब और छोड़े रात में आंच से अलग कर लिया करै आंच मंदी बंडे की राखै इसी भांति बड़ी गुखरू के रँग में तीन दिन शोधै फिरि छिउले को राख परई के तरे धरै तेहिके ऊपर संखिया के टुकरा और सेंधानोन के टुकरा दूनौ बराबर कै कै धरै फिरि ऊपर ते राख धरै ताके ऊपर दूसर परई ओर कै कपरौटी करै १ हांथ के गड्ढा में धरि फूँक देइ भस्म होइ बूँकि डारे खुराक १ चाउर श्यामा तुलसी मिर्च के साथ कोई सन्निपात होइ दूर होइ अनुपान के साथ देने से सब रोगों में चलता है यह रस प्रसिद्ध है ॥

## संखिया की दूसरी विधि

सपेत संखिया को भूरा कुम्हड़ा के रस में दोला यंत्र से तीन दिन मन्द मन्द पचाय शोधै ( ऊपर लिखे माफक ) फिर तीन दिन घीगुवांर के रस में घोंटे पुनः एक दिन नारी[1] के रस में घोंटे फिर टिकिया बनाय घी में चुरै लेइ आधी घरी पंच कै घी से पोंछि बूँक धरै खुराक १ चावल अनुपान से सन्निपात जाय और अनुपान बदल २ सब रोग में देइ ॥

---

१ यह एक प्रकार की बेलि शरद ऋतु में तालाबों पर छैलती है फूल सफेद होता है लोग इसकी तरकारी बनाते हैं। यदि कोई संखिया कच्चा खालिया हो तो इस बेल के रस पिलाने से विष शान्त होता है ॥

## संखिया की तीसरी विधि

सुमिल २) पारा १) घोंटि कै नोन ५। आधा तरे आधा ऊपर धरि एक नदवा में संपुट करि कपरौटी दृढ़ करै कंडा दश पंद्रह सेर की आंच देइ नोन समेत रस भयो ताके गुण सन्निपात कफ बात को नाश करै क्षुधा बढ़ावे बल करे। ( यह बिधि महन्त दयारामदास जी की है )

## संखिया की चौथी विधि

सुमिल ८) गाड़र का दूध १६) कराही में डारि कै चढ़ावे नीचे तीन नकरी ( पतली छड़ी माफक ) की आंच देय सो सुमिल बिथर कै दूध के ऊपर छुतना हो रहत है ताको पैंच लेइ दूध फेंक देय संखिया गाड़रके दूध में घोंटि कै गोली बनाय लेइ फिर चिरचिरा की राख आधी गगरी भरै संखिया की गोली धरै ऊपर ते फिर चिरचिरा को राख दाब के भर देइ नकरी एक खोंस देइ चूल्हे में चढ़ाय नीचे आग बारै जब ऊपर की नकरी जरि उठै तब पैंच लेइ शीतल भये पर तिल मात्र खाय आद पीपर से सन्निपात जाय अनुपान से सब रोग जांय २१ दिन के खाये नामरद मरद होइ ऊपर से दूधु घी खाय कई बार अजमाई है ॥

## संखिया की पांचवीं विधि

संखिया की डली दरखत में लगे हुए अनार के फल को डली भरे को कोलि संखिया की डली भर देइ ऊपर फल का कोला हुआ कूर भी भरे और कपरौटी कर देइ एक दिन रात बन्द रहै

फिर प्रभात पेंच कर डली दूसरे फल में करै और वह फल टोर कर जमीन में गाड़ देइ इस भांति ४९ फलों में यही क्रिया करें अनार के दरखत चार छै होंय एक ही पेड़ में यह क्रिया की जायगी तो पेड़ सूख जायगा पंचास फलों की क्रिया से संखिया शुद्ध खाने योग्य होजाता है सब रोगों पर चलता है सन्निपात में तो अवाच्य को भी बुलवा देता है नामर्दी वादी आदिकों में बहुत उत्तम है येह भस्म की अपेक्षा ताक़तदार है प्रत्येक रोग में वैद्य बुद्धि बल से अनुपान कल्पना कर लेवै ॥

## संखिया की छठवीं विधि

Indira Gandhi National Centre for the Arts

संखिया सफेद २) निसोदर (६) चूना सीपी का २) (सीपियों को जलाकर चूना बना ले) सोरा कलमी २) सोहागा २) सब चीजों को खरल करि आठ तोला आक के दूध में घोटै फिर टिकिया बांधि सुखै करि सराव सम्पुट सात कपड़ मिट्टी से दृढ़ मुद्रा करि ढाई सेर उपलों में फूंक दे शीतल होने पर निकाल ले। खुराक आधी रत्ती से १ रत्ती तक अनुपान से दे। गुण-नया पुराना ज्वर सुजाक उष्णवात फिरंग आतशक उपदंश गठिया अर्धांग व सर्वांग वायु शूल सब प्रकार के सन्निपात तथा अन्य वात व कफ सम्बन्धी रोग निमोनिया आदि सर्व रोगों में जादू सा असर करता है बलाबल देख विचार कर अनुपान व खुराक की कल्पना करे यह सिद्ध प्रयोग है। तथा सहस्रशः अनुभूत है ॥

## संखिया की सातवीं विधि

संखिया १) भर की डली ले एक शराब में कल्लर ( नोना-जो पुरानी दिवालों से झरता है यह बढ़िया होना चाहिये ) ४) भर नीचे बिछावे और संखिया की डली रख दे फिर ऊपर से कल्लर ( नोना ) ४) बिछावे ऊपर से दूसरा शराब धर कपड़ मिट्टी इकहरी करे और एक हांडी में पीपर की राख आधी नीचे रख कर उस सरवे के संपुट को धरि ऊपर से फिर पीपर की राख भर दे दाब कर फिर चूल्हे पर चढ़ाय एक पहर तेज आंच दे संखिया की डली फूल जायगी शीतल होने पर निकाल ले। खुराक १ चावल से १ रत्ती तक गुण नवीन या जीर्ण ज्वर आतशक शूल फिरंग वाय आदि समस्त रोगों में उपयोगी है। शूल चाहे जैसा हो त्रिकटु भूंजी हींग के साथ देने से शीघ्र दूर होता है। अनुपान द्वारा सब रोगों में प्रभाव शाली है।

## संखिया की आठवीं विधि

संखिया १) भर ले भस्म पलाश ८ तो० प्रथम एक शराब में ४ तो० पलाश की राख बिछाकर उस पर संखिया की डली रख दे फिर ऊपर से ४ तो० पलाश की राख बिछा कर दबा दे और दूसरे शराब से ढांक कर सप्त कपड़ मिट्टी कर बारह सेर जंगली कंडों में रख कर फूंक दे। मात्रा १ चावल है। गुण-कमजोरी चाहे किसी कारण से क्यों न हो १ सप्ताह में दूर करता है, ताकत बाद को बढ़ाता है, अन्य २ रोगों में अपनी बुद्धि के अनुसार उपयोग कर

## संखिया की नवीं विधि

संखिया ७) भर ले सिंदूर ८ तो० लेकर एक करछुले में सिंदूर ८ तो० रख बीच में संखिया को डली रख दे और करछुले को कोयलों की आग पर धरे जब संखिया फूल आवे तब निकार ४ तो० थूहर के दूध में रगड़े सूखने पर मिट्टी की प्यालियों में बन्द कर ≤२॥ सेर आरने उपलों की आग दे शीतल होने पर निकाल ले। खूराक १ चावल।

गुण-दूध या मलाई से निगले कुष्ट पर अमृत के तुल्य है ऊपर से दूध ≤॥ पिये वमन विरेचन खूब होगा घबड़ावे नहीं वायु धूप से रक्षा करे ४० रोज औषधि का प्रयोग करे चने को रोटी घी खाने को दे प्रथम रेचन बहुत होता है फिर दस्त कम होजाते हैं। नमक मीठा ४० रोज देना विष तुल्य है गले हुए कुष्ट रोगी भी अच्छे हुए हैं परन्तु दूसरे तीसरे दिन नस्य कर्म जरूर कराता रहे। कुष्ट में तो यह अमृत है। शेष रोगों में भी बुद्धिके अनुसार देना चाहिये॥

## संखिया की दशवीं विधि

संखिया १) बड़े बिजौरा नीबू के रस में घोंट टिकिया बांधे सूखने पर आक को दूध लेप करै सुखाकर १ आक के पत्ते में लपेट कर बिजौरा नीबू के अन्दर बन्द कर कपड़ मिट्टी करके सूखने पर ≤२ सेर आरने उपलों की आंच दे शीतल होने पर निकाल कांच की मोटा शीशी में रक्खे खुराक १ चावल।

गुण-जलोदर तथा वायु सम्बन्धी रोगों में रामबाण है जलोदर में इसको दूध से प्रयोग करे रेचन द्वारा जलोदर नष्ट करता है

शूल में त्रिकटु लहसुन आदि से देवे अन्य रोगों में भी अनुपान विचार कर दे॥ (हे वैद्यो ? ये मेरे अनुभूत प्रयोग अजमाइये मैंने वर्षों के श्रम से इन्हें प्राप्त किया है। और सब प्रयोगों में संखिया सुपेत ही लेना)

## कांतीसार की विधि

कान्ती लोह रेता भया ८) गंधक औंरासार ८) सोरा कलमी ८) घोंटि सराव सम्पुट करि कपरोटी करिकै गजपुट आंच देइ फेर थोड़ कै हलकी आंच देइ खासो कान्तीसार तैयार होइ खुराक १ रत्ती अनुपान ते सन्निपात कफ वात आदि रोग हरै। यह विधि स्वामी अनन्तदास जी की है)

## मानिक रस

औंरासार गंधक १) पारा १) मनसिल १) सीस १) सोनामाखी १) ये सब अरूस अथवा पान के रस ते घोंटि घुकरी में संपुट करि आंच देइ तौ मानिक रस तैयार होइ मात्रा आधी रत्ती अनुपान ते सन्निपात कफ श्वास कास जाय अति बल पुष्टि को करै (यह क्रिया बाबा दयाराम जी)

## हरतार विधि

तबकिया हरतार ४) अंडी की बीजी को पीठी १६) ताके भीतर हरताल धरि गोला बनावै ताके ऊपर अंडी के तेल में फीहा बोरि बारि देइ जब जरि जा तब फेर याही तरा आँच और देइ तौ इंगुर माफक रंग होइ सो चाउर भर खाये ते सन्निपात कफ विकार और रक्तविकार आदि दूर होइ।

## हरतार की दूसरी विधि

तबकिया हरताल ४) छिकनी बूटी ४) भोड़र के पत्र दुइ लै आवै एक पत्र में उरिद की पीठी की मेंड़ बांधै ताके भीतर छिकनी आधी भरे तापर हरतार बिछावे ऊपर से फिर छिकनी बिछाय दूसर भोड़र पत्र चपकाय देइ कंडा पथौवा २० में फूंक देइ तो हरतार फिर कै पपरी होजाता है ईंगुर के रंग होत है ताके खवांये ते सन्निपात १३ कुष्ट १८ आराम होंइ ( यह विधि एक अवधूत की )

## हरतार की तीसरी विधि

हरतार २) खारी २) सुहागा १) खारो नोन सुहागा पीस धरै फेर भोड़र के पत्र में आधा खारी सुहागा बिछाय हरतार धरै फिर ऊपर से खारी सुहागा धरि दूसर भोड़र पत्र लगाय उरद की पीठी से बन्द करै नाद में कंडा दश सेर के बीच धरि आंच देइ सिद्ध होइ रत्ती मात्र खाये ते सन्निपात जाय और अनुपान ते सब रोग जांय ।

## हरतार की सफेद भस्म

तबकिया हरतार में आक के दूध से घोंट २ सात भावना देइ फिर पीपर की छैलिन कै राख करै खपरिया या करहिया में राख दाब कै अधवारे लगि भरे हरतार की टिकिया धरे फिर ऊपर ते राख दाब के भर देइ चूल्हे में चढ़ाय बेगी को लकरी या छिउले की लकरिन कै आंच पहर चार की देइ जब राख के ऊपर हांथ धरे न रहि जाय तब स्वांग शीतल करि अनुपान ते देइ सन्निपात कफ श्वास कुष्टविकार आदि सब दूर होंइ ॥

## अभ्रख क्रिया

श्यामा भोड़र (जो कि आग में धरने से फूलता न हो) को जब कूट करकै आक के दूध में घोंट गजपुट आंच देइ इसी प्रकार आक दूध में घोंट २ सात बार आंच देइ फिर बरोह के स्वरस से तीन वार गजपुट आंच देइ फिर कवाई की पाती के रस से घोंट गजपुट देइ १ बार तो चन्द्रा रहित उत्तम अभ्रख बनता है अनुपान १३ सन्निपात जांय ॥

## सुपेत अभ्रख की क्रिया

श्यामा भोड़र को दूध में शोधै फिर जब कूट करि १०) रु० भर लेइ ताका छिरका ४०) रु० भरे में भिजवै दिन ४० पुनः शुद्ध पारा २) भर बंबुर के फूल ४) भर दोनों घोंटि एक गोली बनावै और छिरका एक लकरी से रोज चलावै जब चालिस दिन में तीन दिन बांकी रहैं तब पारा की भी गोली वही छिरका में डारै जब तीन दिन पूरे होकर चालिस दिन हो जांय तब सब खल में डारि घोंटै जब गढ़ा हो जाय तब टिकिया बांधै सराव सम्पुट में धरि गजपुट आंच देइ ऐंच कर छिरका में घोंटै दिन एक टिकिया करि उसी भांति आँच देइ इसीप्रकार पहिली आंच समेत कुल चार गजपुट आंच देइ तो श्वेताभ्रक सिद्ध होइ मात्रा १ रत्ती अदरख पीपर सहत से १३ सन्निपात दूर होंइ अरु पान में धरि खाय ताके गुण नेत्र के सब रोग जायँ, दिव्यदृष्टि होइ वात पित्त कफ को दूर करै रुधिर विकार बीस प्रमेह जांय नामर्द मर्द होइ या क्रिया अनुभूत है अति नीक है (रावणसंहिता से अनुवाद कीन है ॥)

## चन्द्रोदय रस

ईंगुर बड़ी फाल का २०) रु० भर मुरदासंख ५) भर गंधक औंरासार २५) भर इनको सूखा घोटै पहर एक फेर गुवांर पट्ठा के रस से घोंटै पहर २१ कपास के पत्ता के रस से घोंटै पहर २१ फिर बँगला पान के रस से घोंटै पहर ४ जब सूख जाय तब आतसी शीशा में भरि बालुकायत्र को आंच देइ पहर २ कंडा की फिर १८ पहर चैला की जब शीशी की नली लाल रंग की दीखै तब उतार लेइ शीतल भये पर निकासै चन्द्रोदय होइ चोखा आद पीपर सहत से सन्निपात आय अनुपान ते सब पर चलत है ॥

## महा तामेश्वर

तामे के पत्र शोधि[१] कै ४०) भर पारा बजारू १०) भर गंधक १०) भर हरतार तबकिया १०) सखिया १०) इनकी कजरी करै फिर गुवांर अथवा नीबू के रस में चार पहर घोंटै फिर तामे के पत्र चार चार आंगुर के कंटक बेधी बनावै तिन में ऊपर की घोंटी चाजैं लेप करै तह बतह धरि कै डोरा से बांधि भूरा कुम्हड़ा कालि कै भीतर धरि कपरौटी ३ करि सुखै कै गजपुट आंच देइ भस्म होइ फेर घमिरा रस अथवा पान के रस से घोंटि कै पहर चार सरावसंपुट करि अर्ध गजपुट आंच देइ शुद्ध भस्म होइ मात्रा २ चाउर आद पीपर सहत से सन्निपात आय अनुपान ते सब रोग दूर होंइ यह उत्तम बनता है ॥

---

१ कंटक बेधी तामा के पत्र करा के गांय के मठा में कांजी में, गो मूत्र में कुरथी के काढ़े में तीन २ वार तपा के प्रत्येक में बुझानेसे ... होता है ॥

...

# आनन्द भैरव वटी

सोंठवड़ी २५ इंगुर[१] शुद्ध २५ पीपर छोट २५ सिंधिया[२] सुपेत शुद्ध २५ सुहागा भूंजा २५ सब खल में डारि आद के रस ते घोंटै दो घरी फिर गोली १ रत्ती की बांधै और पीपर सहत से सन्निपात जाय अरु अनुपान ते वात रोग कफ शीताङ्ग मूर्च्छा शूल जाय ॥

# ज्वरांकुश वटी

तबकिया[३] हरताल शुद्ध १। सिंधिया सुपेत शुद्ध १। दूनौ को खल में डारि करैला[४] का पातो के रस ते घोंटै चार घरी मूंग समान गोली बांधै अनुपान ते सर्वज्वर जांय मिश्री ते जूड़ी जाय (निमोनिया इन्फ्लुएन्जा) आदि पर उत्तम है ॥

# अन्य ज्वरांकुश वटी

पीपर छोट १। सिंधिया सुपेत शुद्ध १। दूनौ को गूमा के रस ते घोंटि एक रत्ती की गोली बांधै सहत तुलसीरस मिर्च के अनुपान से सर्व ज्वर जाय मिश्री ते जूड़ी शीत ज्वर जाय ॥

---

१ भेंड़ के दूध की अथवा नीबू या इमली के रस की सात भावना देकर घोंटने से इंगुर शुद्ध होता है। २ भैंसा के गोबर में डार चुरवै जब गांठ में सींक घुस जाय तब ऐंच कर दूध में चुरै लें शुद्ध भया ॥ ३ चूना के जल में चार पहर दोलायंत्र में हरताल को चूरन कर पोटली से बांध मंद आंच में पकाने से शुद्ध होता है।

४ इसको बनकरेला भी कहते हैं यह जंगल में बेलि छैलती है करु करेला के आकार के छोटे २ फल होते हैं।

## ( रामबाण वटिका )

सोठ १२ वायविरंग १२ पीपर छोट १२ बच खुरासानी १२ औंरा १२ हर्र १२ बहेर १२ गुरिज १२ भिलावाँ[1] शुद्ध १२ सिंघिया सुपेत शुद्ध १२ गोमूत्र ते घोंटि गोली रत्ती १ की बांधै आद सहत ते सब प्रकार के ज्वर कफ विकार कास श्वास जाय ॥

## ( ज्वर पञ्चानन वटी )

मनसिल[2] शुद्ध १। पीपर छोट १। नीबो के फल की मींगी १। बन करेली की पाती से घोंटै दो घरी मटर प्रमान गोली बांधै जैसा देखै तैसा अनुपान विचार कर देइ सब प्रकार के ज्वर निर्मूल होइ।

## ( ज्वरघ्नी वटिका )

लौंग २५ पीपर छोट २५ मिर्च २५ सुहागा भूँजा २५ जीरा सपेत २५ पिपरामूर २५ सौंठ बड़ी २५ ककरासिंघी २५ पाषाणभेद २५ जंगीहर्र २५ ये सब औषधें बूँकि छानि आद के रस से घोंटि गोली चना प्रमान बांधै सहत से सर्व ज्वर दूर होइ ॥

---

१ प्रथम भिलवां के मुख की ढेप काट कर धूर में घिस तेल दूर करै फिर भैंसा के गोबर में दो पहर चुरवै फिर साफ करके भीतर की मीगी निकार काम में लावे ॥ २ मनसिल गाय के मट्ठा में एक दिन खरल करै तो शुद्ध होता है।

## ( शीतांकुश रस )

लीलाथोथा[1] शुद्ध १२ सुहागा भूजा १२ पारा[2] शुद्ध १२ आँवलासार[3] गंधक शुद्ध १२ सुपेत सिंघिया शुद्ध १२ रसखपरिया[4] शुद्ध १२ हरतार शुद्ध १२ प्रथम पारा गंधक की कजरी करै फिर सब दवा कूटि एकत्र करि खल में वन करेली के रस से १ दिन घोंटै फिर गोला बनाय अंडा के पात में धरि लपेटै कपरौटी करि लघु पुट आंच देइ घोंटि धरि राखै एक रत्ती जीरा मिश्री से देइ सर्व ज्वर एकतरा इाहिक तिजारी चौथिया ज्वर जाय शीत ज्वर जाय शोत आदि ज्वर विकार दूर होइ। ( प्लेग हैजा में भी आजमाया है )

## ( ज्वर पूतना वटी )

आँवलासार गंधक शुद्ध १) रु० भर पारा शुद्ध १) सिंघिया सुपेत शुद्ध १) धतूर[5] के बीजा शुद्ध २) सोंठ ८) मिर्च ८) पीपर छोट ८) प्रथम पारा गंधक की कजरी करै फिर सब दवा बांटि एकत्र करि खल में आद के रस से घोंटि गोली दो रत्ती की बांधै आद के रस सहत से देइ सर्व ज्वर शीत वात कफ मलज्वर छूटै तिजारी चौथिया विषम ज्वर उदर व्याधि मिटै ॥

---

१ लीलाथोथा में दशवां भाग सुहागा मिलाय कबूतर का बीट बराबर डार कै घोंटै थोरा दही का तोर भी डार देइ फिर सराव संपुट करिपाँच छै कंडे में फूंक देइ शुद्ध भया ॥ २ ईंगुर का निकाला पारा खाने के प्रयोगों में शुद्ध रहता है ॥ ३ गंधक घी में पिघलाय तीन वार दूध में बुझाने से शुद्ध होता है ॥ ४ रस खपरिया को सात दिन गोमूत्र में या नरमूत्र में दोलायंत्र से पचावै तो शुद्ध हो। इसके अभाव में जस्ता की भस्म उत्तम है ॥ ५ गोमूत्र में १ दिन रखने से शुद्ध होता है।

## ( ज्वर भुजंगी वटी )

सुपेत संखिया २५ बन करेली के रस में भिजोवै पहर १ चार अंगुल रस ऊपर बनो रहै फिर चूल्हे पर धरि कै पकावै उफान दो आवें तब उतार कै सात बेर धोइ डारै फिर एक पहर तुलसी के रस में खरल करै बंगला पान के रस में १ पहर खरल करै पीछे मूंग प्रमान गोली बांधै गोली एक बतासा के साथ खाय ऊपर से दुध भात बतासा खाय सब प्रकार के ज्वर अवश्य छूटें संशय नहीं।

## ( विषम ज्वरघ्नी वटी )

गुरिज का सत ᐟ- सहत १। जंगी हर्र १) अफीम ॥) पीपर छोट १) मिर्च १) चिनो ᐟ- गोली ॥) भरे की बांधै सहत से खाय विषम ज्वर जीर्ण ज्वर दूर होइ ॥

## ( ज्वर दर्पघ्नी वटी )

संखिया सुपेत १ मासा कत्था सुपेत ८ मासा पीपर छोट ८ मासा चौराई के रस में घोंटि गोली बांधै मूग प्रमान गोली १ दूध भात के संग सब प्रकार के शीत ज्वर दूर होइ ॥

---

१ भूरा कुम्हड़ा की गटियां करके सेर भर पानी नाय हांड़ी में संखिया को दोलायंत्र करि चूल्हे में मंद आँच देइ दिन भर तो शुद्ध भया उसको यहाँ ग्रहण करै।

## ( ज्वर सुन्दरी वटिका )

हरतार तबकिया शुद्ध १ भाग लीलाथोथा २ भाग सूतो की भस्म ६ भाग इन सबको खल में डारि धतूर के पत्तन के रस से खरल करै पहर १ फिर कराही में डारि चुरवै जब धतूर का रस गाढ़ा होजाय तब चना प्रमान गोली बांधै गाती मिश्री से खाय इस पर पथ्य अरहर की दार का पानी देई कोई प्रकार का शीतज्वर होइ दूर होइ ( निमोनिया इन फ्लुएञ्जा प्लेग आदि आधुनिक संकर ज्वरों का दूर करने में अत्यन्त समर्थ है ) ॥

## ( ज्वरहरी वटिका )

गुरिज ।६ लौंग ।६ मिर्च १। जायफर ।६ पारा ( ईंगुर का निकाला ) १२ शुद्ध आँवासार गंधक १२ प्रथम पारा गंधक की कजरी बनावै और चीजों का चूरन करै सब एकत्र करै फिर इमली के पात ऽ॥ पानी ऽ॥ में चुरवै जब चार टका भर जल रहै तब उतारि निचोय लेइ तिस पानी से ऊपर की दवा घोटि गोली मूंग प्रमान बांधै अनुपान ते सब ज्वर पर चलती है कोई प्रकार का ज्वर होइ सो सब नीक होइ भूंख को बढ़ावै रुचि को प्राप्त करै अरुचि दूर करै गोली अच्छी है ॥

---

१ इसको शुद्ध कर लेना ।

## ( ज्वरांगार बटी )

हींग हीराभूंजी १२ पोपर १। घीगुंवार के रस में खरल करै गोली चना प्रमान बांधै सहत या मिश्री ते चाटै ज्वर जाय भूख लागै भली गोली है ॥

## ( चन्द्रोदय रस स्वामी पूर्णानन्द का बताया )

ईंगुर[1] १) भर पारा १) गंधक[2] औंरासार शुद्ध[3] १) हरतार १) हिरनखुरी[4] रांग १) निसादर १) हिरनखुरी रांग पिघलाय आग से उतारि-शीघ्रता से बीच में पारा छोड़ देइ फिर एकत्र सब घोंट आतशी शीशा से कोइला की आंच देइ शीशे के मुंह से जब धूंआ न निकले तब सिद्ध भया खुराक १ चावल अनुपान तुलसी का रंग सहत पीपर सर्वं ज्वर दूर होइ सन्निपात दूर होइ अरूस के रंग से कफ श्वास दूर होइ--( इसी लिखने के स्थल पर स्वामी ने बताया और अनेक बार का अनुभूत कहा अतः लिख दिया ) ॥

## ( आचार वटी )

हरदो, दारुहरदी, नीम के पत्ता, गुरिज, सोंठ, हर्रे, चीते की जर, कूट, मिर्चं, मोथा, वायविरंग, लोध, औंरा, पीपर छोट, सेंधा नमक, ए सब समान भाग महीन पीस कर छेरी के मूत से घोंटि गोली चना प्रमान बांधै अनुपान विधि सफ़ा १५०-१५१ में देखो ॥

---

१ सोधा। २ घीगुवांर के रस में नाय के एक घरो घोंटि पानी से धोइ डारै शुद्ध होइ। ३ नीबू के भीतर भार कै कपड़-मिट्टी करि आगी में भुलभुलाय लेइ शुद्ध होइ। ४ तेल तक्र गो मूत्र में तीन तीन बार गळाय बुझावै शुद्ध होइ।

| अनुपान | गोली संख्या | दिन | रोग |
|---|---|---|---|
| जूड़ पानी ते आंजै | १ | ३ | तिमिर जाय |
| घी सहत ते आंजै | १ | ३ | परवाल जाय |
| तिल्ल तेल ते आंजै | १ | ३ | रतौंधो |
| केरा के रस ते आँजै | १ | ३ | ढरका |
| छेरीं दूध ते आंजै | १ | ३ | फूली |
| स्त्री दूध ते आंजै | १ | ३ | चिपिट |
| तात पानी से खाय | १ | १ | अजीर्ण जाय |
| आक की जर ते खाय | ३ | १ | विशूचिका |
| तुलसी पत्र ते खाय | १ | ३ | नित्य ज्वर |
| सहदेई पत्र ते खाय | २ | १ | अतरा |
| गूमा पत्र ते खाय | ३ | ३ | तिजारी |
| अगस्तिया की पाती ते खाय | ४ | ४ | चौथिया |
| झाऊ की पाती ते खाय | ५ | २ | प्रसूति रोग |
| आक के रस ते नास लेइ | ७ | १ | सर्प विष |
| गोमूत्र ते खाय | १२ | १ | विष जाय |
| गरी ते खाय | ५ | ५ | नपुंसक |
| गोमूत्र ते खाय | ४ | १ | शूल |
| अफीम ते नाक लेप | १ | १ | स्तंभन करै |

| अनुपान | गोली | दिन | रोग |
|---|---|---|---|
| सहिजन रस ते खाय | ४ | १४ | वायुगोला |
| तुलसी रस ते खाय | १ | ३ | सूखी |
| तुलसी रस से खाय | ३ | १ | भूत डाकिनी |
| नीबु रस ते अंजन करे | १ | १ | भूत छूटे |
| कंजा रस ते खाय | २ | ३ | कफ दूर हो |
| साठी धोवन से खाय | ४ | ७ | प्रमेह २० |
| सोंठ ते खाय | ३ | ३ | खांसी |
| जूड़ पानी ते खाय | २ | १ | पेशाब खुले |
| चन्दन से खाय | ३ | ३ | योनि रुधिर |
| बंबुराती से खाय | ४ | ३ | मुख रुधिर |
| गोमूत्र से नाश | १ | ३ | मिरगी |
| छेरी दूध से नाश | २ | ३ | अधौखा |
| घमिरा रस ते आंजे | १ | ७ | फूली कटे |
| गोमूत्रसे खाय | १० | १ | अफीम उतरे |
| पानी ते डंक लेप | १ | १ | बीछी उतरे |
| गरम घी से | १० | ३ | कान पीरा |
| गोमूत्र ते लेप | ५ | ३ | सूजन जाय |
| बिंजौरा नीबू के रस ते मर्दन | २ | १ | चोट जाय |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## ( तिजारी अतरा नित्य ज्वर सर्व ज्वर पर गोली )

घी गाय का २५ भर अफीम १२ भर गुर १२ भर बांटि गोली बनावै चना प्रमान सूर्य मुख होकर खाय पानी से सर्व ज्वर जांय ॥

## ( अन्य गोली सर्व ज्वर पर )

मोरशिखा बूटी लौंग, समान भाग पानी में बांटि चना समान गोली बांधै तुलसी मिर्च से सब ज्वर जांय ॥

## ( कुचिलादि बटी )

कुचिला शुद्ध ( कुचिला के टुकड़े दो दो रत्तीता से करके गोमूत्र में डार देइ रोज मूत बदलत जाय दश दिन मूत में राखै फिर गरम पानी से धोइ दूध में एक घरी चुरै लेइ शुद्ध भया ) मिर्च, समान भाग कांटा से तौल महीन बांटै तुलसी के रस मे घोंटि चना प्रमान गोली बांधै हर्र सहत से विषम ज्वर जाय और अनुपान से सब रोग पर चलती है बात सम्बन्धी रोग बादी विशूचिका अजीर्ण मंदाग्नि आम पेट के रोग इनमें रामबाण है तुलसी घी मिर्च के अनुपान से चौरासी बात हरै ॥

## ( ज्वर में सुदर्शन चूर्ण )

त्रिफला, हरदी, दारुहरदी दोनो भटकटैया, कचूर, सोंठ, मिर्च, पीपर, पिपरामूर, मूर्वा, गुरिच, धमासा, कुटकी, पित्तपापरा, नागरमोथा, त्रायमाण, ( बनप्सा ) सुगन्धबाला, नीम की छाल पुहकरमूर, मुलेठी, कुरौ को छाल, अजवाइन, इन्द्रजौ, भारंगी सहिजन के बोज, फिटकरी भूंजी, बचमीठो, दालचीनी, पदमाख,

खस चन्दन सुपेत, अतीस खरैंटी, सरिवन, पिठवन, बायबिरंग तगर. चीते को जर. देवदारु, चाब. परवर के पत्ता, जीवक. ऋषभक. ( इन दोनों के अभाव में बिलाईकन्द लेना ) लौंग, बंसलोचन, तज, पत्रज. जायपत्री. तालीस, ये सब सम भाग और सब की बराबर चिरायता लेवे सब एकत्र चूर्ण करे खुराक २ मासा। अनुपान शीतल जल या चीनी से आठ प्रकार के ज्वर अतरा तिजारी चौथिया. विषम ज्वर जीर्ण ज्वर धातुगत ज्वर तेरह सन्निपात शीतादि, दाहादि विकार प्रमेहतन्द्रा भ्रम तृषा खांसी श्वास पांडुरोग हृदयरोग कामला बातदोष देह पीड़ा कफविकार दूर करै यह समस्त ज्वररूप दैत्यों का विष्णु को सुदर्शन चक्र है यह चूर्ण उत्तम है यदि असगंध भी मिलाइ देइ तो और अच्छा है।

## ( निम्बादि चूर्ण सब ज्वर पर )

नीम के पत्ते ( छाया के सूखे हुए ) १०) रु० भर हर्र १) आंरा १) बहेर की छाल १) सोंठ १) मिर्च १) पीपर छोट १) अजवाइन ५) सेंधा नमक १) सोचर नोन १) सज्जी खार १) जवाखार २) इन को एकत्र चूर्ण बना लेवे शीतल जल से सेवन करने से नित्य ज्वर अतरा तिजारी चौथिया सतत ( दिन रात में दो वार आने वाला ) विषम जीर्ण सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

## ( दाह ज्वर मे चूर्ण )

तज कलमी, पत्रज, गुजराती, चन्दन सुपेत. दाख, खस. ये समान भाग और सबकी बराबर मिश्री मिलाइ चूर्ण करै सहत से खाय तो तृषा दाह छर्दि ज्वर गरमी मिटै ॥

## ( आमलक्यादि चूर्ण )

औंरा, पीपर छोट, हर्र बड़ी, चीते की जर, सेंधानमक इनको समान भाग चूर्ण करे शीतल जल से खाय सब ज्वर विकार अरुचि मन्दाग्नि दूर होइ मल साफ उतरे ॥

## तिक्तादि चूर्ण

कुटकी २५ हरदीं २५ चन्दन सुपेत २५ पित्तपापरा २५ मोथा २५ पाढ़ो २५ पीपर छोट २५ देवदारु २५ परवर का डारपात २५ आयमान ( बनप्सा ) २५ मरोरफली २५ चिरायता २५ इन्द्रजौ २५ सबको महीन बाँटि चूर्ण करे खुराक १ मासा सहत से खाय ज्वर खांसी प्लीहा मन्दाग्नि अरुचि दूर होइ रुचि प्राप्ति होइ ॥

## तालीसादि चूर्ण १

तालीस १ मासा चितावर १ मासा सोंठ १ मासा अनारदाना १ मासा तंतरीक १ मासा मिर्च १ मासा पीपर छोट ५ मासा अजमोदा ४ मासा गजपीपर ४ मासा अजवाइन ४ मासा अमलबेत ४ मासा पिपरामूर ४ मासा वायबिरंग ४ मासा नागकेसर ४ मासा चाब ४ मासा हाहूबेर ४ मासा धनियां ४ मासा जीरास्याह ४ मासा तज सुर्त्ती ४ मासा पत्रज ४ मासा गुजराती ४ मासा बंशलोचन ४ मासा इन सबों को चूर्ण करे चूर्ण से दूनी मिश्री मिलावे खुराक २ मासा खाय पुरानो ज्वर दूर होइ भूंख बहुत करे पाचक है कुवत बहुत करे ॥

## तालीसादि चूर्ण २

तालीसपत्र ४ मासा मिर्च ८ मासा सोंठ १२ मासा पीपरछोट १६ मासा बंशलोचन २० मासा मिश्री ၵ। भर सबको चूर्ण करे खुराक ४ मासा रुचिकरे पचाव करे ज्वर कास श्वास छर्दि अतीसार श्लेष्मा आध्मान ग्रहणी.पांडु को दूर करे अनुपान सहत है ॥

## ( बड़ा तालीसादि चूर्ण ३)

तालीसपत्र १२ भर तज १२ पत्रज १२ मिर्च १२ लाइची-छोटी १२ नागकेसर १२ कमल का फूल १२ मूसली स्याह १२ ककरासिंघी १२ तगर १२ मुनक्का १२ छोहारा १२ बादाम का बीजी १२ सिंघार १२ बंशलोचन १२ सोंठ १२ लौंग १२ पीपर छोट १२ जीरा स्याह १२ चीत की जर १२ जीरा सुपेत १२ औरा १२ चंदन सुपेत १२ हर्र १२ अम्बरदाना १२ बहेर का बोकला १२ कंकोल १२ केवड़ा का फूल १२ धनिया १२ मोथा १२ जायपत्री १२ दालचीनी १२ मिश्री ५। खुराक ।) भर सहत से ज्वर पुराना जाय भूख करे पाचन है सहवत करे दाह अपस्मार हौल प्रमेह छाती का दर्द बवासीर कास श्वास पीनस कफ विकार दूर होइ चूर्ण उत्तम है ।

## आवहयात चूर्ण

हर्र २५ बहेर २५ औरा २५ पीपर छोट २५ मिर्च २५ निशोथ २५ सोंठ २५ सनाह २५ सेंधानोन २५ सोंचरनोन २५ इन सबका चूर्ण करे खुराक ६ मासा ऊपर से गरम पानी पीवे जीर्ण ज्वर दूर होइ मल शुद्ध होइ कब्ज दूर होइ भूंख बढ़ै ॥

## चूर्ण अन्तर्ज्वर पर

त्रिफला १। सोंठ २५ मिर्च २५ पीपर छोटि २५ चिरायता २५ सनाह १। सेंधानोन २५। सोंचरनोन २५ साम्हरनोन २५ सबका चूर्ण करे खुराक ६ मासा ऊपर से गरम पानी पीवे अन्तर्ज्वर बहुत रोज का बसा दाह दूर होइ भूंख बढ़ै मल शुद्ध होइ ॥

## लवंगादि चूर्ण अन्तर्ज्वर पर

लौंग २५ कपूर शुद्ध २५ ( कपूर एक लोटा में डारै और घो छोड़ देइ जिसमें कपूर बूड़ रहै ऊपर से कटोरा पानी भरके लोटा के मुह पर धरि उरदा के पिसान से सन्धि बन्द करे दो कंडा का अदहरा करि धरि देइ एक घरी पीछे उतार लेइ शीतल भये पर युक्ति से कटोरी एँचै पेंदी में कटोरा के लगा कपूर शुद्ध भया ) जटामासी २५ जीरा सुपेत २५ गुरिज का सत २५ पीपर छोट २५ करील २५ तज २५ पत्रज २५ छोहार २५ लाइची बड़ी २५ लाइचो छोटी २५ चन्दन सुपेत २५ चन्दन लाल २५ कंकोल २५ मिर्च २५ बंशलोचन २५ सोंठ बड़ी २५ सोंठ छोट २५ चीते की जर २५ खीरा के बीजा २५ कासनी के बीजा २५ अगर २५ तगर २५ ऊख की जर २५ सरपत की जर २५ कांस की जर २५ इन सबों का चूर्ण करै चूर्ण की दूनी मिश्री मिलावै खुराक ६ मासा सहत से ऊपर से दूध गाय का ऽ। भर पियै अन्तर्ज्वर दूर होइ भूँख बढ़े कूवत करै रक्त शोधन है खांसी कफ विकार दाह धातु क्षीणता दूर होइ हाथ पांव की जलन दूर होइ।

## ज्वर क़दीम पर चूर्ण

लौंग २५ लाइची छोट २५ लाइची बड़ी २५ हर्र छोट २५ पीपर छोट २५ मिर्च २५ बंशलोचन २५ इनको चूर्ण करै १ मासा सहत से चाटै ज्वर की गरमी को दूर करे भूँख बढ़ावे पाचन करे कूवत करे वात पित्त कफ को दूर करे ॥

## ज्वरांकुश रस

गुलाबी फिटकरी ( भूंजी ) मिर्च, शुद्ध कुचिला शुद्ध सिंघिया भस्म ( शुद्ध सिंघिया को कोयले की आग पर रख कर भस्म करले ) सेंधानमक समुद्रफेन, को सराव सम्पुट में रख कर फूंक ले इन सब चीजों को समान भाग लेकर महीन पीस धरे। इसको १ या २ रत्ती ताजा जल या पान के रस से सेवन करे तो बेला ज्वर साधारण ज्वर अग्निमांद्य अरुचि जी की मिचली आदि नष्ट होते हैं ॥

## ज्वरकेसरी वटी

शुद्ध पारा, शुद्ध सिंघिया, शुद्ध गंधक, छोटी पीपर सोंठ, मिर्च, त्रिफला, शुद्ध जमालगोटा, सब समान भाग ले चूर्ण करे फिर घमिरा के रस से घोटि रत्ती प्रमान गोली बांधै सहत या पान के रस से दवें ज्वर सन्निपात विषम ज्वर भूत ज्वर मन्दाग्नि अजीर्ण शोथ शूल पित्तविकार आदि दूर होंइ परंच सन्निपात में मलबद्ध दस्त लाने की जरूरत ही में दे अन्यथा नहीं ॥

## ज्वरहर रस

गुलाबी फिटकरी, सुहागा चौकिया दोनों को बराबर लेकर पीस ले। जितने दूध में घुल कर ये मिल सकें उतना ही आक का दूध डाल कर घोंटे फिर घूप में सुखा दे फिर सराब सम्पुट करि २०-२५ बिनौआ कंडों में फूंक दे खुराक १ रत्ती से ४ रत्ती तक बलाबल देख कर सहत या चिनी से देना। शीतज्वर कफज्वर कास श्वास छाती का दर्द देह पीड़ा ये सब दूर होंइ ॥

## ज्वर भैरव चूर्ण

हर्रा की छाल १) बहेर की छाल १) औरेठी १) चिरायता २) पित्तपापरा २) सेंधानोन १) इसको चूर्ण करि ताजे जल से खाय तो जीर्ण ज्वर मलावरोध हरारत शिर दर्द अरुचि तिजारीवाला ज्वर दूर होइ ॥

## विषम ज्वरहरी वटिका

धतूरे की जर की छाल १) कुटकी १) पित्तपापरा १) आक की जर की छाल १) मिर्च १) तुलसी के रस से घोंट चना प्रमान गोली बांधै जल या सहत से सब प्रकार के विषम ज्वर दूर होइ ॥

## ज्वरघ्न पेय

कच्ची अमिया ४ मिर्च ११ बड़ी लाइची १ सेंधानमक ३ मासा भूंजे जीरा ६ मासा भूंजो हींग १ रत्ती विधि यह है कि अमिया का भर्ता बनाय सब चीजों को पीस पानी घोर पना बना कर पीने से जेठ की लु लगने से या किसी ताव खा जाने से आया ज्वर नष्ट होता है। दाह प्यास मुख शोष अरुचि आदि दूर होते हैं॥

## सञ्जीवनी वटी

बायबिडङ्ग, बहेड़े का छिलका, सोंठ, बच दूधिया, पीपर छोट, गुरिज का सत, बड़ो हरड़ का छिलका, भिलावा शुद्ध, आंवले का छिलका, शुद्ध सिंघिया, इनको समान भाग लेकर चूर्ण करै फिर गोमूत्र में महीन घोंट गोली मटर समान बांधै अनुपान गरम जल या शहत के साथ देय तो सब प्रकार के ज्वर अजीर्ण, बमन, दस्त, हमथी शिर दर्द पेट की फूलन व दर्द बसन्त रोग मोतीझरा आदि दूर होइ।

## ज्वरांतक गुटिका

छोटी हरं १) मिर्च १) हर्रा की छाल १) शुद्ध सफेद संखिया ६ रत्ती सब को जल से महीन घोंट मूंग के समान गोली बांध कर छाया में सुखाले जल से खाय तो शीतज्वर वातज्वर अतरा तिजारी आदि नष्ट होते हैं देह पीड़ा शिर दर्द छाती का दर्द खांसो, आदि पर भी लाभकारी है। यह दवा गर्भिणी, बालक को न देय।

## किरातादि वटी।

कडुवा चिरायता १) लाल चन्दन १) कुटकी १) कटैया छोटी १) पित्तपापड़ा १) देवदारु १) नागरमोथा १) सोंठ १) इन सब को त्रिफलाऽ= के काढ़े से घोंट चना बराबर गोली बनाले ताजा जल या शहत से खाय तो मुंह का कडुवापन नवीन या जीर्ण ज्वर दाह ज्वर रक्त ज्वर फोड़े फुंसियों से युक्त ज्वर दूर होते हैं।

## ज्वरघ्न पेय

मीठी इमली ५) मिश्री ५) बड़ी लायची २) जल पाव भर में पना बनाकर पीने से गरमी के समय का ज्वर प्यास जलन घबराहट शिर दर्द अरुचि उमथी पेशाब की जलन शरीर क शिथिलता आदि दूर होते हैं।

## शीतज्वर कुठार

शुद्ध सुपेत संखिया १) गुलाबी फिकटरी ७) दो सकोरों में चूना से भीतरी भाग पोत दे। एक सकोरे में ३॥) भर फिटकरी पीस रख दे फिर ऊपर से संखिया १) भर रख कर ऊपर बाकी

फिटकरी पीस धर दे ऊपर से दूसरा सकोरा ढँक कर कपड़ मिट्टी से बन्द कर दे सूख जाने पर २०-२५ बिनौआ कंडों में फूंक दे स्वांग शीतल हाने पर पोस धरै खुराक १ रत्ती मुनक्का या मिश्री से देइ तो शीतज्वर अतरा तिजारी आदि विषम ज्वर देह पीड़ा दूर होंइ।

## ज्वरघ्न पेय

गुल बनफसा २ तोला लौंग ६ मासा लाल चन्दन ६ मासा गुल गावजबां ६ मासा खूबकला ६ मासा मिश्री ऽ॥ उन्नाब ११ दाना मुनक्का ११ दाना ( विधि यह है कि शाम को सब दवाएँ कूट कर मिट्टी के पात्र में तीन पाव जल में भिगो दे ) प्रातः काल इसका काढ़ा करे आधा जल बांकी रहने पर इसको छान कर थिरालें। इस जल में मिश्री डार कर पकावें हो तार की चासनी बना कर शीतल होने पर बोतल में भर धरिये। इसको २ तोले छटांक भर जल में घोर पिये, बच्चों को एक तोला दूध पोने वाले बच्चों को ६ मासा प्रातः, मध्यान्ह, सायकाल तीनों समय पीने से पित्त ज्वर प्यास कंठ को जलन मुंह के छाले आंखों की जलन शिर का दर्द दिल की घबराहट ये सब दूर होते हैं।

## श्रीखंडावलेह

+ सफेद चन्दन ३ तोला  + लाल चन्दन १ तोला

+ गुल बनफसा १ तोला  + गुल गावजबां १ तोला

गुलाब का अर्क ऽ≡  केवड़े का अर्क ऽ≡

मिश्री आध सेर

| | |
|---|---|
| छोटी इलायची १ तोला | कबाबचीनी ६ मासा |
| बंशलोचन १ तोला | शुद्ध कपूर ६ रत्ती |
| मुलेठी १ तोला | शुद्ध[1] मोती १॥ मासा |
| चांदी के वर्क ११ | मूगा[2] की भस्म ३ मासा |

बिधि—किसी कांच के पात्र में गुलाब और केवड़े का अर्क मिलाकर भर दो और उसमें ऊपर लिखी ये + चिन्ह की चारों चीजें भिगो दो, एक दिन रात भींगने पर इसमें पाव भर ताजा जल मिला कर कलई दार पात्र में औटाना। आधा जल बाकी रहने पर छान लेना। इसी जल में मिश्री डाल कर पका लेना, ठंडा करके बाकी चीजें भी कपड़छान करके मिलाके चीनीके पात्रमें या कांचके पात्रमें रख देना। प्रभात व शाम ताजे जलसे १ तोला बच्चोंको आध तोला देने से पित्त रोग, प्यास, जलन, पेशाब की सुर्खी, कड़क, हौल दिल, दिमाग की खुश्की, गरमी, धातु विकार, हाथ पैरों की जलन, ज्वरान्त को कमजोरी, श्वास, सूखी खांसी, ये सब दूर होंइ।

---

१ मोतियों को कपड़े की पोटली में बांधि एक पहर दूध में चुरै लेने से शुद्ध है।

२ मूगा की शाखैं एक दिन गो मूत्र में रखने से शुद्ध होती है। फिर घीगुवांर का गूदा तरे ऊपर धर दो सरवों का सम्पुट बनाय गजपुट में फूंक दे तो उत्तम प्रवाल ( मूगा ) भस्म बनती है।

## ( पितघ्न–कषाय )

गुलबनफ़सा ६ मासा मुलेठी ६ मासा सौंफ ३ मासा मुनक्का १० खूबकला ३ मासा गुलाब का गुलकन्द २ तोला इन सब चीजों को शाम के डेढ़ पाव पानी में कुचल कर भिगो दें सुबह चुरै लेइ आध पाव शेष रहने पर सहत डार पिला दे यह क्रिया दूनौ समय करे तो गरमी का ज्वर कुताव का संताप दाह शिर दर्द प्यास कब्ज बेचैनी दूर होइ ।

## ज्वरामृत–कषाय

गुलबनफ़सा ६ मासा नीलोफर ४ मासा पित्तपापरा ४ मासा गुर्च ४ मासा तुष्मखतमी ४ मासा सौंफ ६ मासा मुनक्का ६ मासा गुलकन्द २ तोला खूब कला ६ मासा मुहलेठी ६ मासा लहसोरा ७ दाना—विधि—खूबकला को छोड़ बाकी सब चीजों को कुचल कर आध सेर पानी में चुरवे जब पानी सात पैसा भर रहे तब उतार कर खूबकला ६ मासा पीस कर मिला दे सहत ॥) भर डार पी जाय तो सब प्रकार का ज्वर खासी कब्ज मलदोष अवश्य दूर होइ यह दवा उत्तम है।

## भूतरंगा

यह एक रस का नाम है जो कि अत्यन्त चमत्कृत वृद्ध गुरु से प्राप्त अनुभूत प्रयोग है इसका पाठ किसी ग्रन्थ में नहीं मिलेगा। पारा ( ईंगुर से निकाला भया ) १ तोला शुद्ध औंरा सार गंधक १ तोला भूनो फिटकरी १० तोला–विधि, प्रथम पारा, गंधक, खरल कर कजरी बना ले फिर फिटकरी मिला कर घोंटे पश्चात् हरे बहेरा ला कर गुठली निकाल बांट

कर एक पाव रस निचोड़ यदि हरे बहेरा न मिल सकें तो सूखे बहेरा की छाल १ सेर कूट कर चार सेर पानी में औंट कर पाव भर पानी शेष रहने पर छान ले इस रस की सात भावना देकर घोंट घोंट छाया में सुखै लेइ शीशी में भर धरै। खुराक १ मासा ताजे पानी के साथ दुपहर शाम सुबह तीनों वक्त देइ तो साधारण ज्वर पारी से आनेवाला विषम ज्वर तपेदिक दमा पुरानी खांसी आदि दूर होते हैं नाक मुंह कान गुदा या मूत्र मार्ग से जाता हुआ रक्त प्रवाह रुक जाता है। सुजाक सोम रोग प्रमेह दिल की धड़कन कमजोरी कामला पांडुरोग भी दूर होता है। सेहुंआ स्याह दाग मुख की झांई (तवा) जल से लेप करने से दूर होते हैं। इस दवा के बराबर मक्खन लेकर मिलाय लगाने से दाद खुजली व्रण घाव बवासीर के मसे शोथ जलन दूर होते हैं।

## ज्वर भंजी रस

मुंडी बूटी की पाव भर लुगदी में सङ्ग जराहत ‌ऽ= धर कर गजपुट में फूंक भस्म बनाय घोंट धरै सहत आदि अनुपान से सर्व ज्वर दूर होते हैं।

## ज्वर मर्दी रस

गोदन्ती हरताल (हरसौंठ-जो कि नदियों के किनारे पीली मिट्टी में मिला चमकीला पत्थर निकलता है) घीगुवांर के रस से घोंट घीगुवांर के गूदा में धर सराव संपुट कर भस्म तैयार कर ले अनुपान से सर्व ज्वर जाते हैं धातु पतन में भी लाभकारी हैं।

## विषम ज्वरघ्नी वटी

कंजा की मीगी ( बीजी ) ४० अदद, धतूर के बीजा शुद्ध ६० अदद, नीम की बीजी ३० अदद मिर्च ५ तोला तुलसी के हरे पत्ते ५ तोला गुड़ २ तोला सबको पीस चने प्रमान गोली बना ले दिन में तीन बार २-२ गोली देने से सब प्रकार के विषम ज्वर जांय ॥

## शीत ज्वर पर

कत्था, संखिया शुद्ध, दोनौ समान भाग लेकर पानी में पीस बाजरे समान गोली बनाय अनुपान से दे तो शीत ज्वर जाय ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## ज्वर व्याघ्री वटी

कंजा की बीजी २ तोला, पीपर छोट २ तोला, जीरा सपेत २ तोला, बंबुर की पाती १ तोला इनको पीस चने प्रमान गोली बनाले प्रायः वेसेही गोली बन जाती हैं यदि न बन सकें तो पानी का छीटा देकर बना लें। दिन में तीन बार सुबह शाम दुपहर, दो दो गोली पानी के साथ देने से सब ज्वर शीघ्र दूर होते हैं ॥

## जीर्णज्वर पर

फूल अरूसे के समान ही, भूमि आंवला लेवे।
तोय युक्त दोउ पीस छान कर, प्रात काल में सेवे ॥
जीर्ण ज्वर से पीड़ित रोगी स्वस्थ चित्त हो जीता है।
झरबेरी सम गुटिका करके भांग सदृश जो पीता है।

## अन्य

नीम की पत्तो, आंवला, हर्र बहेरा की छाल,
सोंठ, मिर्च, पोपर छोट. अजवाइन. जवाखार,
सेंधानमक, कालानमक, साम्हर नमक ए समान भाग ले चूर्ण करे। ताजे जल से सेवन करने से जीर्ण ज्वर, विषम ज्वर अच्छे होते हैं यह प्रयोग सिद्धि प्रद है॥

## ज्वरहर अञ्जन

नीम बीज अरु मनसिल शोधो, लघु पीपर सम तीनौ।
घोंटि करेलिया पात स्वरस सों, पुनि चकवड़ रस भीनौ॥
गोली बांधि धरौ, दृग दोउन, जल घिसि अंजन कीजै॥
छूटि जात ज्वर विविध भांति के, चमत्कार लखि लीजै॥

## अन्य

शुद्ध मनसिल १) सेंधानोन १) पानी से घोंट गोली बनाय धरै पानी से घिस नेत्रों में लगाने से संपूर्ण ज्वर छूटैं॥

## ज्वर नाशक

पारा ५) गंधक नैनिया ५) सिंघिया ५) अफीम ५) सब घोंटि चूरन बनाय के १५ दिन घनौची में गाड़ राखै फिर निकाल धरे। ४ रत्ती लेकर तोला भर घी में मिलाय जौते अङ्ग में लगावे तौने अङ्ग का बुखार छूटे॥

## गोली जीर्ण ज्वर पर

जमालगोटा[1] शुद्ध १) कुटकी १) गेरू सुर्ख ॥) इनको गोघुवांर के रस से खरल करि चना प्रमान गोली बांधै। अनुपान गरम जल से पथ्य चावल गौ की छाछ खाने को दे। जीर्ण ज्वर पर मल ज्वर शिरका भारीपन दूर होइ भूख जगै॥

## वैद्यों की युक्ति

तुलसी की पत्ती ऽ- बेल की पत्ती ऽ- पीपल की पत्ती ऽ- ये तीनौ पत्ती कुचर कर सेर भर पानी में चुरावै डेढ़ पाव बाँकी रहने पर उतार छान ले टका टका भर दो दो घंटे बाद देता रहे समाप्त होने पर फिर तैयार कर लेवे। इससे सब प्रकार के कठिन से कठिन ज्वर, सन्निपात आधुनिक जल वायु संबन्धी विषैले ज्वर तत्काल दूर होते हैं॥

---

१ जमालगोटे की बीजी निकाल भैंसा का गोबर पानी से घोर कर बीजो डार चुरवे १ पहर फिर गरम पानी से धोकर बीजी को फार भीतर की जीभी निकाले फिर बीजी को सब फांके माटी के कोरे खपरे में घोंटे ताकि सब तेल निकज जाय जब खुश्क चूर्ण हो जाय तब शुद्ध भया।

## आल्हादनी वटी

खूबकला ४ तोला मुनक्का स्याह २ तोला दोनों को महीन पीस गोला बनाले ऊपर से अंडा का पत्ता लपेटे फिर पिसी नीम की पत्ती लपेट ऊपर से पीली मिट्टी थोप कर भुलभुली आंच में गाड़ दे गोला सूखने पर निकाल कर झरबेर सम गोली बनाले। इसके सेवन से बसी हुई अन्तर्ज्वर मल दोष अरुचि मंदाग्नि दूर होते हैं ॥

## कालभैरव रस

मृगा का सींग रेत कर घीगुवांर के रस से खरल करे फिर टिकिया बनाय सराव सम्पुट करि अरने उपलों से फूंक कर भस्म घोंट धरे तुलसी मिर्च से ज्वर, आद पीपर सहत से सन्निपात कफ खांसी, सितोपलादि चूर्ण से छुई जाता है ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## सितोपलादि चूर्ण

मिश्री ४) बंशलोचन २) पीपर छोटे १) गुजराती के दाने ॥) तज कलमी ।) गुरिज का सत १) सबको पीस ले खुराक ४ रत्ती सहत से जीर्ण ज्वर अरुचि मल दोष कफविकार जलन पसवाड़े की पीर खांसी पित विकार आदि दूर होते हैं यह चूर्ण योगवाही है।

## बसन्तमालती रस

सोने के वर्क १ तोला, शुद्ध मोती २ तोला, शुद्ध ईंगुर ३ तोला, मिर्च ४ तोला, शुद्ध रस खपरिया ८ तोला, मक्खन ३ माशा, विधि—सोने के वर्कों को मोती के साथ १ पहर घोंटे फिर ६ शेष चीजों को डार घोंटे। मक्खन से घोंट नीबू से इतना घोंटे कि चिकनाई न रहे फिर टिकिया बना धरे मात्रा १ रत्ती सहद से

जीर्ण ज्वर कमजोरी जलन आदि दूर होते हैं। ( रसखपरिया में वैद्यों का बड़ा ही सन्देह हो रहा है अतः—रसके ये गुणाः प्रोक्ता स्ते गुणा स्तुत्थकेऽपि च, रसखपरिया में जे गुण कहे हैं वे नीला थोथा में भी है क्योंकि रसखपरिया नीला थोथा का ही खनिज विकार है इस से शुद्ध नीलाथोथा ही मिलाना अच्छा है। परंच आजकल जसद भस्म रसखपरिया की जगह में डारना बहुसंमत है अतः प्रसंगबस जसद भस्म की विधि भी लिखते हैं— प्रथम जसद को तपाय २ तीन २ बार तेल,तक्र, गोमूत्रमें बुझा कर शुद्धकर लेइ फिर जसद के सूक्ष्म पत्र करके चौथा भाग पारा गंधक घीगुआर के रस में खरल कर फिर नीबू के रस में खरल कर पत्रों में लेप कर के सराव सम्पुट से गजपुट में भस्म कर ले और रसखपरिया की जगह जसद भस्म ८ तोला मिलावे )।

## अद्भुत बसन्तमालती

शुद्ध मूंगा की शाखा १० तोला, अच्छा गुलाब का अर्क ४० तोले में घोंटि टिकिया बांधे। अनुपान उपरोक्त बसन्तमालती अनुसार यह भी गुण दिखाती है। रत्ती ४ दूध के साथ देइ तो हिचकी तुरंत मिटै।

## विचित्र तैल

मेहदी की पत्ती का रस ५।- गाड़र का दूध ५। इसबगोल का लबाब ५। तिली का तेल ५। इन सबों का मिलाय कराही में चढ़ाय चूल्हा में आंच धीमी चार पहर की देइ तेल मात्र अवशेष रहने पर उतार लेइ इसकी मालिस से कोई प्रकार का ज्वर हो शीघ्र दूर होता है और शरीर शीतल हो कर बलिष्ट होता है।

## षट्चरण तैल

पीपर की लाख १ तोला, सोंठ २ तो० हरदी २ तो० कूट २ तो० मूर्वा २ तो० मजीठ २ तो० सज्जीखार २ तो० इन सबों को जल में पीस कर ६ सेर गाय के दही के तोर में घोर दे। १ सेर तिलका तेल मिला कर पकावे जब तेल मात्र शेष रहे तब उतार छान ले। इसके मर्दन से जीर्ण ज्वर. विषम ज्वर, दाह, कमजोरी. आदि दूर होते हैं।

## लाक्षादि तैल

सौंफ १) असगंध १) हरदी १) देवदारु १) रेणुका १) कुटकी १) मूर्वा १) कूट १) मुलहटी १) नागरमोथा १) चन्दन सफेद १) रासन १) लाख पीपर की १ सेर ( सुगन्ध कोकिला, सुगन्ध मंत्री, सुगन्ध बाला छरीला, जटामासी. गुजराती, लौंग, जायपत्री, नख, हरद्वारी कुशा, खस, पानरी, तज कलमी, अगर, तगर. गुलाब के फूल, केवड़ा का फूल, कपूर. केसर, ये सब सुगंधित द्रव्य १-१ तोला ले कस्तूरी ।) ) काले तिल का तेल १ सेर। गौ के दही का तोर ४ सेर

विधि—प्रथम लाख को खूब धो डालै फिर लाख को पीस सोरह गुना पानी मिला कर एक रात दिन भिगोय राखै दूसरे दिन लाख का दसवां हिस्सा लोध लोध का दसवां हिस्सा सज्जीखार, और सज्जीखार का दशवां हिस्सा बेरी की पत्ती बांट कर मिला दे, धोमी आंच से चुरवै चौथाई शेष रहने पर उतार छान ले। ऊपर की काष्ठादि चीजें अठगुना पानी में काढ़ा करले, आठवां हिस्सा पानी शेष रहने पर उतार छान ले। ऊपर कोष्ठक ( ) इस चिन्ह के भीतर लिखी सुगंधित चीजों में से-कपूर, केसर, कस्तूरी. को छोड़ शेष चीजों को पानी में पीस पिट्ठी बनाले। अब कराही में तेल

दहीं का तोर ऊपर लिखा हुआ कुछ सामान केवल कपूर, केसर. कस्तूरी का छोड़ डार कर धीमी आंच में चुरै लेइ। यदि अधिक सुगंधि चाहे तो डेग में ऊपर मुद्रा वन्द करके पचावे। तेलमात्र शेष रहने पर उतार छान ले। पाछे केसर. कपूर, कस्तूरी, पीस मिलादे। इस तेल के मर्दन से समस्त जीर्ण ज्वर, दाह, कमजोरी. इन्द्रियों को शिथिलता, धातु दौर्बल्य, आदि दूर होइ

## पार्श्व शूल पर तेल

करू बच ।६ सेंधानमक ।६ आमाहल्दी ।६ सोंठ बड़ी ।६ कूट ।६ कैफरा ।६ जायफर ।६ हिरन का सींग रेत कर ।६ इनको जल से महीन पीस कल्क बना कर कराही में तिलका तेल ᳵ= ऊमर के गाभ का रस ᳵ॥ सब मिला कर चुरवे तेलमात्र शेष रहने पर उतार छान कर मर्दन करे तो पांजर की पसुरी की बाइको कफको सब पीर दूर होइ ॥

## ज्वर से क्षीण होने पर दूध

दूध गाय या बकरी का ᳵ। घी २५ सहत १२॥ मिसरी १। मिर्च ७ दाना, पीपर छोटी आधी, गुर्च का सत २ रत्ती सबको मिला कर दो लोटों में भंग की तरह २१ बार फेर कर सोते समय पी लेने से ज्वर की क्षीणता जाती है खून अत्यन्त बढ़ कर शीघ्र धातुओं का संचार देह में फैल कर हृष्ट पुष्ट होजाता है और इसी प्रमाण से बलावल देख कर खुराक घटा बढ़ा लेना ॥

## काली वटी

मुसब्बर दरपनी १६) रूमी १६) गुलाब के फूल ४) कासनी ४) निशोथ का बकला ४) सोंठ ४) मुलहठी ४) सबको महीन पीस सबको बराबर सौंफ का अर्क लेकर घोंटिये चना प्रमान गोली बांधि

लीजिये। अनुपान विचार २ देने से सब रोगों में अत्यन्त लाभकारी सिद्ध प्रयोग है ॥

## अमृत वटी

शुद्ध कुचिला चूर्ण २) मिर्च २) तिधारा बेलि की जर ५) शुद्ध इंगुर २) असगन्ध १) भीमसेनी कपूर १) अजवाइन का सत्त ।) लोबान का सत्त ।) सबको एक दिल करि तुलसी का रस ।) भर घोंट २ कर सुखा दे फिर मटर प्रमान गोली बना ले, अनुपान विचार २ कर प्रत्येक रोगों पर देकर सुयश प्राप्त करे।

इति श्री महर्षि शांडिल्य कुलोद्भव गोपनाथीय मिश्र श्रीमज्जुड़ावन तनूज पंडित राम चरण मिश्र कृत संग्रहे भैषज्य भास्कर ग्रन्थे सर्व ज्वर सनिदान चिकित्सावर्णनो नाम तृतीयाविष्कारः ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इति श्रीमद्रामचरणाचार्य्य रचितं भैषज्य-भास्करस्य प्रथमं खण्डं पूर्णम् ॥

ग्रन्थस्तवपूर्णः

IGNCA RAR
ACC. No. R. 271

# अन्तिम-सूचना

यदि इस भैषज्य भास्कर ग्रन्थ के प्रथम खंड को अनुग्राहक ग्राहक वर्ग हाथों हाथ लेकर इसके अनुभूत प्रयोगों से लाभ उठायेंगे और आगे के खंडों के लिये ग्राहक बनकर अपना पता व नाम कार्ड में लिख कर भेजेंगे तो हम पांचसै स्थायी ग्राहक होजाने पर आगे ज्वरातिसार से लेकर प्रत्येक रोगों पर छन्दों बद्ध निदान व वार्त्तिक अनुभूत प्रयोगों का समुदाय लिखकर क्रमशः खण्ड भेंट करेंगे ॥

भवदीय,

श्रीरामचरणाचार्य

स्थान भयस्मरो, पोस्ट सिसोलर,

प्रान्त हमीरपुर ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts